"सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के नियन्त्रण के बिन्दु, स्वमान, शैक्षिक उत्तरदायित्व, शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा शैक्षिक सम्प्रप्ति का अध्ययन"

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र विभाग से डी० फिल् उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोधकर्त्री

मीना रानी

एम० ए०, एम० एड०

प्रवक्ता, शिक्षा शास्त्र

राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद

निर्देशक

डॉ० अखिलेश चौबे

एम० एस० सी०, एम० एड०,

एम० फिल्०, पी० एच्० डी०

प्रवक्ता, शिक्षा शास्त्र विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

१९९२

प्राक्कथन

विश्व के अन्य देशों से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि सुविधा-रहित समूहों की संख्या अफ्रिका को छोड़कर भारतवर्ष में सबसे अधिक है। यहां विशाल जनसमुदाय सदियों से सामाजिक, आर्थिक आदि दृष्टि से पिछड़े होने के कारण उपेक्षित समझा जाता रहा है। दरिद्रता, अज्ञानता एवं उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था के अभाव के कारण इन समूहों का एक लम्बे काल तक शोषण होता रहा है। इनकी समस्याओं की ओर राष्ट्र के कर्णधारों, समाज सुधारकों तथा शिक्षाशास्त्र के मनीषियों का ध्यान कभी-कभी गया है तथा इनके उत्थान के लिए आन्दोलन भी चलाये गये हैं, परन्तु अनेक प्रकार के प्रयासों के उपरान्त भी सुविधारहित समूहों की शैक्षिक अभि-प्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियन्त्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का किस सीमा तक उन्नयन हो सका है प्रस्तुत शोध में इसी विषय पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

सम्पूर्ण शोध कार्य को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है, प्रथम अध्याय में प्रस्तावना जिसके अन्तर्गत सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का अर्थ तथा इसका शिक्षा में महत्व, शैक्षिक अभिप्रेरणा का अर्थ तथा शिक्षा में महत्व, शैक्षिक उत्तरदायित्व का अर्थ तथा शिक्षा में महत्व, स्वमान तथा शिक्षा में महत्व, नियन्त्रण के बिन्दु तथा शिक्षा में महत्व तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा उसका शिक्षा में महत्व, शोध के उद्देश्य, शोध की परिकल्पना, शोध की आवश्यकता तथा शोध की परिसीमाओं को सुस्पष्ट किया गया है। द्वितीय अध्याय में शोध से सम्बंधित साहित्यों का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय में अनुसंधान अभिकल्प का वर्णन है। इसके अन्तर्गत शोध कार्य करने की विधि, जनसंख्या और न्यादर्श, दत्तों का संग्रह तथा सांख्यिकी के प्रयोग का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में तथ्यों की सांख्यिकी विश्लेषण तथा व्याख्या की गई है। पंचम अध्याय में निष्कर्ष, शैक्षिक महत्व तथा आगामी अध्ययन के लिये सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रस्तुत शोध को डा०अखिलेश चौबे, प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के सफल निर्देशन में किया गया है। मैं अपने निर्देशक की बहुत ही आभारी हूँ जिनके उच्च निर्देशन के द्वारा मैं इस शोध कार्य को करने में सक्षम हो सकी। इनकी सहायता के बिना यह शोध कार्य करना मेरे लिये संभव नहीं था। इस शोध कार्य के लिये मैं हमेशा इनकी आभारी रहूँगी।

मेरे गुरु डा० एस०पी० गुप्ता, रीडर, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्व-विद्यालय, इलाहाबाद की भी मैं बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस लघु शोध कार्य को करने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया।

मैं प्रोफेसर आर० एस० पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञ हूँ, जिनके अकथनीय सहयोग, प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद से यह शोध कार्य सम्भव हो सका।

मैं इण्टर-मीडियेट कॉलेजों की प्रधानाचार्याओं तथा अध्यापिकाओं की भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे समंकों के संकलन में पूर्ण योगदान दिया जो कि इस शोध कार्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

मीना रानी अग्रवाल
मीना रानी अग्रवाल

विषय - सूची

BIBLIOGRAPHY

परिशिष्ट "अ"

अ$_1$ सामाजिक आर्थिक परिस्थिति सूचांक

अ$_2$ शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री

अ$_3$ शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी

अ$_4$ स्वमान मापनी

अ$_5$ पुलन की आन्तरिक बाह्य नियन्त्रण सूची

परिशिष्ट "ब"

ब$_1$ शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी का पद विश्लेषण

ब$_2$ स्वमान मापनी का पद विश्लेषण

सारणी - सूची

रेखाचित्रों का विवरण

अध्याय : प्रथम

प्रस्तावना

- शोध के उद्देश्य
- शोध की परिकल्पनाऐं
- शोध की आवश्यकता
- शोध की परिसीमाऐं

अध्याय – प्रथम

प्रस्तावना

हमारा भारतीय गणतन्त्र पूर्णतः धर्म-निरपेक्षता एवं समानता के सिद्धान्तों पर आधारित है। भारतीय संविधान धर्म, जाति, वंश, लिंग, जन्म-स्थान आदि के भेदभाव के बिना सभी नागरिकों को उन्नति के लिए समान अवसर एवं सुविधा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है। अस्पृश्यता कानून के द्वारा समाप्त कर दी गई है तथा दैनिक जीवन में इसका प्रयोग दण्डनीय अपराध है। लोक नियुक्तियों में नागरिकों को समान अवसर की प्राप्ति प्रत्येक नागरिक का मूल अधिकार है। सभी नागरिकों को समान रूप से सांस्कृतिक एवं शैक्षिक अवसरों को संविधान द्वारा प्रदान किया गया है। सरकार द्वारा प्रबन्धित या सहायता प्राप्त किसी भी शिक्षण संस्थान में धर्म, जाति या भाषा के कारण किसी भी नागरिक को प्रवेश से वंचित नहीं किया जा सकता है। यही संविधान समाज के एक विशिष्ट वर्ग अर्थात अनुसूचित जातियों एवं पिछड़े वर्ग को एक विशेष ढ़ंग से राजनीतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक अवसरों को प्रदान करता है। संविधान द्वारा सरकार को निर्दिष्ट किया गया है कि आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से कमजोर वर्गों के लोगों के हितों की रक्षा की जाये तथा उन्हें सामाजिक अन्याय एवं शोषण से बचाया जाये। संसद एवं राज्य के सदनों में पिछड़े वर्गों की जनसंख्या के अनुपात में सांसदों एवं विधायकों के निमित्त स्थानों के आरक्षण का प्राविधान है। लोक नियुक्तियों में सुविधारहित वर्गों को विशेष महत्व दिया जाता है। सरकारी सेवाओं में उनके निमित्त स्थान भी आरक्षित हैं। सुविधायुक्त की अपेक्षा सुविधारहित समूहों को संविधान के अनुरूप शिक्षा हेतु कुछ विशेष सुविधायें प्रदान की गई हैं।

व्यावसायिक शिक्षण संस्थान में उनकी जनसंख्या के अनुपात में स्थान निर्धारित हैं। सुविधा-रहित वर्गों में अनुसूचित जातियां या इसी प्रकार की अन्य जातियाँ भारतीय समाज की सदा से पिछड़ी जातियाँ हैं। रुढ़िगत हिन्दू समाज में इन्हें सबसे निम्न स्तर प्रदान किया गया था। वे हिन्दूओं में सबसे निम्न स्तरीय प्राणी समझे जाते थे। उनसे किसी प्रकार के शारीरिक स्पर्श को निषिद्ध तथा एक प्रकार की अपवित्रता मानी जाती थी जिसकी परि-शुद्धि के लिए यह आवश्यक हो जाता था कि वे गंगाजल को अपने ऊपर छिड़के या गंगा-स्नान करे अथवा अपने शरीर को या उस अंग विशेष को धो कर स्वच्छ कर लें ।

इस प्रकार की मानसिक धारणा ने खाने-पीने की चीजों के विक्रय एवं व्यापार रोजगार करने के लिए इन पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। समाज के तथाकथित उच्च-स्तरीय लोगों की इस मनोवृत्ति का दुष्परिणाम यह हुआ कि देश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इन लोगों की बस्तियाँ अलग बस गई। इस पार्थक्य ने अतीत काल में इन जातियों को विवश किया कि ये निम्न स्तर के पेशों को ही करें, जैसे मलमूत्र उठाना, झाड़ू लगाना, सूअर पालना, मरे हुए जानवरों को उठाना और उनकी खाल निकालना, चमड़ा पकाना, चमड़े की वस्तुओं को बनाना तथा इसी प्रकार के अन्य कार्य। ऐतिहासिक काल में यही सामाजिक एवं आर्थिक असमानता स्वतः शिक्षा प्रणाली में प्रविष्ट कर गई । स्वतन्त्रता के समय बहुत ही न्यून प्रतिशत सुविधारहित समूहों के बच्चों का था जो विद्या-लय जाते थे। इस संदर्भ में सुविधारहित समूहों के लिए शिक्षा में समान अवसर की बात अरण्यरोदन मात्र थी ।

समाज की उन्नति के लिए शिक्षा अति आवश्यक है या दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि केवल शिक्षा के द्वारा ही समाज की उन्नति हो सकती है । सुविधारहित बालक बालिकाओं का उत्थान भी समुचित शिक्षा के द्वारा ही किया जा

सकता है। शिक्षा की दृष्टि से इन समूहों के पिछड़ेपन का कारण सरकार की उदासीनता ही रही है। स्वाधीनता के पूर्व भी अंग्रेज शासकों ने जन सामान्य को शिक्षित करने में कोई रुचि नहीं ली थी। 1947 के पूर्व तक भारत की अंग्रेजी सरकार ने सुविधारहित समूहों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए कोई कार्यक्रम नहीं बनाया था। स्वराज्य आन्दोलन की प्रतिक्रिया के फलस्वरुप हरिजन बस्तियों में कुछ गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा दिन व रात्रि की पाठशालाओं को अनुदान स्वीकार किया गया। यहीं से सुविधारहित समूहों को शैक्षिक अवसर देकर शिक्षित करने की शुरुआत की गई। परन्तु फिर भी आज तक उनकी उन्नति संतोषजनक नहीं हो पाई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सुविधारहित समूह के छात्र-छात्राओं में शिक्षा की पर्याप्त कमी है। यदि अभिभावक बच्चों को किसी तरह विद्यालय भेज भी देते हैं तो जैसे ही बच्चा थोड़ा बड़ा होता है और पारिवारिक आय में सहयोग प्रदान करने योग्य हो जाता है तो अभिभावक उसे वापस घर बुला लेते हैं। इसलिए बच्चा पाठशाला की शिक्षा से ही वंचित रह जाता है और यदि किसी तरह बच्चे विद्यालय में पढ़ने जाते भी हैं तो उनको पढ़ाई-लिखाई के उन सभी साधनों की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है जिससे उनका विकास हो सके। परन्तु आजकल हमारे देश की सरकार का पर्याप्त ध्यान पिछड़े समूहों तथा सुविधारहित वर्गों पर ही है। इनके उत्थान के लिए भारत सरकार ने अनेक शैक्षिक प्रोत्साहनों की व्यवस्था की है। अतः प्रस्तुत अध्ययन द्वारा अनुसंधानकर्त्री ने यह देखने का प्रयास किया है कि सरकार के ध्यान देने के पश्चात् भी सुविधारहित समूह की छात्राएँ शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति चर पर सुविधायुक्त समूह से किस प्रकार समानता तथा असमानता रखती हैं।

सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता :

समाज में दो प्रकार के वर्ग उपलब्ध होते हैं, एक सुविधायुक्त तथा दूसरा सुविधारहित । समाज या प्रकृति के नियमों के अनुसार निर्धारित वस्तुओं को प्राकृतिक न्याय की संज्ञा दी जाती है । जिनको समाज या प्रकृति द्वारा निर्धारित वस्तुएँ प्राप्त होती है उनको सुविधायुक्त तथा जिनको यह वस्तुएँ प्राप्त नहीं होती है उन व्यक्तियों को सुविधारहित कहा जाता है।

सुविधायुक्त एवं सुविधारहित की समस्या केवल व्यक्ति विशेष या समाज विशेष की ही नहीं है अपितु विश्व के अनेक देशों की सरकारें भी इससे ग्रसित हैं। विश्व के सबसे समृद्धशाली देशों में से एक, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, में भी सुविधारहितता की समस्या है तथा वहां पर भी सभी को समान अवसर तथा न्याय नहीं प्राप्त हो पा रहा हैं । रेड इंडियन, हब्शी तथा कुछ गोरे लोग भी भौतिक चीजों के अभाव के कारण सुविधारहित हैं। भारतवर्ष में भी सामाजिक-आर्थिक सुविधारहितता पाई जाती है। अमेरिका में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक सुविधारहितता व्याप्त है। दक्षिण अफ्रिका में रेड इंडियन, नीग्रो तथा जन-जाति सब जगह नहीं रह सकते हैं। इन देशों में नीग्रो तथा जन-जाति आदि सूचीबद्ध स्थान पर ही रहते हैं जो देश की मुख्य सुविधा से रहित होता है तथा उनके बच्चे अच्छे विद्यालयों में शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते हैं। वे वहीं शिक्षा प्राप्त करते हैं जो उनके लिए बनाये गये हैं। उन लोगों का राजनीति में भाग लेना बहुत कठिन होता है तथा सामान्य जीवन तथा नौकरियाँ भी बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं।

भारत में आर्थिक सुविधारहितता इतनी अधिक है कि लगभग 50 प्रतिशत लोगों को मेहनत के बावजूद भी भर पेट भोजन तक नसीब नहीं होता। इसी प्रकार

सामाजिक सुविधारहितता भी अधिक है। एक अनुसूचित जाति के व्यक्ति के पास अधिक धन हो जाने पर भी वह सामाजिक मान्यताओं से ग्रसित होता है। इसी प्रकार एक ब्राह्मण भी आर्थिक रूप से सुविधारहित हो सकता है। इसी प्रकार का विचार नर-कोम्ब (1970) का है। उनके अनुसार सुविधारहितता का तात्पर्य किसी व्यक्ति को सुविधाओं से रहित कर देना है। इस सुविधारहितता में अवसर की कमी, महत्वपूर्ण साधनों का न मिलना आदि सम्मिलित है। लॉगमेयर (1972) के विचार के अनुसार सुविधारहितता एक सामान्य प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं का पूर्ण न होना सम्मिलित है। अतः नवीन विचारधारा के अनुसार कहा जा सकता है कि जिसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है वह सुविधायुक्त है तथा जिसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है वह सुविधारहित है। परन्तु प्राचीन काल में वैदिक लोग सुविधायुक्त होने तथा सुविधारहित होने के विषय में अलग विचार को मानते थे। वैदिक कालीन मनुष्य अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ईश्वर की आराधना करते थे। उन लोगों की यह मान्यता थी कि बिना ईश्वर की इच्छा के हम प्रसन्न नहीं रह सकते और ईश्वर का कहना न मानने पर ईश्वर दण्ड देते हैं जिसके कारण लोग सुविधारहित हो जाते हैं। आर्थिक रूप से सुविधायुक्त होना तथा सुविधारहित होना ईश्वर के द्वारा भेजा हुआ वरदान तथा अभिषाप समझा जाता था। वैदिक कालीन लोगों की मान्यता थी कि बीमारी भी अपने आप नहीं आती है वरन् यह भी ईश्वर का दिया हुआ अभिषाप है। जो व्यक्ति लड़ाई-झगड़ा करता है उसको सामाजिक रूप से असुविधा प्राप्त होती है। परन्तु वर्तमान काल में मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के विकास के फलस्वरूप उपरोक्त मान्यताओं में परिवर्तन आया है।

वोल्मन (1973) ने सुविधायुक्त तथा सुविधारहित के विषय में कहा है कि

सुविधारहित व्यक्ति, सुविधायुक्त व्यक्ति की तुलना में समाज के सांस्कृतिक कार्य-क्रम में कम भाग लेते हैं अर्थात् सांस्कृतिक सुविधारहितता का अर्थ है रहन-सहन का अच्छा न होना तथा सुविधायुक्तता का अर्थ रहन-सहन के अच्छे स्तर के होने से है।

गोरडन (1965) के अनुसार सामाजिक-आर्थिक रुप से सुविधारहित का अर्थ है सामान्य जीवन व्यतीत करने वालों की अपेक्षा कमजोर स्थिति का होना।

व्हाइटमैन और ड्यूटस्च (1965) का दृष्टिकोण है कि सुविधायुक्त वे लोग हैं जिन्हें सामान्य जीवन के लिए वे कारक उपलब्ध हैं जिससे मनुष्य का सामाजिक विकास अच्छी प्रकार से हो तथा जीवन की दौड़ में वह अन्य की तुलना में अपने को ला सके।

वीग्ट आदि (1970) के अनुसार वे व्यक्ति जिन्हें सीखने के लिए उपयुक्त अवसर न मिले सामाजिक रुप से सुविधारहित कहलाते हैं।

व्यक्ति की सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का प्रभाव उसके शैक्षिक अभिप्रेरणा की प्रक्रिया के ऊपर भी पड़ता है। रैमण्ड (1970) के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि सुविधारहित बच्चों में अभिप्रेरणा की कमी होती है। टकमैन और ब्रेन आदि (1969) ने भी सुविधारहित बच्चों में आकांक्षा तथा प्रत्याशा की मात्रा कम देखी। कोलेमिनक (1970) तथा ब्लूम (1965) ने भी सुविधारहित बच्चों की अभिवृत्ति तथा प्रत्याशा को निचले स्तर का प्राप्त किया। रथ आदि (1979), स्वेल, हाल्लर और स्ट्रेन्स (1957) ने भी सुविधारहित बालकों की शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा में कमी देखी।

रोशेन (1959) व हैसन (1977), टकमैन और ब्रेन (1969) ने सुविधारहित बालकों में शैक्षिक अभिप्रेरणा को बहुत कम प्राप्त किया। रोशेनहन (1967) ने अकेले

रहने वाले तथा माता-पिता के साथ रहने वाले बालकों का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि समाज से सन्तुष्ट बच्चे समाज से बहिष्कृत बच्चों की तुलना में दैनिक जीवन में अधिक जिम्मेदार थे। कहल §1965§, मारलैण्ड §1960§, स्टेन §1966§ ने भी अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में यह देखा कि सुविधारहित बालकों पर देर से पुर्नबलन की अपेक्षा तुरन्त पुर्नबलन अधिक प्रभाव डालता है। लाश्हन §1952§ के अनुसार सुविधारहित बालक वर्तमान के प्रति अनिश्चित होते हैं। ब्लूम आदि § 1965§ तथा अग्रवाल और त्रिपाठी §1980§ एवं शर्मा §1981§ ने देखा कि सुविधारहित विद्यार्थियों पर मूर्त पुरस्कार अधिक प्रभाव डालता है।

सुविधारहित तथा सुविधायुक्त दोनों ही समूहों पर शैक्षिक उत्तरदायित्व का प्रभाव पड़ता है। प्रायः यह भी देखा गया है कि सुविधारहित समूह के जिन विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व की भावना बलवती होती है वे भी सफलता प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि पढ़ाई की सफलता के लिए विद्यार्थियों में स्वतः सीखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। जैसा कि वेडमेयर §1975§ ने अपने अध्ययन में देखा कि विद्यार्थी यदि स्वयं ही पूर्ण उत्तरदायित्व की भावना से पढ़ाई सम्पन्न करता है तो नियंत्रण का प्रश्न गौण हो जाता है।

सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का प्रभाव स्वमान पर भी पड़ता है। स्वमान से व्यक्ति अपने बारे में अपनी धारणा के विषय में विचार प्रस्तुत करता है। जिन्गलर और लॉग §1967§ के अनुसार स्वमान व्यक्ति के स्वयं के विषय में अंगभूत ऐसा विचार है जिससे व्यक्ति को समाज में स्वयं के सामंजस्य का ज्ञान होता है।

यंगलेशान §1973§ ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि संस्थागत बच्चों में स्वमान की कमी थी। हैशन §1967§ ने भी अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित

जन-जाति के विद्यार्थियों में स्वमान की कमी प्राप्त की। त्रिपाठी और मिश्रा (1980) ने सुविधारहितता तथा स्वमान में नकारात्मक सम्बंध प्राप्त किया। दास और पण्डा (1977) ने भी ब्राह्मण विद्यार्थियों में हरिजन विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्वमान प्राप्त किया।

दूसरी तरफ लक्ष्मी ठाकुर (1986) ने स्वमान के मूल्यांकन के लिए 30 अनुसूचित जाति के विद्यार्थी तथा 30 उच्च जाति के विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में उच्च जाति के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक उच्च स्वमान है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण के आधार पर व्यक्ति विशेष का व्यक्ति विशेष से अन्तर आंका जाता है। निम्न जाति अर्थात् सुविधारहित समूह के बच्चे सफल या असफल होने पर अपने को कम उत्तरदायी मानते हैं। फ्रैंकलिन (1963) के अध्ययन द्वारा यह प्रमाणित होता है कि सामाजिक या आर्थिक स्तर के आधार पर ही उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे। गुप्ता (1984) ने भी अपने शोध में यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का नियंत्रण के बिन्दु पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। नियंत्रण के बिन्दु के क्षेत्र में बहुत से शोध इस बात को निर्देशित करते हैं कि नियंत्रण के बिन्दु का पढ़ाई की प्रक्रिया तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के प्रयास में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बैट्टल और रोट्टर (1963), शा और उही (1971), ज्योटोस्की, स्ट्रीकलैण्ड और वाटशन (1971), स्टीफेन्शन और डिलेज (1973) आदि ने भी अपने शोधों द्वारा यह देखा है कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी बहुत अधिक बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंध रखते हैं। परन्तु कुछ शोधकर्ताओं, जैसे गोरे और रोट्टर (1963), काट्ज (1967), सोलेमन आदि

§1969§ ने अपने अध्ययन में आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु का सामाजिक-आर्थिक स्तर पर कोई प्रभाव नहीं देखा।

सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता शैक्षिक सम्प्राप्ति को भी काफी सीमा तक प्रभावित करती है। मिलर §1971§ ने अपने अनुसंधान में यह देखा कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षा का अच्छा उदाहरण नहीं दे पाते तथा उनको अच्छी तरह अभिप्रेरणा भी प्रदान नहीं कर पाते, साथ ही पढ़ने में रुचि भी जागृत नहीं कर पाते। टेम्पलिन §1957§ तथा जॉन और गोल्डटेन §1964§ ने भी अपने अध्ययन में सुविधायुक्त बालकों की अपेक्षा सुविधारहित बालकों में शाब्दिक योग्यता को निम्न स्तर का प्राप्त किया। इसके साथ ही साथ काज्डेन §1966§, ड्यूटस्च §1965§, पारकर §1968§ ने अपने अध्ययन में सुविधारहित बालकों में भाषायी विकास भी काफी कम प्राप्त किया। ऑस्बेल और ऑस्बेल §1963§, बैट्टल और रोट्टर §1963§ आदि ने सुविधारहित बालकों में निम्न कोटि के स्वमान को प्राप्त किया।

बहुधा यह देखा जाता है कि बच्चों के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने में मुख्य कारण परिवार ही होता है। अनेक अनुसंधान इस बात को स्पष्ट करते हैं कि अशिष्ट माता-पिता बच्चों के सुविधारहितता के लिए उत्तरदायी होते हैं। यह अध्ययन लेवी §1943§, रिब्बल §1943§ आदि का है। मनुष्य के सुविधारहित होने का उसके बौद्धिक तथा शारीरिक विकास पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है। §गोल्डफार्ब 1945, स्पिट्ज 1946, थाररो 1961, प्रोवेन्स और लिप्टन 1962, डेनिस और नजारियन 1957§, परन्तु लान्गेवेल्ड §1972§ उपरोक्त अध्ययन के निष्कर्षों से सहमत नहीं हैं। उसके अनुसार सामाजिक मान्यताओं के आधार पर ही बच्चों को सुविधायुक्त तथा सुविधारहित कहा जाता है। बच्चे स्वयं इस सुविधारहितता के लिये उत्तरदायी

नहीं हैं।

सुविधारहितता सामाजिक हो या आर्थिक, राजनैतिक हो या मनो-वैज्ञानिक सभी समाज के लिये गहन समस्या है। सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रुप से अन्याय होने का यही प्रमुख कारण है। फरनिओ (1963), बारगर और हाल (1965), चोपड़ा (1970), दास (1973), सिंह (1979) आदि ने अपने अध्ययनों में यह देखा कि सामाजिक अशान्ति भी सुविधारहित मनुष्यों को ही अधिक प्रभावित करती है।

भारतवर्ष में सामाजिक तथा आर्थिक स्तर सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता के दो स्वतन्त्र कारकों के रुप में दृष्टिगोचर होते हैं। एक गरीब ब्राह्मण आर्थिक रुप से सुविधारहित तो हो सकता है परन्तु सामाजिक रुप से वह उच्च स्थिति प्राप्त करता है। दूसरी ओर एक अनुसूचित जाति का व्यक्ति आर्थिक रुप से सम्पन्न होते हुए भी सामाजिक रुप से हीन ही होता है। सुविधारहितता किसी भी प्रकार की हो समाज या देश के लिए विचार करने को विवश करती है। पूर्व में लिखे गये अध्ययनों तथा कारणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक व आर्थिक स्तर सुविधायुक्त अथवा सुविधारहित होने में बहुत महत्व रखता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के चुनाव के लिए सामाजिक-आर्थिक स्थिति को आधार माना गया है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण के द्वारा व्यक्ति की समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक आदि रुपों में स्तर का ज्ञान होता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण के द्वारा बालक को प्राप्त सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक तथा अन्य क्षेत्रों में प्राप्त सुविधाओं तथा असुविधाओं का ज्ञान होता है। इसके द्वारा बालक

के रहन-सहन तथा सुख-सुविधाओं का पता लगता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में सुविधा-युक्त छात्राओं तथा सुविधारहित छात्राओं का चयन करने के लिए आर०पी०वर्मा और पी०सी०सक्सैना द्वारा निर्मित सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का शिक्षा में महत्त्व :

सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पड़ता है। सुविधायुक्त समूह के माता-पिता अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अच्छी होने के कारण बालकों के लिये शिक्षण की भली प्रकार व्यवस्था करते हैं। गुप्ता {1978}, सत्यानन्दम् {1969} ने भी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बालकों की तुलना में अधिक अच्छी थी। अनेक अनुसंधानकर्ताओं जैसे याररो {1961} तथा प्रोवेन्स एण्ड लिप्टन {1962} आदि ने भी यह देखा कि बालक के सुविधारहित होने का उसके बौद्धिक तथा शारीरिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। अतः स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर व्यापक रूप से प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक अभिप्रेरणा का अर्थ :

इन्टरविश्टल {1968} ने शैक्षिक अभिप्रेरणा को परिभाषित करते हुए लिखा है - "यह व्यक्ति की शैक्षिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की दृढ़ता है।"

शैक्षिक अभिप्रेरणा से तात्पर्य शिक्षा से सम्बंधित उत्तेजना से है जिसके कारण

बालक शिक्षा से सम्बंधित कोई प्रतिक्रिया या व्यवहार करता है। इस प्रकार यह एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें बालक अपने अन्दर से किसी कार्य को करने के लिए अभि-प्रेरित होता है। अतः अभिप्रेरणा एक ऐसी आन्तरिक प्रक्रिया है जो बालक की किसी आवश्यकता की उपस्थिति से उत्पन्न होती है तथा तब तक बालक को क्रियाशील रखती है जब तक कि उसकी उसी आवश्यकता की सन्तुष्टि न हो जाये। अभिप्रेरणा एक प्रभावशाली क्रियात्मक कारक है, जो व्यक्ति के चेतन या अचेतन रूप से निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति की ओर ले जाने का कार्य करती है। अतः मानव के समस्त व्यवहार प्रेरणाओं पर ही आधारित होते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया तो शैक्षिक अभिप्रेरणा के अभाव में असंभव ही है। शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को अपनी सीखने की क्रियाओं को प्रोत्साहन देती है। अतः शिक्षा प्रक्रिया का प्रमुख आधार प्रेरणा ही है। प्रेरणा सीखने का शक्तिशाली साधन है। शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरणा को साधन मानकर प्रयोग करने पर विद्यार्थियों का समुचित विकास होगा । अतः शैक्षिक अभि-प्रेरणा का अर्थ है -

> "ऐसा बल जो शिक्षा से सम्बंधित वह समस्त क्रियायें करने के लिए बालक को तब तक क्रियाशील रखती है जब तक कि उद्देश्य की पूर्ति न हो जाए।"

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह आन्तरिक अन्तर्वृत्ति है जो प्राणी में शिक्षा से सम्बंधित क्रिया को उत्पन्न करती है। यह इस क्रिया को तब तक जारी रखती है जब तक उसके उद्देश्य की पूर्ति न हो जाए। इस प्रकार शैक्षिक अभि-प्रेरणा व्यक्ति की शिक्षा के विषय में ऐसी तत्परता है जो बालकों को पढ़ाई-लिखाई से सम्बंधित व्यवहार को करने के लिए लक्ष्य निर्देशित करती है। वीनर (1980) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि अभिप्रेरणा की एक महत्वपूर्ण भूमिका उस समय होती है

जब व्यक्ति अपने को सफल तथा असफल होने के लिए अपने आप को विश्लेषित करता है। प्रत्याशा का अभिप्रेरणा से बहुत ही घनिष्ट सम्बंध है। जोन्स (1977) ने अपने अध्ययनों द्वारा यह ज्ञात किया कि निम्न प्रत्याशा के होने पर बालकों नें निम्न उपलब्धि को प्राप्त किया। अत: निम्न प्रत्याशा से बालकों में निम्न कोटि की अभिप्रेरणा तथा उपलब्धि देखी गयी।

शैक्षिक अभिप्रेरणा का शिक्षा में महत्व :

शिक्षा के क्षेत्र में अभिप्रेरणा का अत्यधिक महत्व इसलिए है क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया भली-भाँति संचालित करने में इसका महत्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यह विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के अन्तर्गत आन्तरिक प्रेरणा का प्रयोग करके बालकों में पढ़ने के प्रति रुचि जागृत कर सकते हैं। अभिप्रेरणा द्वारा उनकी स्वयं पढ़ने की रुचि जागृत हो जाती है।

शैक्षिक अभिप्रेरणा के सम्यक् विकास के लिए शिक्षा प्रक्रिया में उन्हीं कार्यों का समावेश करना चाहिए जिनकी प्रगति के प्रभाव व परिणाम से छात्रों में सन्तोष उत्पन्न हो। बालक की प्रशंसा तथा पुरस्कार आदि के द्वारा प्रेरणा प्रदान कर उसके व्यवहार को उचित दिशा की ओर मोड़ा जा सकता है।

शैक्षिक अभिप्रेरणा का यह भी प्रभाव है कि यह सदा बालकों को शिक्षा से सम्बंधित निर्धारित लक्ष्य की ओर स्वयं बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। स्वाभाविक तथा आन्तरिक अभिप्रेरणा के द्वारा बालकों में स्वयं ही अनुशासित होने की भावना बलवती की जा सकती है। शैक्षिक अभिप्रेरणा से बालक पाठ्य-विषय में ध्यान केन्द्रित कर सकता है और पढ़ाये गये विषयों को अच्छी प्रकार से आत्मसात् भी करता है। उचित प्रतिस्पर्धा भी छात्र-छात्राओं में अभिप्रेरणा का काम करती है तथा इस प्रकार की अभिप्रेरणा

के द्वारा छात्र कठिन से कठिन कार्य को भी सफलता पूर्वक कर लेते हैं। समय-समय पर प्रोत्साहन देने से भी विद्यार्थी अतिशीघ्र ज्ञानार्जन करते हैं। पुरस्कार और दण्ड भी एक प्रकार से प्रभावशाली अभिप्रेरणा है। पुरस्कार प्राप्त करने की आनन्दपूर्ण अनुभूति के कारण विद्यार्थी और लगन से पढ़ते हैं तथा साथ में अन्य विद्यार्थियों को भी पढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है। दण्ड एक निषेधात्मक अभिप्रेरणा है। शिक्षा के क्षेत्र में अनुचित कार्यों से विमुख करने के लिए छात्रों को दण्ड दिया जाता है।

अतः स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का विद्यार्थियों की शिक्षा पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। इसके उचित प्रयोग से व अच्छे एवं बुरे गुणों में भेद करने में समर्थ हो सकते हैं जो चरित्र निर्माण के लिए अति आवश्यक हैं।

शैक्षिक अभिप्रेरणा का बालक-बालिकाओं के शैक्षिक क्रिया-कलापों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अनुसंधानकर्ताओं के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त समूह के बालकों की तुलना में सुविधारहित समूह के बालकों को ठोस पुरस्कार देकर अभिप्रेरित किया जा सकता है, परन्तु सुविधायुक्त समूह के बालकों को निरपेक्ष प्रोत्साहन देकर भी पढ़ाई के प्रति अभिप्रेरित किया जा सकता है। शर्मा (1981) ने भी अपने शोध द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि विशेष पुरस्कार देने पर सुविधारहित समूह के बालकों ने काफी अच्छा कार्य किया। पुरस्कार के साथ ही प्रशंसा का भी विद्यार्थियों की पढ़ाई पर प्रभाव पड़ता है। सोरेन्सन तथा मीहर (1977) ने भी अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि लड़कों तथा लड़कियों दोनों पर प्रशंसा का बहुत प्रभाव पड़ता है। परन्तु लड़कों की तुलना में लड़कियों पर प्रशंसा का बहुत प्रभाव पड़ता है। शैक्षिक अभिप्रेरणा के अभाव में व्यक्ति का शिक्षा की ओर से ध्यान विरत होने की संभावना रहती है जिसके फलस्वरूप उसकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। अतः

स्पष्ट है कि शैक्षिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए उचित शैक्षिक अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है।

शैक्षिक उत्तरदायित्व :

शिक्षा की क्रिया को सुचारु रुप से व्यवस्थित करने के लिए बालकों में उत्तरदायित्व की भावना की नितान्त आवश्यकता है। वेडमेयर (1975) के अनुसार यदि बालकों में स्वयं अध्ययन करने की जिम्मेदारी की भावना का विकास हो तो शिक्षा का नियन्त्रण करने वाली स्थानीय संस्थाएँ, अध्यापक, जिला विद्यालय निरीक्षक आदि कम महत्वपूर्ण हो जायेंगे। अतः बालकों में स्वयं ही उत्तरदायी होने की भावना का विकास उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए आवश्यक है। ब्राउन (1983) ने भी उत्तर-दायित्व के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि यदि बालक प्रौढ़ों के हस्तक्षेप के बिना ही समस्याओं का समाधान निकाल लेते हैं तब उनमें उत्तरदायित्व की भावना बलवती होती है। अतः शैक्षिक उत्तरदायित्व को निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है -

> "शैक्षिक उत्तरदायित्व बालक की उस आन्तरिक मनोदशा को कहते हैं जिसके आधार पर वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से शिक्षा सम्बंधी सम्पूर्ण मानवगत व्यवहारों का संचालन स्वयं करता है।"

शैक्षिक उत्तरदायित्व का शिक्षा में महत्व :

शैक्षिक उत्तरदायित्व का प्रभाव सुविधायुक्त तथा सुविधारहित दोनों ही समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ता है। बालकों में स्वयं अपने प्रति तथा विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व की भावना के विकसित होने पर वे अपने कार्य

को सुचारु ढ़ंग से करते हैं जिसके कारण उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति बहुत प्रभावित होती है। शैक्षिक उपलब्धि के अच्छी होने के लिए बालकों में शिक्षा के प्रति उत्तरदायित्व को विकसित करना आवश्यक है। शैक्षिक उत्तरदायित्व का बालक की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक उत्तरदायित्व का विशेष महत्व इस कारण से है क्योंकि इसके विकास के फलस्वरुप ही बालकों की शिक्षा प्रक्रिया सुचारु ढ़ंग से चलती है। जो बालक कक्षा में नियमित रुप से उपस्थित होते हैं उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे सभी बालक नियमित रुप से उपस्थित रहने का प्रयास करते हैं तथा इस प्रकार उनमें उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। विद्यालय में समय से गृह-कार्य तथा कक्षा कार्य को करने पर उन्हें तरह-तरह से उत्साहित करके उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति को विकसित कर सकते हैं। दैनिक जीवन में नियम पालन तथा समय पालन करने वाले छात्रों को पुरस्कृत करने से उनमें उत्तरदायित्व की भावना प्रबल होती है तथा अन्य छात्रों में भी उत्तर-दायित्व की भावना विकसित होती है। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त खेल-कूद प्रतियोगिता, नाटक आदि में भाग लेते हैं और उच्च स्थान प्राप्त करते हैं उनमें भी शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना दृढ़ होती है। शैक्षिक उत्तरदायित्व से युक्त छात्र अध्यवसायी होता है। उसका कोई निरीक्षण करे अथवा न करे वह सर्वदा मेहनत करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। इससे उसकी शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रभावित भी होती है। शैक्षिक उत्तरदायित्व से युक्त बालक सर्वदा जिस कार्य को करता है उसे पूरा करके ही छोड़ता है। अतः शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना के कारण उनके चरित्र में दृढ़ता आ जाती है।

स्वमान :

कूपर स्मिथ (1967) के अनुसार, "स्वमान व्यक्तिगत सन्तुष्टि तथा प्रभाव-पूर्ण कार्यपरकता से सार्थक रुप से सम्बंधित है।"

स्वमान से अभिप्राय व्यक्ति का अपने ऊपर विश्वास का ज्ञान होने से है। स्वमान व्यक्ति के अपने बारे में विचार को महत्वपूर्ण रूप से प्रदर्शित करता है। बहुत से अनुसंधानों से इस बात का ज्ञान होता है कि उच्च स्वमान से बालक विद्यालय में निम्न स्वमान की तुलना में अच्छा कार्य करते हैं। ब्लेडशो 1964, थॉमस और पेट्टरशन 1964 और बोडवीन 1962 आदि के अध्ययनों के द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि बालक अपनी अनिश्चित धारणा से अपने को असफल समझते हैं और प्रयत्न नहीं करते तथा कार्य को बीच में ही रोक देते हैं। क्यूम्बी 1967, और शा तथा एलवेश 1963 के अध्ययन इस बात पर बल देते हैं कि स्वयं में आत्म-विश्वास तथा स्वाभिमान की भावना विद्यालय के कार्यों में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। स्वमान को हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं -

> "स्वमान व्यक्ति का स्वयं के प्रति मूल्यांकन तथा आत्मविश्वास है और यह स्वयं के सम्बंध में व्यक्ति के द्वारा निर्मित धारणाओं से भी सम्बंधित है।"

स्वमान का शिक्षा में महत्व :

संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो जन्म से ही अच्छा या खराब होता हो या एक दूसरे से समस्त दृष्टिकोणों में मिलता जुलता हो। उसके अन्दर ये सारी बातें बाद में स्वत: विकसित होती है। इसका सबसे बड़ा आधार यह है कि विभिन्न लोगों से उसको कैसा व्यवहार मिलता है। समाज के विभिन्न लोगों के व्यवहार के आधार पर ही वह अपने बारे में स्वमान को विकसित करता है। अत: शिक्षा प्रक्रिया के सुदृढ़ होने के लिए यह आवश्यक है कि माता-पिता तथा अध्यापक बालकों के साथ अच्छा व्यवहार करें। स्वमान का तात्पर्य बालक का स्वयं के बारे में मूल्यांकन से है। सकारात्मक विचार बनाने से उसमें स्वमान उच्च होता है तथा नकारात्मक विचार से

स्वमान निम्न कोटि का होता है। स्वमान इस बात पर भी निर्भर करता है कि बालक अपनी सफलता तथा असफलता को कैसे स्वीकार करता है। असफल होने पर उसको कितना तनाव हुआ तथा वह सफल होने और अपने अन्दर योग्यता को विकसित करने के सम्बंध में क्या महसूस करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में स्वमान मनुष्य की शिक्षा से सम्बंधित मानसिक स्थिति का वर्णन करती है। स्वमान शिक्षा प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण आन्तरिक मानसिक प्रक्रिया है। अनेक अनुसंधानों के द्वारा भी यह परिणाम प्राप्त हुआ है कि उच्च स्वमान के बालकों का विद्यालय कार्य निम्न स्वमान के बालकों की तुलना में अधिक अच्छा था। उदाहरणार्थ ब्लेडशॉक (1964), बूकओवर, थॉमस और पैटरसन (1964) और बुडविन (1962) आदि के अध्ययनों के द्वारा यह प्रदर्शित हुआ कि जो बच्चे अपनी योग्यता के बारे में अच्छा सोचते हैं वे अधिक अच्छा कार्य करते हैं।

कुछ अन्य अध्ययनों के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि जो बालक अपने बारे में निश्चित नहीं थे और जिन्होंने स्वयं के असफल होने के विषय में पहले ही सोच लिया था, उन बालकों ने सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने ही बन्द कर दिये थे। क्यूम्बी (1967) तथा शॉ व एलवेस (1963) के अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि विद्यालयी कार्यों में बालकों के आत्म-सम्मान तथा आत्म-विश्वास का महत्वपूर्ण स्थान है। बूकओवर तथा अन्य (1965) ने अपने अनुसंधान के आधार पर सुझाव दिया कि विद्यालय तथा माता-पिता दोनों की ही जिम्मेदारी है कि बच्चों के स्वमान को ऊँचा रखें। माता-पिता का यह कर्तव्य है कि घर में बच्चों के स्वमान को ऊँचा करें तथा विद्यालय में अध्यापक बच्चों के स्वमान को ऊँचा करें।

जिन बच्चों में स्वमान की भावना स्वयं ही पूर्ण रूप से विकसित होती है

ऐसे बच्चे माता-पिता तथा विद्यालय में अध्यापकों से सम्बंध स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं।

स्वमान से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य अपने बारे में क्या सोचता है तथा उसका निर्णय कैसा है। इस प्रकार के स्वमान के द्वारा व्यक्ति की स्थिरता का संकेत मिलता है। जिन बच्चों का स्वमान उच्च होता है वह अधिक विकास करते हैं। अतः प्रारम्भ से ही बच्चों के स्वमान को उच्च करने का प्रयास करना चाहिए।

नियन्त्रण के बिन्दु :

रोट्टर {1966} के अनुसार व्यक्ति अपने को दो प्रकार से नियन्त्रित करता है - प्रथम, आन्तरिक रुप से तथा द्वितीय, बाह्य घटनाओं से जैसे भाग्य, संयोग, नियति तथा सामर्थ्य आदि के आधार पर। वीनर {1971} आदि के अनुसार मनुष्य सफल तथा असफल होने के लिए योग्यता, प्रयास, कार्य की कठिनता तथा भाग्य के अनुसार अपने को विश्लेषित करता है। कार्य की सफलता के लिए स्वयं को उत्तरदायी बताना आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंधित है तथा कार्य की कठिनता और भाग्य बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंध रखते हैं। नियन्त्रण के बिन्दु को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है -

> "नियन्त्रण के बिन्दु से तात्पर्य उन बाह्य/आन्तरिक कारकों से है जो व्यक्ति के अनुसार उसकी सफलता अथवा असफलता को नियन्त्रित करते हैं।"

इस प्रकार वे व्यक्ति जो अपनी सफलता या विफलता के लिए बाह्य कारकों को कारण मानते हैं उनका नियन्त्रण का बिन्दु बाह्य होता है तथा जो अपनी सफलता या विफलता के लिए आन्तरिक तत्वों को उत्तरदायी मानते हैं उनका नियन्त्रण का बिन्दु आन्तरिक होता है।

नियन्त्रण के बिन्दु का शिक्षा में महत्व :

नियन्त्रण के बिन्दु का भी विद्यार्थियों के शैक्षिक क्रियाकलाप में महत्वपूर्ण स्थान है। फ्रैंकलिन (1963) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि जिन विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अच्छी थी वे विद्यार्थी आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे तथा जिन विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर अच्छा नहीं था वे विद्यार्थी बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे। सिन्हा (1980) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित समूह के विद्यार्थी अपनी सफलता के लिए बाह्य कारणों को उत्तरदायी मानते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का नियन्त्रण के बिन्दु पर प्रभाव पड़ता है। नियन्त्रण के बिन्दु का भी विद्यार्थी की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव पड़ता है जैसा कि मेशर (1972) के अध्ययन से स्पष्ट होता है।

शैक्षिक सम्प्राप्ति :

शैक्षिक सम्प्राप्ति से तात्पर्य विद्यार्थियों के द्वारा अपने शैक्षिक जीवन से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं में अर्जित ज्ञान, कौशल, योग्यताओं आदि से है। इसके अभाव में शैक्षिक विकास की प्रक्रिया पूर्णतया निष्फल हो जाती है। शैक्षिक सम्प्राप्ति का अर्थ है कि विद्यार्थी ने एक विषय या विभिन्न विषयों में कितने ज्ञान तथा कुशलता को अर्जित किया है।

उपलब्धि परीक्षा का प्रयोग यह ज्ञात करने के लिए किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली-भाँति कर लेता है। वोल्मैन ने शैक्षिक सम्प्राप्ति के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि

"शैक्षिक सम्प्राप्ति शैक्षिक कार्यों से सम्बंधित प्रवीणता, स्तर तथा अवस्था से सम्बंधित है।" अतः शैक्षिक सम्प्राप्ति से अभिप्राय विद्यार्थियों के सीखे हुए ज्ञान एवं कौशल से है। अधिकांशतः परीक्षणों एवं परीक्षाओं का प्रयोग विद्यालय के विभिन्न विषयों में छात्रों की सम्प्राप्ति का मापन करने के लिए किया जाता है। इनसे किसी भी विद्यार्थी की विभिन्न विषयों में सफलता तथा असफलता का पता चलता है।

प्रस्तुत शोध में छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति को माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश की हाई स्कूल परीक्षा में प्राप्त अंकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

शैक्षिक सम्प्राप्ति का शिक्षा में महत्व :

शैक्षिक सम्प्राप्ति का शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इनके द्वारा ही यह ज्ञात होता है कि कोई विद्यार्थी शिक्षा से सम्बंधित किसी क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यक कुशलता रखता है या नहीं।

शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही विद्यार्थियों को विद्यालयों में विभिन्न भागों में वर्गीकृत करते हैं। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों के चयन करने में तथा छात्रों के प्रवेश हेतु भी इनका काफी प्रयोग किया जाता है। इन्हीं के आधार पर विद्यार्थी की एक कक्षा से दूसरी कक्षा में प्रोन्नति की जाती है।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के ज्ञान द्वारा बालकों को शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन भी दिया जाता है। जब तक बालकों की विभिन्न विषयों में उपलब्धि का ज्ञान नहीं होगा तब तक यह बताना कठिन ही होगा कि उसके लिए कौनसा विषय या व्यवसाय अधिक उपयुक्त होगा।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के आधार पर बालक को सीखने की वाँछित सुविधाएँ

प्रदान की जा सकती है क्योंकि इनके द्वारा यह भली प्रकार जाना जा सकता है कि बालक किसी विषय में कितना सीख चुका है तथा उसे कितना अभी सीखना है। वास्तव में शैक्षिक सम्प्राप्ति का शिक्षा पर व्यापक प्रभाव है। इसके द्वारा ही बालक को अपनी उच्चतम सफलता के विषय में जानकारी होती है। तथा साथ ही साथ उसे अपनी कमजोरियों का भी ज्ञान होता है। अतः इनके द्वारा उसको अध्ययन की प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

शोध के उद्देश्य :

प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन।
2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व का अध्ययन।
3. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान का अध्ययन।
4. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियन्त्रण के बिन्दु का अध्ययन।
5. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।
6. शैक्षिक अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।
7. शैक्षिक उत्तरदायित्व के सन्दर्भ में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।
8. स्वमान के सन्दर्भ में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।

9. नियन्त्रण के बिन्दु के सन्दर्भ में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाएँ :

पूर्ववर्ती पृष्ठों पर प्रस्तुत की गई सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के आधार पर प्रस्तुत शोध के लिए अधोलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है -

1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अंतर है।
2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व में अन्तर है।
3. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान में अन्तर है।
4. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियन्त्रण के बिन्दु में अन्तर है।
5. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अंतर है।
6. शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त छात्राओं तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर है।
7. शैक्षिक उत्तरदायित्व के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त छात्राओं तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर है।
8. स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त छात्राओं तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर है।
9. नियन्त्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर है।

शोध की आवश्यकता :

अतीत से चली आ रही विकृत्तियों तथा विषमताओं को समाप्त करने

के लिए सुविधारहित वर्ग को सुविचारित समर्थन की आवश्यकता है। शिक्षा में व्याप्त असमानता और समाज में सामाजिक समता और न्याय की स्थापना में मदद पहुँचाना और लोकतन्त्र की बुनियादी मान्यताओं को सुदृढ़ीकरण करने के उद्देश्य से प्रस्तुत शोध की नितान्त आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध में यह देखने का प्रयत्न किया गया है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित वर्गों की शैक्षिक अभिप्रेरणा क्या है ? शैक्षिक उत्तरदायित्व क्या है ?, स्वमान क्या है ?, नियंत्रण के बिन्दु क्या है ? तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति क्या है ? यदि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित वर्ग की शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो उचित निर्देशन प्रदान कर समाज के सभी वर्गों को न्यायोचित स्थान दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया जा सकता है।

विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी समाज के विभिन्न वर्गों से आते हैं। उनमें कुछ सुविधायुक्त होते हैं तथा कुछ सुविधारहित होते हैं। विभिन्न अध्ययनों के द्वारा यह देखा गया है कि सुविधायुक्त विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र में सुविधारहित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सफल होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य भेद को जानने का प्रयास किया गया है। इस अंतर को जानकर सुविधारहित विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक सफलता दिलाने के लिए प्रयास किया जा सकता है।

<u>शोध की परिसीमाएँ</u> - प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित सीमाएँ हैं :

1. इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्राएँ ही न्यादर्श में ली गयी हैं, प्राथमिक तथा उच्च स्तर की छात्राएँ नहीं ली गयी हैं।

2. इस अध्ययन में इलाहाबाद शहर की छात्राओं को ही न्यादर्श में लिया गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन में हिन्दी माध्यम की छात्राएँ ही न्यादर्श में ली गयी हैं क्योंकि शोध के सभी उपकरण हिन्दी भाषा के ही प्रयोग किये गये हैं।

4. वर्तमान अध्ययन में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के चयन के लिए सामाजिक-आर्थिक स्तर को ही आधार बनाया गया है।

5. प्रस्तुत शोध में टी-टेस्ट तथा द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण नामक सांख्यिकीय प्रविधियों का ही प्रयोग किया गया है।

-:-:-:-:-:-

अध्याय : द्वितीय

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

अध्याय - द्वितीय

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों पर बहुत से अनुसंधान भारत में तथा विदेशों में किए गये हैं, परन्तु ये शोध सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियन्त्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पर्याप्त प्रकाश डालने में असमर्थ हैं। सामान्यतया शिक्षा के सभी स्तरों में ये समस्या पूर्णतया व्याप्त हैं। प्रस्तुत अध्याय में शोध से सम्बंधित साहित्य का अध्ययन किया गया है। यद्यपि सम्बंधित साहित्यों का सम्बंध सीधे समस्या से नहीं है तथापि अधिकतर सम्बंधित साहित्य सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध में यत्र-तत्र विस्तृत रूप से फैले हुए हैं।

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियन्त्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का भली प्रकार अध्ययन करने के विचार से सम्बंधित साहित्य को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है -

1. सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से सम्बंधित अध्ययन।

2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बंधित अध्ययन।

3. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्तरदायित्व से सम्बंधित अध्ययन।

4. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के स्वमान से सम्बंधित अध्ययन।

5. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंधित अध्ययन।

6. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित अध्ययन।

1. <u>सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से सम्बंधित अध्ययन</u> -

बच्चों के ऊपर उसके परिवार का बहुत प्रभाव पड़ता है जिसके फलस्वरूप बच्चे सुविधायुक्त तथा सुविधारहित हो जाते हैं। हैविंगहर्स्ट (1964), मारजोर बैक्स (1981), मेरिल्स (1983) ने भी अपने अध्ययनों द्वारा यह परिणाम प्राप्त किया कि परिवार के वातावरण का बच्चों के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ता है।

सत्यानन्दम् (1969) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा इसका निष्कर्ष यह प्राप्त किया कि, 1. जिन बालकों के माता-पिता स्नातक थे उन बालकों ने हाई स्कूल पास माता-पिता के बालकों की तुलना में अच्छा काम किया, 2. उच्च आमदनी तथा निम्न आमदनी में भी सार्थक अन्तर था, 3. उच्च तथा मध्यम आमदनी समूहों के बालकों में सार्थक अन्तर था तथा 4. मध्यम तथा निम्न आमदनी समूह के बालकों में सार्थक अन्तर नहीं था लेकिन मध्यम आमदनी समूह के बालक निम्न आमदनी समूह के बालकों की तुलना में अधिक अच्छे थे।

चोपड़ा (1969) ने भी ग्लोबल के सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण के आधार पर ही सुविधायुक्त तथा सुविधारहित में भेद किया।

दास, जैकाक और पण्डा (1970) ने अपने अध्ययन के द्वारा यह दर्शाया कि निम्न जाति के बच्चों का कार्य भी निम्न स्तर का होता

है तथा निम्न आर्थिक स्तर के बच्चों का संज्ञानात्मक विकास बहुत कम होता है। इस स्तर के बच्चों का धनी बच्चों की तुलना में कार्य बहुत ही असंतोषजनक रहता है।

बूकाक (1972) ने अपने अध्ययन के द्वारा देखा कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण परिवार की विशेषताएँ प्रभावित होती है और आर्थिक स्थिति को जानकर समाज के बारे में पूर्वानुमान लगाया जाता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर शैक्षिक सम्प्राप्ति अच्छी होती है। यह एक पूर्व स्थापित सत्य है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बच्चों के विद्यालय के कार्यों पर बहुत प्रभाव पड़ता है तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के कारण ही बच्चे सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होते हैं।

ब्लू और वर्गाशन (1973) ने निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले बच्चों को न्यादर्श में लिया। इन्होंने अपने शोध द्वारा यह परिणाम प्राप्त किया कि गोरे बच्चों का कार्य काले बच्चों की तुलना में अधिक अच्छा था।

जाक्हा क्रिस्टिएन्शन और राश (1975) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थति के बच्चों को अनुभवों को प्राप्त करने में अधिक कष्ट उठाना पड़ता है और उसके प्रारम्भिक विकास में ही रूकावट पैदा होने लगती है।

सामन्त (1975) ने सामाजिक-आर्थिक रूप से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित बालकों के लिए भी सुविधायुक्त समूह में ऐसे बालकों का चयन किया जिनके परिवार में अधिक आमदनी थी। पिता उच्च शिक्षित तथा ऊँची जाति के थे तथा शहर में रहते थे। सामाजिक रूप से सुविधारहित बालकों में उनका चयन किया जिनके परिवार की आय निम्न स्तर की थी, पिता की शिक्षा भी निम्न थी, नीची जाति (अनुसूचित जन-जाति आदि) के थे तथा गांव में रहते थे। उच्च आय के अन्दर रु. 8000/- प्रति वर्ष, उच्च शिक्षा में स्नातक की पढ़ाई को सम्मिलित किया गया तथा ब्राह्मण जाति

को ऊँची जाति मानी गई। इस प्रकार रु. 3000/- वार्षिक आय को निम्न आय का माना गया, प्राथमिक या उससे कम की शिक्षा को निम्न शिक्षा माना गया तथा अनुसूचित जाति को निम्न जाति समझा गया।

सिंह (1976) ने सामाजिक रूप से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों का अध्ययन किया तथा 600 बालकों को न्यादर्श के लिए प्राप्त करके पाँच बराबर भागों में बांटा गया जो इस प्रकार है -

1. हिन्दू, उच्च जाति - अधिक आमदनी
2. हिन्दू, उच्च जाति - कम आमदनी
3. हिन्दू, निम्नजाति - कम आमदनी
4. जन-जाति, हिन्दू - कम आमदनी
5. जन-जाति ईसाई - कम आमदनी

उपरोक्त विभाजनों में अनुसंधानकर्ता ने प्रथम भाग को सुविधायुक्त माना तथा द्वितीय भाग को सुविधायुक्त के समान माना गया परन्तु नीचे के तीनों समूहों को सुविधारहित ही माना गया। अतः ज्ञात होता है कि व्यक्ति के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने में मुख्य कारण सामाजिक-आर्थिक स्थिति का ही है।

पारिख (1977) ने शैक्षिक सम्प्राप्ति का सामाजिक-आर्थिक स्तर के सम्बंध का अध्ययन किया तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति के सार्थक सम्बंध को प्राप्त करने में असफल रहे। सामाजिक-आर्थिक स्तर में चार स्तर थे - परिवार का आर्थिक स्तर, परिवार का सामाजिक स्तर, पिता का व्यवसाय तथा परिवार की आमदनी।

वर्मा और सिन्हा (1977) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का शोध करने पर यह परिणाम प्राप्त किया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बच्चे

खिलौने के निर्माण तथा कहानी बनाने में निम्न स्तर के बच्चों से कहीं अच्छे थे।

गुप्ता (1978) ने अपने अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से युक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न सामाजिक-आर्थिक दृष्टि की अपेक्षा अधिक सन्तोषजनक थी।

सेठ आदि (1979) ने सुविधायुक्त तथा सुविधारहित बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव के परीक्षण हेतु 100 सुविधायुक्त तथा 100 सुविधारहित विद्यार्थियों को लिया। सुविधायुक्त उन्हें माना गया जिनके माता-पिता की आय रु0 500/- या उससे अधिक हो, जो उच्च जाति का हो, पिता स्नातक हो तथा उसे शहर का निवासी होना चाहिये। सुविधारहित उनको माना गया जिनकी मासिक आय रु0 150/- या उससे कम हो और शिक्षा कक्षा 8 से कम हो। इसमें यह परिणाम प्राप्त किया गया कि सुविधारहित बच्चे सुविधायुक्त बच्चों की तुलना में अधिक चिन्तित तथा अन्तर्मुखी थे। दूसरी तरफ सुविधायुक्त की तुलना में सुविधारहित लड़कियों में उत्साह अधिक था तथा सभ्य अधिक थी। सुविधारहित लड़के सुविधारहित लड़कियों की तुलना में अधिक दब्बू प्रकृति के थे। इन्होंने यह भी देखा कि सुविधारहित होने का मानसिक स्वास्थ्य पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है।

कॉवले (1980) ने अपने अध्ययन से यह परिणाम प्राप्त किया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बच्चों में मानसिक बीमारी रहती है तथा शरीर से भी कमजोर होते हैं।

सेठ और श्रीवास्तव (1980) ने 200 सुविधायुक्त तथा सुविधारहित बच्चों को न्यादर्श में लिया। इस अध्ययन में इन्होंने यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधा-

युक्त की अपेक्षा सुविधारहित विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था।
श्रीवास्तव (1980) ने सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से पिछड़े 50 सुविधायुक्त तथा 50 सुविधारहित बच्चों को न्यादर्श में लिया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधा-युक्त बच्चों की तुलना में सुविधारहित बच्चे अधिक उद्दण्ड थे।

दीक्षित और मुर्जानी (1982) ने भी सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से ही सुविधा-युक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों का अध्ययन किया। इन्होंने 300 ऐसे बच्चों का चयन किया जिनमें सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से सुविधा की कमी थी तथा 100 सामा-जिक-आर्थिक दृष्टि से सुविधायुक्त बच्चों का चयन किया। अध्ययन के परिणाम यह बताते हैं कि दोनों ही समूहों में बुद्धिमत्ता में सार्थक अन्तर था। सुविधायुक्त वर्ग की बुद्धिमत्ता सुविधारहित समूह की अपेक्षा अधिक थी। अनुसंधानकर्ता ने अध्ययन का आधार सामाजिक-आर्थिक स्तर को ही बनाया।

मैकमिलन (1982) ने अपने शोध में यह देखा कि निम्न स्तर के लोगों का वातावरण उनके परिवार को भी प्रभावित करता है। घर के सदस्यों की संख्या कम होना, निम्न स्तर का भोजन, निम्न स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएँ, घर के वातावरण का सन्तोषप्रद न होना तथा बड़ों (माता-पिता) के अधिक बच्चों का होना आदि कारण बच्चों के सामाजिक, शैक्षिक तथा भावात्मक भावनाओं पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने में मुख्य कारण सामाजिक-आर्थिक स्तर का ही है।

डेविस (1986) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति समाज में एक व्यक्ति की स्थिति का वर्णन करती है। इनके कथन से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने में मुख्य कारण उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति

ही है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करने में बहुत सारे कारणों का प्रभाव पड़ता है। इन कारणों में अनेक बातें समायोजित होती हैं जैसे व्यक्ति की आय, रोजगार, मकान की स्थिति या बस्ती का प्रभाव, मकान का मूल्य तथा परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि। सामाजिक-आर्थिक स्थिति अन्य बातों से भी प्रभावित होती है, उदाहरण के लिए परिवार में कितने बच्चे हैं, कितनी आयु के हैं और परिवार का क्या स्वरूप है तथा वर्ष भर में उस परिवार की क्या आमदनी है।

मालविका गांगुली ﴾1989﴿ ने सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों ने निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा गणित, भाषा तथा अन्य विषयों में अधिक अंक प्राप्त किये। इन्होंने अपने परिणाम के पक्ष में यह तर्क दिया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों के माता-पिता घर में अधिक प्रभावपूर्ण ढ़ंग से बच्चों को पढ़ाई के प्रति प्रोत्साहित करते हैं जिससे उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक होती है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के माता-पिता अपने बच्चों को गृह-कार्य समय से करने, नियमित रुप से विद्यालय जाने तथा परीक्षा के प्रति गम्भीर रुप से तैयारी करने पर बल नहीं देते । इस कारण उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति कम हो जाती है।

शर्मा ﴾1991﴿ ने सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर चयन करके अनुसूचित जाति के युवकों का आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया गया कि उच्च तथा मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्तर के युवकों का निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के युवकों की अपेक्षा आधुनिक पाये। सामाजिक परिवर्तन, स्वतन्त्रता, राष्ट्रीयता तथा सामाजिकता के प्रति उच्च अभिवृत्ति थी ।

इस अध्ययन में यह भी देखा गया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी जिस परिस्थिति में रह रहे थे उसी परिस्थिति के प्रति सन्तुष्ट थे जबकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के युवक वर्तमान समाज में परिवर्तन चाहते थे तथा अपनी स्थिति को समाज में और उच्च करना चाहते थे।

राधाकृष्णन् और राहगीर (1992) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि बच्चों का पढ़ाई-लिखाई का तरीका माता-पिता के सामाजिक-आर्थिक स्तर से पूर्ण रुप से सम्बंधित है। बच्चे अपने माता-पिता के शैक्षिक तरीकों को धरोहर के रुप में प्राप्त कर लेते हैं।

निष्कर्ष :

अनेक अनुसंधानकर्ताओं ने जाति के आधार पर ही सुविधायुक्त तथा सुविधा-रहित बालकों का चयन किया है जैसे रथ और दास (1972), दास (1973), दास तथा अन्य (1970), सिंह (1976), पण्डा और दास (1970) । परन्तु केवल जाति के आधार पर ही सुविधायुक्त तथा सुविधारहित का चयन तर्क संगत प्रतीत नहीं होता। इसके अतिरिक्त वैसिल्क (1971) , ग्रीन (1965) आदि ने नीग्रो को ही सुविधा-रहित माना, यह भी उचित नहीं है। केवल जाति तथा रंग ही सुविधायुक्त अथवा सुविधारहित के होने के कारण नहीं हो सकते क्योंकि बहुधा निम्न जाति का व्यक्ति भी धनवान हो सकता है तथा धनहीन व्यक्ति भी ऊँची जाति का हो सकता है। अतः केवल जाति कारक ही व्यक्ति की सुविधा तथा असुविधा के लिए पर्याप्त कारक नहीं हैं। गोरडन (1968), चोपड़ा (1971), दास (1973), जैकहक और मोहन्ती (1974) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित बालकों का

चयन किया है। अनुसंधानकर्त्री द्वारा भी सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के चयनार्थ सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ही आधार माना गया है।

2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिप्रेरणा से संबंधित अध्ययन -

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने का शैक्षिक अभिप्रेरणा पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह है कि मानव अभिप्रेरणा तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर आपस में बहुत अधिक सम्बंधित हैं। वास्तव में मनुष्य की मान्यताओं, शक्ति, सन्तुष्टि आदि पर सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। जन्म से ही बालक को सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ प्रभावित करने लगती है। सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रभावित करते रहे हैं। टेराल, डार्किन और वाइजली (1959) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि मध्यम वर्ग के बालक निरपेक्ष प्रोत्साहन मिलने पर अच्छा काम करते हैं परन्तु निम्न वर्ग के बालक ठोस पुरस्कार को देने पर अच्छा कार्य करते हैं। जिगलर और डीलाबरी (1962) ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया।

जिंगलर और कन्जर (1962) ने यह परिणाम प्राप्त किया कि शुरु में छोटे बालकों के ऊपर ठोस पुरस्कार का अधिक प्रभाव पड़ता है लेकिन बालकों के बाद के स्तर में सामाजिक प्रोत्साहन जैसे प्रशंसा, ध्यान देना तथा प्यार करना प्रभाव डालता है। इन्होंने यह भी देखा कि गरीब बालकों पर ठोस या मूर्त पुरस्कार, प्रशंसा आदि की अपेक्षा अधिक प्रभाव डालते हैं। अतः उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सुविधा-रहित बालकों को मूर्त पुरस्कार देकर उनको शिक्षा के विषय में आगे बढ़ाया जा सकता है।

इरिक्सन (1965) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि माता-

पिता की प्रत्याशा का बालकों की सम्प्राप्ति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

रोशेनहन [1966] ने यह देखा कि पुरस्कार की परिस्थिति में निम्न वर्ग के गोरे तथा नीग्रो बालकों ने सुधारात्मक कार्य किया लेकिन पुरस्कार की शर्त को समाप्त कर देने पर बहुत ही खराब कार्य किया। रोशेनहन [1967] ने पुनः देखा कि समाज से सन्तुष्ट बालक समाज से असन्तुष्ट बालकों की तुलना में अधिक जिम्मेदार थे। अतः अनुसंधानकर्ता के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समाज के प्रभाव के कारण ही बालक अपने को पुर्नबलन देते हैं।

रथ [1972] ने अपने अध्ययन में सुविधारहित बच्चों से सुविधायुक्त बालकों की तुलना की। उन्होंने यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित बालकों में तथा उनके पिता में भी शैक्षिक, आर्थिक तथा व्यवसाय के प्रति निम्न आकांक्षा थी। इसी रथ [1973] ने पुनः यह परिणाम प्राप्त किया कि निम्न अभिप्रेरणा के फलस्वरूप सुविधारहित बालक अधिगम में मन्द हो जाते हैं तथा अपने को विद्यालय की परि-स्थितियों में समायोजित नहीं कर पाते तथा बीच में ही पढ़ाई को छोड़ देते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि घर से उनकों प्रोत्साहित नहीं किया जाता तथा विद्यालय में भी प्रोत्साहन नहीं मिलता। बालक इस घुटन भरी जिन्दगी से अपने को अलग करने का प्रयत्न करता है और वह अपने को कैदी महसूस करता है।

अर्वे और मुस्सियो [1974] ने सुविधायुक्त तथा सुविधारहित बालकों का अध्ययन किया। दोनों ही समूहों को प्रभावशाली कार्य के लिये पुरस्कार भी दिया गया। इस अध्ययन में यह देखा गया कि सुविधारहित बालकों ने अपने कार्यों में कुशलता सुविधा-युक्त की अपेक्षा कम दर्शायी, साथ ही सुविधारहित बालकों में अधिक वेतन प्राप्त करने की अभिलाषा थी।

सोरेन्शन और माएहरस (1977) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि प्रशंसा का विद्यार्थियों के ऊपर बहुत प्रभाव पड़ता है तथा लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर प्रशंसा का अधिक प्रभाव पड़ता है।

शर्मा (1981) ने भी यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित बालकों में विशेष पुरस्कार अधिक प्रभाव डालता है। इन्होंने यह भी देखा कि पुरस्कार के हटा देने पर तथा साधारण पुरस्कार की शर्त पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित बालकों में अन्तर नहीं पाया जाता। सुविधारहित बालकों ने विशेष पुरस्कार देने पर अधिक अच्छा कार्य किया जबकि साधारण पुरस्कार देने पर कोई अन्तर नहीं था। यहां यह बात विशेष महत्वपूर्ण है कि विशेष पुरस्कार की शर्त पर सुविधारहित बालकों ने सुविधायुक्त बालकों की अपेक्षा अधिक अच्छा कार्य किया।

विमला विकरचवन तथा रीना भट्टाचार्या (1989) ने अपने शोध में यह परिणाम प्राप्त किया कि विद्यालय की शैक्षिक सम्प्राप्ति अभिप्रेरणा से सकारात्मक रूप से सम्बंधित है।

पाल और मिश्रा (1992) ने सुविधारहित विद्यार्थियों के संज्ञात्मक विकास, शैक्षिक अभिप्रेरणा, सामाजिक व्यवहार तथा उनके नैतिक निर्णय का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शैक्षिक अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में सुविधारहित विद्यार्थियों में सुविधायुक्त विद्यार्थियों की तुलना में शैक्षिक अभिप्रेरणा को कम प्राप्त किया तथा सुविधारहितता का शैक्षिक अभिप्रेरणा के साथ नकारात्मक सम्बंध प्राप्त किया।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययनों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त

तथा सुविधारहित बालक-बालिकाओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बंधित कुछ कार्य हुए हैं। लेकिन यह ध्यान देने की बात है कि विभिन्न अध्ययनों में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों का केवल एक चर शैक्षिक अभिप्रेरणा पर ही अध्ययन किया गया है। इन अध्ययनों में देखा गया है कि दोनों प्रकार के समूहों के लिए अलग-अलग प्रकार के प्रोत्साहनों की आवश्यकता होती है।

3. <u>सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक उत्तरदायित्व से सम्बन्धित अध्ययन</u> -

वस्तुतः सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक उत्तरदायित्व से सम्बंधित कोई भी कार्य नहीं हुआ है। अतः इससे सम्बन्धित साहित्य का भी नितान्त अभाव है। फिर भी अध्ययनों के द्वारा यह देखा गया है कि विद्यार्थियों में स्वयं ही अपने प्रति उत्तरदायित्व की भावना होने पर वह अधिक नियम व विधि-पूर्वक काम करते हैं तथा अपने को नियन्त्रित करते हैं।

डिक्करसन और क्रीडन (1981) तथा रोशेनबाम और ड्रेबमैन (1979) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि जिन बालकों ने अपने आप चयन का तरीका अपनाया था उन बालकों ने अधिक प्रभावशाली कार्य किया।

लाक्के आदि (1981) के अनुसार विद्यार्थी के द्वारा स्वयं ही अपने आप लक्ष्य को निश्चित करने पर उसकी उपलब्धि बहुत प्रभावित होती है।

यह सत्य भी है कि बालक ही यह अधिक योग्यता के साथ जान सकते हैं कि वह क्या करने जा रहे हैं या वह क्या करना चाहते हैं तथा उसका क्या महत्व है ? स्वयं के बारे में उत्तरदायित्व की भावना का समाज पर भी प्रभाव पड़ता है। व्हाइटमेन, स्काईबिक और रीड (1983) के अनुसार यदि बालकों को स्वयं कार्य

करने का प्रशिक्षण दिया जाये तो वह अपनी योग्यता को और विकसित कर सकते हैं तथा समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

ब्राउन (1983) ने देखा कि बालक प्रौढ़ों के हस्तक्षेप के बिना ही समस्याओं का हल निकाल लेते हैं तब उनमें उत्तरदायित्व की भावना बलवती होती है। अतः बालकों को स्वयं ही सीखना चाहिये। इस प्रकार वह अपने आप ही पुर्नबलन प्राप्त करते हैं।

निष्कर्ष :

अतः स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उत्तरदायित्व से सम्बंधित अध्ययनों का नितान्त अभाव है। जो भी अध्ययन हुए हैं वे अपरोक्ष रुप से ही शैक्षिक उत्तरदायित्व से सम्बंधित हैं।

4. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में स्वमान का अध्ययन -

रथ तथा सिरीअर (1960) ने भी उच्च तथा निम्न वर्ग के समूहों का अपने बारे में विचार का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि उच्च समूह की अपेक्षा निम्न समूहों में अपने प्रति नकारात्मक व्यवहार था।

ब्लूम (1965) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में सुविधारहित विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास की कमी थी तथा नकारात्मक स्वमान था।

विट्टी (1967) तथा टेन्नेबौम (1969) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित बालकों की अपने बारे में निम्न धारणा थी।

टीडट (1968) ने भी सुविधारहित बालकों का अध्ययन करने पर उनमें

हताशा प्राप्त किया तथा आत्म-विश्वास की कमी प्राप्त की।

व्हाइटमैन और ड्यूटस्च (1968) ने भी अपने अध्ययनों में यह देखा कि सुविधायुक्त की अपेक्षा सुविधारहित विद्यार्थियों की अपने बारे में निम्न धारणा थी तथा पढ़ाई के अंक में और स्वमान में सार्थक अन्तर था।

हेस (1970) ने अपने अध्ययन द्वारा यह परिणाम प्राप्त किया कि निम्न जाति के बच्चों का अपने विचारों को व्यक्त करने का तरीका निम्न था तथा कार्य-कुशलता भी उनकी निम्न थी।

सोरस और सोरस (1971) ने अपने अध्ययन में सुविधायुक्त तथा सुविधा-रहित बालकों की अपने बारे में धारणा का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधायुक्त की अपेक्षा सुविधारहित विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास अधिक अच्छा था। सुविधायुक्त की तुलना में उनका अपने बारे में स्पष्ट विचार था। स्वमान भी स्पष्ट था। अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों के साथ भी सुविधायुक्त विद्यार्थियों की तुलना में अच्छा व्यवहार था।

किमब्लेम्स (1971) ने भी सांस्कृतिक रूप से सुविधारहित बालकों में स्वमान के साथ नकारात्मक सम्बंध प्राप्त किया।

यंगलेशन (1973) ने भी स्वमान मापनी का संस्थागत बच्चों पर प्रयोग किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि संस्थागत बच्चों में स्वमान असंस्थागत की अपेक्षा कम है।

हैसन (1977) ने बालकों की अपने बारे में धारणा का अध्ययन करने के लिए महाविद्यालयों के 400 विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया। एक ओर सामाजिक रूप से सुविधायुक्त समूह को रखा तथा दूसरी ओर सामाजिक रूप से सुविधारहित (अनुसूचित

जाति तथा जन-जाति) समूह को लिया। इन्होंने यह परिणाम प्राप्त किया कि अनु-सूचित जाति तथा जन-जाति के विद्यार्थियों की अपने बारे में धारणा निम्न थी।

रीडेल (1980) ने अपने अध्ययन में स्वमान, बुद्धिमत्ता तथा सम्प्राप्ति के सम्बंधों का अध्ययन तीन समूहों के जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों में किया। तीन समूह इस प्रकार के थे - 1. गोरे समूह के विद्यार्थी, 2. काले समूह के विद्यार्थी व 3. हीस्पैनिक (अमेरिका की विशेष जाति) जाति समूह के 432 बालकों को न्यादर्श में लिया। इसमें कूपर स्मिथ का स्वमान परीक्षण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। इसका परिणाम यह प्राप्त किया गया कि तीनों समूहों में बुद्धिमत्ता तथा सम्प्राप्ति में सार्थक सम्बंध था परन्तु स्वमान तथा बुद्धिमत्ता में सार्थक सम्बंध नहीं था। गोरे बालकों में स्वमान तथा सम्प्राप्ति में सार्थक सम्बंध था लेकिन काले तथा हीस्पैनिक समूह के विद्यार्थियों में सार्थक सम्बंध नहीं था।

मिश्रा और त्रिपाठी (1980) ने भी अपने अध्ययन में स्वमान तथा सुविधा-रहितता का अध्ययन किया तथा नकारात्मक सह-सम्बंध प्राप्त किया। चेने (1971), मिलर (1971), फ्रोस्ट (1968) और क्रोगमेन (1971) ने भी इसी प्रकार यह देखा कि सुविधारहित विद्यार्थियों की सुविधायुक्त विद्यार्थियों की तुलना में बहुत ही नकारात्मक धारणा है।

फेहे (1981) ने स्वमान का सुविधारहित विद्यार्थियों पर अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित विद्यार्थी बहिर्मुखी होते हैं। वे औरों की तुलना में अपने बारे में कम अन्तर कर पाते हैं तथा अपने भविष्य के बारे में अनिश्चित होते हैं। वे अपना विश्लेषण भी नहीं कर पाते। अपने बारे में विद्यालयी सम्प्राप्ति तथा कुशलता में सकारात्मक कार्य कम कर पाते हैं।

उपाध्याय (1985) ने अपने शोध में अधिक सुविधारहित तथा कम सुविधा-रहित विद्यार्थियों का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि अधिक सुविधारहित विद्यार्थियों का स्वमान के साथ सम्बंध नहीं है।

थॉमस (1988) ने माता-पिता के व्यवहार और विश्वास का बच्चों के स्वमान तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि माता-पिता के विश्वास तथा व्यवहार का बच्चों के स्वमान तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति से घनिष्ठ सम्बंध है। माता-पिता का व्यवहार तथा विश्वास अच्छा होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक होती है तथा स्वमान भी उच्च होता है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययनों में हम यह देखते हैं कि सुविधायुक्त विद्यार्थियों की अपेक्षा सुविधारहित विद्यार्थियों की अपने बारे में धारणा निम्न है। कुछ अनुसंधानकर्ताओं ने यह भी देखा कि सुविधायुक्त की तुलना में सुविधारहित विद्यार्थियों का अपने बारे में स्पष्ट विचार था तथा अपने सहपाठियों और अध्यापकों के साथ भी अच्छा व्यवहार था।

5. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बन्धित अध्ययन -

नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंधित बहुत सारे अध्ययन यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि नियन्त्रण के बिन्दु का बालक के सीखने तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान है। बालक सुविधायुक्त हो अथवा सुविधारहित, वह अपने का आन्तरिक बिन्दु के आधार पर या बाह्य घटनाओं के कारण नियंत्रित करता है।

क्राउन तथा लिवरैण्ट (1963) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु को नियंत्रित रखने वाले बालक बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंध रखने वाले बालकों की तुलना में निर्णय लेने में अधिक आत्म-विश्वासी थे।

बैट्टील और रोट्टर (1963), फ्रैंकलिन (1963), शॉ और उही (1971) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थी बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे।

फ्रैंकलिन (1963) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थी आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बालक बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित थे।

मिलग्राम (1970) ने 52 सांस्कृतिक रूप से असुविधायुक्त तथा 40 सुविधा-युक्त विद्यार्थियों में आकांक्षा के स्तर का तथा नियंत्रण के बिन्दु की तुलना की। सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों का चयन करने के लिए माता-पिता की आय तथा शिक्षा को प्रयुक्त किया गया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सुविधायुक्त की तुलना में सुविधारहित विद्यार्थी आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु से कम प्रभावित थे।

मेशर (1972) ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु के विद्यार्थी उच्च सम्प्राप्ति से सम्बंधित थे।

रूप्स तथा नोविस्की (1978) ने हंगरी के 10-14 वर्ष आयु के 469 विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु के विद्यार्थी उच्च सम्प्राप्ति से सम्बंधित थे।

ब्राउन (1980) ने अपने अध्ययन में नियंत्रण के बिन्दु तथा सम्प्राप्ति में कोई भी सार्थक सम्बंध नहीं प्राप्त किया। फ्राई तथा कोए (1980) ने यह देखा कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित बालकों की कार्यकुशलता बाह्य नियंत्रण के बिन्दु के बालकों से अधिक अच्छी थी।

सिन्हा (1980) ने अपने अध्ययन द्वारा यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित समूह के विद्यार्थी सफल होने के लिये बाह्य कारणों को उत्तरदायी मानते हैं - जैसे शिक्षक की दया, ईश्वर तथा भाग्य इत्यादि को जिम्मेदार मानते हैं।

निष्कर्ष :

उपरोक्त सम्बंधित साहित्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बालक अपने को आन्तरिक या बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से अवश्य सम्बंधित करता है तथा साथ में यह भी देखा गया है कि सुविधायुक्त विद्यार्थी आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु से सम्बंध रखते हैं तथा सुविधारहित विद्यार्थी बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंध रखते हैं।

6. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित अध्ययन -

सामाजिक-आर्थिक रूप से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित बहुत सारे अध्ययन भारतवर्ष में तथा विदेशों में किये गये हैं जो निम्नलिखित हैं -

चोपड़ा (1969) ने सांस्कृतिक रूप से सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया। अपने शोध में लखनऊ शहर के 15-17 उम्र के विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया। सांस्कृतिक रूप से सुविधारहित बालकों की सामाजिक-आर्थिक

स्तर के आधार पर चयन किया। शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए हाई स्कूल के परीक्षा के अंक प्राप्त किए गए। इस अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त किया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति की तुलना में अधिक अच्छी थी। लेकिन मध्यम तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर नहीं था।

सिंह (1976) ने सामाजिक रूप से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सामाजिक रूप से सुविधायुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधा-रहित विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक अच्छी है।

राव (1976) ने सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया। इसमें मद्रास के छः माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया। सामाजिक-आर्थिक स्तर के लिए कुप्पी-स्वामी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति परीक्षण बनाया गया। इसमें नगर महापालिका विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में प्राइवेट विद्यालयों की उच्च उपलब्धि प्राप्त की गयी।

थॉम्पसन तथा राइस (1978) ने पिता की अनुपस्थिति का गणित की उपलब्धि के साथ सम्बंधों का अध्ययन किया। न्यादर्श में 105 विद्यार्थी काले, गोरे, बालक तथा बालिकाएँ लिये गये। इसमें यह परिणाम प्राप्त किया गया कि पिता के द्वारा अनुपस्थित बालकों ने गणित में निम्न अंक प्राप्त किये तथा काले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि गोरे की तुलना में कम थी।

उषाश्री (1978) ने सामाजिक रूप से सुविधायुक्त तथा सामाजिक रूप से

सुविधारहित आन्ध्र प्रदेश के हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सामाजिक रूप से सुविधायुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति सामाजिक रूप से सुविधारहित विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अच्छी है।

साहू {1979} ने सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में भाषा सम्बंधित सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधा-युक्त विद्यार्थियों की भाषायी उपलब्धि सुविधारहित विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अच्छी थी।

संतोष तथा शर्मा {1980} ने सामाजिक-आर्थिक स्तर का विद्यालयी सम्प्राप्ति से सम्बंधों का अध्ययन किया। कक्षा 8 के 300 विद्यार्थी न्यादर्श में लिये गये। देव मोहन का सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण तथा कक्षा 8 के परीक्षा के अंक प्राप्त किये गये। इसका परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का शैक्षिक सम्प्राप्ति से सार्थक सम्बंध नहीं था।

खन्ना {1980} ने विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया। न्यादर्श में 1000 विद्यार्थियों को कक्षा 6, 7 व 8 स्तर से लिया। इसमें 30 विद्यालय ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के थे। शैक्षिक उपलब्धि के लिए अर्द्ध-वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को तथा वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को सम्मिलित किया गया। इसका परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का शैक्षिक सम्प्राप्ति से सार्थक सम्बंध था।

बसेटा, ग्रेसिया तथा पार्लन {1982} ने परिवार के प्रभाव का शैक्षिक

सम्प्राप्ति पर अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि जिन बच्चों के माता-पिता साथ रहते थे उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अकेले रहने वाले बालकों की तुलना में अधिक अच्छी थी।

मेरिल्स (1983) ने ब्राजील के कम आय के 5 स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक सम्प्राप्ति को देखा। न्यादर्श में 373 बालकों को लिया गया। पिता की शिक्षा तथा व्यवसाय की आय के आधार पर बालकों का चयन किया गया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि बुद्धिमत्ता तथा अध्ययन की आदत शैक्षिक सम्प्राप्ति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इन्होंने यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक अच्छी थी।

शर्मा और मैथ्यू (1971), मिश्रा और त्रिपाठी (1980), पाण्डेय (1984) और गुप्ता (1985) ने भी सुविधारहितता का शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ नकारात्मक सम्बंध प्राप्त किया।

भार्गव आदि (1984) ने दीर्घकालीन सुविधारहितता का शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ नकारात्मक सम्बंध प्राप्त किया।

रीटा (1984) ने 13 वर्ष की उम्र के 300 विद्यार्थियों पर सामाजिक-आर्थिक स्तर पर सम्प्राप्ति परीक्षण को प्रयुक्त किया तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में सकारात्मक सह-सम्बंध प्राप्त किया।

वेस्ले (1985) ने संवेगात्मक रूप से उत्तेजित तथा अनुत्तेजित 13-19 उम्र के विद्यार्थियों का अध्ययन किया तथा परिणाम प्राप्त किया कि नियंत्रण के बिन्दु का परिवार के सम्बंध तथा पाठशाला के सम्बंध के साथ सार्थक अन्तर था।

गुप्ता (1985) ने सुविधारहित बालिकाओं के नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करने के लिए इलाहाबाद शहर की 200 बालिकाओं को न्यादर्श में लिया। शोध के उपकरण में कल्पलता पाण्डेय की सुविधारहित मापनी तथा रोटर की आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण सूची का प्रयोग किया गया था। इसके परिणाम यह प्राप्त हुए कि सुविधारहित छात्राओं का आन्तरिक तथा बाह्य दोनों नियंत्रण के बिन्दु पर शैक्षिक सम्प्राप्ति का प्रभाव पड़ता है। अधिक सुविधारहित छात्राओं की निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति थी।

थॉमस जेफरी (1989) ने कक्षा 7 में पढ़ने वाले काले तथा गोरे विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि काले विद्यार्थियों की तुलना में गोरे विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक थी।

रेहाना जैदी (1989) ने प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति, माता-पिता के द्वारा सुविधारहित बच्चों के प्रभाव और कुछ सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारणों का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में यह देखा कि परिवार के सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों का बच्चों के ऊपर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। माता के न होने पर बच्चों की भाषायी सम्प्राप्ति कम थी। माता तथा पिता दोनों से वंचित बच्चों में भाषायी सम्प्राप्ति, स्वमान तथा मानसिक विकास में कमी देखी गई।

निष्कर्ष :

उपरोक्त सम्बंधित साहित्यों के विस्तृत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का प्रभाव बालक-बालिकाओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर बहुत ही अधिक पड़ता है। अधिकतर अनुसंधान उच्च जाति (ब्राह्मण आदि) तथा निम्न जाति पर किये गये या गोरे काले आदि विद्यार्थियों पर किये गये परन्तु इस

प्रकार के शोध की समस्या का सीधा सम्बंध उपरोक्त सम्बंधित साहित्यों में नहीं है।

प्रस्तुत अध्ययन :

उपरोक्त वर्णित सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि बहुत सारे अध्ययन सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता पर किये गये है - जैसे उच्च जाति तथा निम्न जाति, गोरे तथा काले विद्यार्थियों पर या आमदनी के आधार पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों को विभक्त करके किया गया है परन्तु शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति पर एक साथ सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता से सम्बंधित अध्ययन का नितान्त अभाव है।

वर्तमान अध्ययन पूर्वकालों में किये गये अध्ययनों से निम्न प्रकार से भिन्न है -

1. इस अध्ययन में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं का अध्ययन करते समय अनेक चरों - शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति को लिया गया है, जबकि सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों से सम्बंधित सभी अध्ययन वर्तमान अध्ययन में लिये गये विभिन्न चरों में से केवल एक चर या दो चरों से ही सम्बंधित है। शिक्षा के किसी भी स्तर पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के संदर्भ में विभिन्न पक्षों पर इतना विस्तृत अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है।

2. इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक उत्तरदायित्व की माप के लिए शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी का निर्माण शोधकर्त्री द्वारा स्वयं किया गया है।

4. यह अध्ययन व्यापक न्यादर्श पर किया गया है जिससे अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त हो सके।

5. प्रस्तुत अध्ययन में जिस प्रकार के उपकरण तथा तकनीक का प्रयोग किया गया है वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस शोध में पहले सुविधायुक्त तथा सुविधा-रहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई है। इसके पश्चात् दोनों समूहों की तुलना शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु चरों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ तुलना की गई है।

अत: सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी अध्ययन का सीधा सम्बंध इस प्रकार के शोध से नहीं है। सम्बंधित साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि ऐसे शोध का नितान्त अभाव है जिसमें प्रत्यक्ष रुप से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्तरदायित्व का अध्ययन किया गया हो। वर्तमान अध्ययन में पहली बार सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्तरदायित्व का अध्ययन किया गया है।

-:-:-:-:-:-

अध्याय : तृतीय

अनुसन्धान अभिकल्प

- अध्ययन की विधि
- जनसंख्या और न्यादर्श
- उपकरणों का वर्णन
- प्रदत्तों का संग्रह और व्यवस्थापन
- सांख्यिकी का प्रयोग

अध्याय - तृतीय

अनुसंधान अभिकल्प

अनुसंधान अभिकल्प अनुसंधान के लिए प्रक्रियात्मक बन्ध प्रस्तुत करता है । अनुसंधान अभिकल्प से प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण को दिशा मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए निम्न सोपानों का अनुसरण किया गया है -

अध्ययन की विधि :

समस्या के समाधान के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है । जब निश्चित समष्टि में किसी व्यवहार परक गोचर की मात्रा एवं उसके वितरण के निर्धारण के लिए अनुसंधान किया जाता है जो उसे सर्वेक्षण विधि कहते हैं। इस विधि में समष्टि का अध्ययन उस समष्टि से प्रतिनिध्यात्मक प्रतिदर्श से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करके किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि इस विधि में प्रति-दर्श से प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर चरों के पारस्परिक सम्बंधों का आनुमानिक निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार यह विधि प्रतिदर्शों को समष्टियों के साथ जोड़ती है।

जनसंख्या और न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए इलाहाबाद शहर के सभी हिन्दी माध्यम के

माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा ग्यारह में अध्ययनरत समस्त छात्राओं को जनसंख्या में सम्मिलित किया गया है। छात्रों को जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः अनुसंधान के परिणाम केवल छात्राओं की जनसंख्या तक ही सीमित होंगे।

अनुसंधानकर्त्री के द्वारा प्रस्तुत समस्या का अध्ययन करने के लिए विद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया। सर्वप्रथम न्यादर्श चयन की लाटरी विधि का प्रयोग कर 10 विद्यालयों को चुना गया। ये 10 विद्यालय निम्नवत् थे -

1. गौरी पाठशाला इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद
2. महिला सेवा सदन, इलाहाबाद
3. ईश्वर शरण बालिका विद्यालय, इलाहाबाद
4. क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, इलाहाबाद
5. आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद
6. रमादेवी बालिका विद्यालय, इलाहाबाद
7. इन्डियन गर्ल्स इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद
8. के0पी0गर्ल्स इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद
9. महिलाग्राम इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद
10. द्वारिका प्रसाद गर्ल्स इण्टर कॉलेज, इलाहाबाद

तत्पश्चात् इन दसों विद्यालयों से कक्षा ग्यारह का एक-एक वर्ग यादृच्छिक विधि से छाँटा गया। इस प्रकार छाँटे गये कक्षा ग्यारह के इन वर्गों में अध्ययनरत समस्त छात्राओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। कुल 500 छात्राओं ने अध्ययन के लिए आवश्यक प्रदत्त प्रदान किये। अतः अध्ययन के लिये 500 छात्राओं ने सांख्यिकीय न्यादर्श की रचना की।

उपकरणों का वर्णन :

प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए कतिपय उपकरणों की आवश्यकता होती है। उचित उपकरणों का चयन शोध कार्य में सफलता के लिए अनिवार्य है। प्रस्तुत शोध में सर्वप्रथम सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की पहचान करने के लिए सामाजिक-आर्थिक प्रास्थिति सूचांक का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् सुविधा-युक्त तथा सुविधारहित छात्राओं का अध्ययन करने के लिये चार अन्य परीक्षणों - शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान तथा नियंत्रण के बिन्दु का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक सम्प्राप्ति के रूप में छात्राओं के द्वारा माध्यमिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों का प्रयोग किया गया है। इन सभी का विवरण निम्नलिखित है -

क. सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक - सामाजिक-आर्थिक स्तर के लिये मनुष्य के व्यवसाय, शिक्षा, आमदनी तथा उसका जीवन स्तर ये महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक आर०पी०वर्मा तथा पी०सी०सक्सैना द्वारा निर्मित किया गया है (परिशिष्ट - अ,) सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक में मनुष्य को प्रभावित करने वाले जो कारक सम्मिलित किये गये हैं वे हैं - व्यवसाय, आय की राशि, आय के स्त्रोत, मकान का आकार-प्रकार, रहने का स्थान, शिक्षा का स्तर आदि। इस परीक्षण का निर्माण व मानकीकरण वाराणसी तथा इलाहाबाद की जनसंख्या पर आधारित है।

परीक्षण प्रशासन - प्रत्येक परीक्षण पुस्तिका पर निर्देश लिखे हुए हैं जिसके अनुसार विद्यार्थी प्रश्नावली को भरते हैं। इस परीक्षण के लिये समय का कोई बन्धन नहीं है। यह परीक्षण 15-20 मिनट में छात्राएँ पूरा कर लेती है।

अंक देना - सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक में अंक सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति

सूचांक के मैन्यूअल के आधार पर दिये गये हैं।

<u>विश्वसनीयता</u> - परीक्षण निर्माताओं के अनुसार प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता परीक्षण-पुनः परीक्षण विधि द्वारा .92 है।

<u>वैधता</u> - कारक विश्लेषण विधि के द्वारा सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक की वैधता सुस्थापित की गई है।

ख. <u>शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री</u> _ शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री का निर्माण जे0पी0श्रीवास्तव तथा विमला माहेश्वरी ने शैक्षिक अभिप्रेरणा का मापन करने के लिये किया है। (परिशिष्ट - अ$_2$) शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री में कुल 58 कथन हैं। आधे कथन, अर्थात् 29 कथन सकारात्मक है जबकि शेष आधे, अर्थात् 29 कथन नकारात्मक हैं। यह कथन अभिप्रेरणा के तीन क्षेत्रों के लिये हैं जो सारणी 3.01 में दर्शाये गये हैं।

सारणी - 3.01

शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री के कथनों का क्षेत्र व संख्यानुसार वितरण

क्र.सं.	कथनों का क्षेत्र	कथनों की संख्या
1.	शैक्षिक आकांक्षा	22
2.	अध्ययन की आदत	20
3.	पाठशाला के प्रति अभिवृत्ति	16
	कुल	58

<u>परीक्षण प्रशासन</u> - शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री के लिए भी समय का कोई बन्धन नहीं है। अतः छात्राएँ 20-25 मिनट में इस उत्तर-पुस्तिका को भरकर पूरा कर लेती है। छात्राओं द्वारा उत्तर-पुस्तिकाओं के भर लेने के पश्चात उनको शीघ्र ही

एकत्रित कर लिया जाता है।

<u>शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री का अंकन</u> - प्रत्येक कथन के उत्तर के लिए पाँच बिन्दु हैं - पूर्णत: सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णत: असहमत । अत: प्रत्येक कथन के लिए 5 मान प्रदान किये जा सकते हैं। सभी सकारात्मक कथनों के लिए पूर्णत: सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णत: असहमत क्रमश: 5,4,3,2 तथा । अंक दिये जाते हैं तथा नकारात्मक कथनों को क्रमश: 1,2,3,4 तथा 5 अंक दिये जाते हैं।

<u>विश्वसनीयता</u> - इस परीक्षण की विश्वसनीयता परीक्षण-पुन: परीक्षण विधि द्वारा प्राप्त की गई है। सारणी 3.02 में शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा उसकी विभिन्न विमाओं की विश्वसनीयता प्रदर्शित की गई है।

सारणी - 3.02

शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री की परीक्षण-पुन: परीक्षण विश्वसनीयता

एन = 100

वर्ग	एक माह पश्चात सह-सम्बंध गुणांक	तीन माह पश्चात सह-सम्बंध गुणांक
शैक्षिक अभिप्रेरणा	.89	.83
अध्ययन की आदत	.84	.81
पाठशाला के प्रति अभिवृत्ति	.92	.89
शैक्षिक आकांक्षा	.89	.87

<u>वैधता</u> - शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री की वैधता विभिन्न परीक्षणों के मध्य सह-सम्बंध गुणांक ज्ञात कर निकाली गई है जिसे सारणी 3.03 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी - 3.03

शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री के विभिन्न परीक्षणों के मध्य वैधता

एन = 100

क्र. सं.	बाह्य कसौटियां जिनके मध्य वैधता प्राप्त की गई	वैधता सह-सम्बंध तथा सी.आर. की वेल्यू	सार्थकता स्तर
1.	कक्षा दस के ग्रेड	.27	.01
2.	अध्यापक के द्वारा रेटिंग	.21	.05
3.	एबर्डिन शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी	.49	.01
4.	ई.पी.पी.एस. के नीड एचिवमेंट के अंक	.29	.01
5.	पचास प्रथम भाग तथा पचास तृतीय भाग के बीच तुलना	7.65	.01

ग. <u>शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी</u> : शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी का निर्माण शोध-कर्त्री द्वारा किया गया है। शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी के द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा से सम्बंधित उत्तरदायित्व का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

<u>कथनों का संचयन तथा सम्पादन</u> - शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी में दो प्रकार के क्षेत्रों - व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तथा पाठशाला के प्रति उत्तरदायित्व - से सम्बंधित कथन हैं। प्रश्नों को तैयार करने के लिये माध्यमिक स्तर के 40 विद्यार्थियों से उत्तर-दायित्व के विषय में कुछ प्रश्न पूछे गये जो निम्नलिखित बिन्दुओं पर आधारित थे -

1. व्यक्तिगत कार्यों के सम्पादन के विषय में ।
2. विद्यालयी पढ़ाई के सम्पादन के विषय में ।
3. विद्यालय सम्बंधी क्रिया-कलापों में समय बद्धता के विषय में ।
4. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में उत्तरदायित्व के विषय में ।

5. विद्यालयी कार्यों में नेतृत्व के विषय में ।

6. गृह-कार्य को समय से पूर्ण करने के विषय में ।

छात्राओं के अतिरिक्त माध्यमिक विद्यालयों के 10 अध्यापकों से भी छात्रों के शैक्षिक उत्तरदायित्व के विषय में जानकारी प्राप्त की गई। छात्रों तथा अध्यापकों के द्वारा प्रदत्त जानकारी के आधार पर प्रश्नों को तैयार किया गया। कथनों के चयन में निम्नांकित बातों को ध्यान में रखा गया -

1. एक कथन का एक ही अर्थ हो ।

2. एक कथन में केवल एक तथा पूर्ण विचार सम्मिलित हो ।

3. कथन स्पष्ट, छोटे तथा साधारण हो ।

4. कथन में उत्तरदायित्व से सम्बंधित विशेषताएँ हो ।

इस प्रकार 70 कथन प्राप्त हुए। प्रत्येक कथन के उत्तर पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत - इन पाँच बिन्दुओं में विभाजित किया गया।

<u>शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी की प्रारम्भिक जाँच</u> - शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी के सभी कथनों को कक्षा ग्यारह के 20 विद्यार्थियों पर भाषा सम्बंधी कठिनाईयों की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रशासित किया तथा तदनुरुप भाषा सम्बंधी त्रुटियों में सुधार किया गया।

भाषा सम्बंधी त्रुटियों के निराकरणोपरान्त सभी कथनों को कुछ शिक्षाविद्‌ों तथा परीक्षण विशेषज्ञों को सुझाव हेतु प्रेषित किये गये। शिक्षाविद्‌ों तथा विशेषज्ञों के प्रस्तावों के आधार पर कथनों में पुनः सुधार करके 55 कथनों की एक सूची अनु-संधानकर्त्री द्वारा निर्मित की गई।

शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी की वास्तविक जाँच - शिक्षाविदों द्वारा संशोधित कथनों को पुनः कक्षा ग्यारह की 200 छात्राओं पर वास्तविक जाँच के लिए प्रशासित किया गया। 200 छात्राओं के द्वारा सभी कथनों से प्राप्त कुल अंकों को अवरोही क्रम में अर्थात् उच्चतम अंकों से निम्नतम अंकों की ओर क्रम में व्यवस्थित किया गया। तत्पश्चात् ऊपर के 27 प्रतिशत छात्राओं के तथा नीचे के 27 प्रतिशत छात्राओं के समूहों की तुलना के लिये टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। टी टेस्ट का प्रयोग करने पर केवल एक कथन के लिये उच्च तथा निम्न समूहों में अन्तर सार्थक नहीं था। अतः उस कथन को शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी में स्थान नहीं दिया गया। सम्बंधित आंकड़े परिशिष्ट - $ब_1$ में प्रदर्शित किये गये हैं।

इस प्रकार से शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी के अन्तिम प्रारूप में कुल 54 कथन हैं। इसे परिशिष्ट - $ब_1$ में संलग्न किया गया है।

परीक्षण प्रशासन - इस परीक्षण के लिये समय का कोई बन्धन नहीं है। प्राय : छात्राएँ लगभग 10-15 मिनट में इस परीक्षण को पूरा कर लेती है।

अंक देना - शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री के समान शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी में भी प्रत्येक कथन के उत्तर के लिए पाँच विकल्प हैं। अनुकूल कथनों का मूल्यांकन करने के लिए अधिकतम से निम्नतम अंक यथा 5.4.3.2 तथा 1 प्रदान किये गये हैं तथा प्रतिकूल कथनों के लिए 1,2,3,4 तथा 5 अंक प्रदान किये गये हैं।

शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी की विश्वसनीयता - परीक्षण-पुनः परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता का मापन किया गया है। 50 विद्यार्थियों पर एक बार परीक्षण करने के उपरान्त पुनः एक सप्ताह बाद परीक्षण किया तथा विश्वसनीयता .89 प्राप्त की थी। अतः परीक्षण विश्वसनीय कहा जा सकता है।

<u>शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी की वैधता</u> - शैक्षिक उत्तरदायित्व मापनी की वैधता का ज्ञापन करने के लिए बौद्धिक उपलब्धि उत्तरदायित्वता परीक्षण के द्वारा तुलना की गई। दोनों परीक्षणों की तुलना करने पर .82 मान प्राप्त हुआ। अतः इस परीक्षण को वैध कहा जा सकता है।

घ. <u>स्वमान मापनी</u> ÷ स्टेनली कूपर स्मिथ द्वारा निर्मित स्वमान मापनी का हिन्दी अनुशीलन शोधकर्त्री द्वारा किया गया है। जिसे परिशिष्ट - $अ_4$ में संलग्न किया गया है। स्वमान मापनी से विद्यार्थियों की अपने बारे में धारणाओं का पूर्वनुमान लगाया जा सकता है। स्वमान मापनी द्वारा चार क्षेत्रों में विद्यार्थियों के स्वमान के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। ये क्षेत्र हैं - सामान्य स्वमान, सामाजिक स्वमान, गृह स्वमान तथा विद्यालय स्वमान । मूल मापनी अंग्रेजी में है परन्तु शोध के लिये न्यादर्श में हिन्दी माध्यम की छात्राओं को लिया गया है अतः शोधकर्त्री ने हिन्दी माध्यम की छात्राओं पर प्रशासित करने के लिए इसका हिन्दी अनुशीलन किया है जो इस प्रकार है -

<u>स्वमान मापनी के कथनों का हिन्दी अनुशीलन</u> - स्वमान मापनी का हिन्दी अनुशीलन करने के लिये सर्वप्रथम इसके कथनों तथा निर्देशों का इस प्रकार से हिन्दी अनुवाद किया गया कि प्रत्येक कथन का पूर्ण अर्थ समाहित हो। प्रत्येक कथन को सावधानी से अध्ययन करने के उपरान्त ही उसका हिन्दी अनुशीलन किया गया। अनुवाद में केवल अक्षरानुसरण ही नहीं किया गया वरन् इस बात पर भी ध्यान दिया गया है कि कथनों का वास्तविक आशय या आत्मा समान रहे। कथनों का उपयुक्त हिन्दी रुपान्तरण करने के उपरान्त शिक्षाशास्त्र के कुछ विशेषज्ञों की सहायता से उसमें सुधार किया गया। इस प्रकार यह हिन्दी अनुवाद पूर्णतया कूपर स्मिथ के मौलिक अंग्रेजी रुप का उचित अनुशीलन कहा जा सकता है।

200 छात्रों द्वारा सभी कथनों पर प्राप्त कुल अंकों को अवरोही क्रम में अर्थात् उच्चतम अंकों से निम्नतम अंकों की ओर क्रम से व्यवस्थित करके ऊपर के 27 प्रतिशत छात्राओं के तथा नीचे के 27 प्रतिशत छात्राओं के समूहों की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। टी टेस्ट का प्रयोग करने पर सभी कथन .01 तथा .05 स्तर पर सार्थक थे। अतः स्वमान मापनी में सभी कथनों को स्थान दिया गया है (परिशिष्ट – $ब_2$)

<u>परीक्षण प्रशासन</u> – स्वमान मापनी में समय का कोई बन्धन नहीं है। छात्राएँ 10-15 मिनट में इस परीक्षण को पूरा कर लेती है। छात्राओं को प्रत्येक कथन के आगे "हाँ" या "नहीं" में (✓) का चिन्ह लगाना होता है।

<u>अंकन</u> – इस परीक्षण में अंक कूपर स्मिथ के स्वमान मापनी के मैन्यूअल के आधार पर ही दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के आगे "हाँ" या "नहीं" में सही (✓) का चिन्ह लगाना होता है। अंकन कुंजी की सहायता से प्रत्येक सही उत्तर को एक अंक दिया जाता है। तत्पश्चात् विभिन्न विमाओं के अनुसार अलग-अलग योग प्राप्त कर लिये जाते हैं तथा समस्त विमाओं का योग उस परीक्षण पर व्यक्ति का सम्पूर्ण अंक होता है तथा समस्त अंकों को 2 से गुणा किया जाता है।

<u>विश्वसनीयता</u> – परीक्षण-पुनः परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता का मापन करने के लिए इस परीक्षण को कक्षा ग्यारह की 20 छात्राओं पर प्रशासित किया गया। पुनः एक सप्ताह बाद प्रशासित करने पर विश्वसनीयता .85 प्राप्त की गई। स्टेनली कूपर स्मिथ के द्वारा अंग्रेजी परीक्षण की विश्वसनीयता .88 प्राप्त की गई थी।

<u>वैधता</u> – इस हिन्दी रूपान्तर का पुनः विशेषज्ञों की सहायता से आंग्ल भाषा में रूपांतरित किया गया। इस प्रकार मूल कूपर स्मिथ स्वमान मापनी को पुनः हिन्दी

से किये गये आंग्ल भाषा के अनुवाद को बीस अंग्रेजी माध्यम के कक्षा ग्यारह के विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया तथा उनमें वैधता .89 प्राप्त की गई।

इ. प्रबलन की आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण सूची - गुप्ता (1987) द्वारा रोटअर की प्रबलन की आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण बिन्दु सूची के आधार पर हिन्दी में निर्मित सूची का प्रयोग छात्राओं की आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु को जानने हेतु प्रयुक्त किया गया है। इसे परिशिष्ट - $अ_5$ में संलग्न किया गया है।

इस परीक्षण के द्वारा विद्यार्थियों के आन्तरिक तथा बाह्य नियंत्रण का अनुमान लगाया जाता है। इस नियंत्रण सूची में 28 कथन हैं। प्रत्येक प्रश्न में दो कथन दिये गये हैं। विद्यार्थियों को इन दोनों में से किसी एक के सामने ही सही का चिन्ह लगाना है। दोनों कथनों में से एक कथन व्यक्ति के आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित है तथा दूसरा कथन बाह्य नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित है।

प्रशासन - इस परीक्षण में समय का कोई बन्धन नहीं है। छात्राएँ 10-15 मिनट में परीक्षण को पूरा कर लेती है।

अंकन - प्रत्येक प्रश्न के क और ख दो कथनों में से छात्राओं को एक पर सही (✓) का चिन्ह लगाना है तथा समस्त सही कथनों को एक अंक दिया जाता है। इस प्रकार सम्पूर्ण सही कथनों के अंकों का सम्पूर्ण योग प्राप्त कर लिया जाता है।

परीक्षण की विश्वसनीयता - परीक्षण-पुनः परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता का ज्ञापन करने पर विश्वसनीयता .85 प्राप्त की गई।

वैधता - गुप्ता द्वारा परीक्षण की क्रास वैधता .84 प्राप्त की गई है।

च. शैक्षिक सम्प्राप्ति :- प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक सम्प्राप्ति से तात्पर्य छात्राओं के

द्वारा विभिन्न विद्यालयी विषयों में अर्जित ज्ञान, बोध तथा कौशल की मात्रा से है। तदनुसार कक्षा ग्यारह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति को उन के द्वारा कक्षा दस की माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित हाई स्कूल परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

प्रदत्तों का संग्रह एवं व्यवस्थापन

प्रदत्तों का संग्रह व व्यवस्थापन परिकल्पना के प्रतिपादन तथा सत्यापनीयता की जाँच में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस शोध में प्रदत्तों को उपरोक्त वर्णित उपकरणों की सहायता से संग्रहीत किया गया है।

समंकों को एकत्रित करने के लिए प्रतिदर्श में सम्मिलित माध्यमिक विद्यालयों की प्रधानाचार्या से सम्पर्क किया गया तथा उनकी अनुमति के पश्चात् सभी परीक्षणों को छात्राओं पर प्रशासित किया गया।

विभिन्न उपकरणों के माध्यम से संकलित किये गये अधिकांश तथ्य चाहे कितने ही वैध एवं उपयुक्त क्यों न हो वे अव्यवस्थित ही होते हैं। अतः इनको प्रयोजनशील एवं उपयोगी कार्य में प्रयुक्त करने से पूर्व इनको सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित किया गया है।

वास्तव में अनुसंधान कार्य में प्रायः बहुत अधिक आंकड़ों को एकत्र करना होता है। यदि इनको ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर दिया जाये तो वह आंकड़ों के ढेर के सिवाय और कोई अर्थ नहीं रखेगा। अतः यह आवश्यक है कि आंकड़ों को व्यवस्थित करके इस प्रकार प्रस्तुत किया जाय कि अध्ययन की जा रही विशेषताओं का परिचय सुगमता से हो सके। अतः इस अध्ययन में भी शोध कार्य की सुगमता के लिए छात्राओं से प्राप्त आंकड़ों को उचित प्रकार से व्यवस्थित किया गया है।

सांख्यिकी का प्रयोग -

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा टी टेस्ट एवं द्वि-मार्गीय प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट का सूत्र इस प्रकार है -

$$t = \frac{M_1 \backsim M_2}{\sigma_D}$$

जहां, M_1 तथा M_2 दोनों समूहों के मध्यमान तथा σ_D मध्यमानों में अन्तर की मानक त्रुटि है जिसे निम्न सूत्र से ज्ञात किया गया है -

$$\sigma_D = \sqrt{\frac{1^2}{N_1} + \frac{2^2}{N_2}}$$

जहां, σ_1 व σ_2 दोनों समूहों में मानक विचलन है तथा N_1 व N_2 दोनों समूहों की छात्र संख्याएँ हैं।

द्वि-मार्गीय (2×3) प्रसरण विश्लेषण हेतु निम्न सूत्रों का प्रयोग किया गया -

पंक्तियों के लिए $$F = \frac{MS_R}{MS_E}$$

स्तम्भों के लिए $$F = \frac{MS_C}{MS_E}$$

अन्तर्क्रिया के लिए $$F = \frac{MS_I}{MS_E}$$

विभिन्न MS को निम्न सूत्रों की सहायता से ज्ञात किया गया है -

$$MS_R = \frac{SS_R}{df_R} \quad ; \quad MS_C = \frac{SS_C}{df_C}$$

$$MS_I = \frac{SS_I}{df_I} \quad ; \quad MS_E = \frac{SS_E}{df_E}$$

विभिन्न SS को निम्न सूत्रों से प्राप्त किया गया है -

$$SS_T = \Sigma X^2 - \frac{(\Sigma X)^2}{N}$$

$$SS_R = \frac{(\Sigma X_{R_1})^2}{n_{R_1}} + \frac{(\Sigma X_{R_2})^2}{n_{R_2}} - \frac{(\Sigma X)^2}{N}$$

$$SS_C = \frac{(\quad X_{C_1})^2}{n_{C_1}} + \frac{(\quad X_{C_2})^2}{n_{C_2}} + \frac{(\quad X_{C_3})^2}{n_{C_3}} - \frac{(\Sigma X)^2}{N}$$

$$SS_{cells} = \frac{(\Sigma X_{cell_1})^2}{n_{cell_1}} + \frac{(\Sigma X_{cell_2})^2}{n_{cell_2}} + \ldots \frac{(\Sigma X_{cell_6})^2}{n_{cell_6}} - \frac{(\Sigma X)^2}{N}$$

$$SS_I = SS_{cells} - SS_R - SS_C$$

$$SS_E = SS_T - SS_{cells}$$

-:-:-:-:-:-

अध्याय : चतुर्थ

समंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणामों की विवेचना

अध्याय - चतुर्थ

समंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण, व्याख्या एवम् परिणामों की विवेचना

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियन्त्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति अध्ययन किया गया है। इसके लिए सर्वप्रथम सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों चयन किया गया। न्यादर्श में सम्मिलित छात्राओं में से सुविधायुक्त तथा सुविधारहित हों में छात्राओं को छाँटने के लिए सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण पर प्राप्त अंकों उपयोग किया गया है। 500 छात्राओं के न्यादर्श पर अध्याय तीन में उल्लिखित मा जिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक के उपकरण को प्रशासित किया गया तथा प्राप्त अंकों अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया गया है। इस क्रम में व्यवस्थित ऊपर की 27 प्रति- अर्थात् 135 छात्राओं को सुविधायुक्त माना गया है तथा नीचे की 27 प्रतिशत, र्त् 135 छात्राओं को सुविधारहित माना गया है। इस प्रकार सुविधायुक्त तथा वेधारहित समूहों का चयन किया गया है। तत्पश्चात् दोनों समूहों से प्राप्त समंकों विश्लेषण तथा व्याख्या की गयी तथा प्राप्त परिणामों की विवेचना इस अध्याय में तुत की गयी है।

प्रस्तुत अध्याय को दो खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में वधायुक्त एवं सुविधारहित छात्राओं की विभिन्न चरों पर तुलना की गयी है जबकि नीय खण्ड में प्रसरण विश्लेषण के परिणामों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम खण्ड

सुविधा के लिए प्रथम खण्ड को निम्नलिखित उप-खण्डों में बाँटा गया है -

क. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना।

ख. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व की तुलना।

ग. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान की तुलना।

घ. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु की तुलना।

च. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना।

उपखण्ड - क

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन करने के लिए इस उपखण्ड को शैक्षिक अभिप्रेरणा पत्री पर प्राप्त तीन विमीय प्राप्तांकों एवं सम्पूर्ण शैक्षिक अभिप्रेरणा प्राप्तांकों को दृष्टिगत रखते हुए चार भागों में विभाजित किया गया है -

क-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की अध्ययन की आदतों की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की प्रथम विमा - अध्ययन की आदतों की तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.01 में दर्शाये गये हैं।

सारणी 4.01 से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिए अध्ययन की आदतों का मध्यमान 76.08 है तथा सुविधारहित छात्राओं के लिए 64.63 है जिनकी तुलना के लिए टी का मान 13.14 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

सारणी - 4.01

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की अध्ययन की आदतों में अन्तर

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	76.08	7.037	13.14	.01
2	सुविधारहित	135	64.63	7.276		

अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की अध्ययन की आदतों में .01 स्तर पर अन्तर सार्थक है। सारणी 4.01 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित छात्राओं के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं की अध्ययन की आदतें सुविधारहित वर्ग की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ हैं।

वास्तव में विद्यार्थी का चित्त हर समय आदर्शों के द्वारा ही चालित नहीं होता। प्रायः देखा जाता है कि यदि सुविधारहित छात्राओं की दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं यथा भोजन, वस्त्र और मकान की पूर्ति सुलभ ढ़ंग से नहीं होती है तो वे शिक्षा के प्रति उदासीन हो जाते हैं। सुविधारहित छात्राओं की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उनमें अध्ययन की आदत निम्न होती है। इसके विपरीत सुविधायुक्त समूह को सभी प्रकार की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था का प्रावधान होने से अध्ययन की आदत अधिक श्रेष्ठ होती है। तिवारी (1979) ने भी सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिप्रेरणा को अधिक श्रेष्ठ नहीं प्राप्त किया है।

क-2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा की द्वितीय विमा - विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति - की तुलना सारणी 4.02 में व्यक्त की गई है।

सारणी - 4.02

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की
विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति की तुलना

क्0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	62.34	7.61	4.16	.01
2	सुविधारहित	135	58.68	6.83		

सारणी 4.02 से स्पष्ट होता है कि पाठशाला के प्रति अभिवृत्ति चर पर सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान 62.34 प्राप्त हुआ है तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 58.68 प्राप्त हुआ, जिनकी तुलना के लिए टी का मान 4.16 प्राप्त हुआ। स्पष्ट है कि यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। सारणी 4.02 से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त छात्राएँ सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा विद्यालय के प्रति अभि- वृत्ति चर पर श्रेष्ठ है।

विद्यालयों में प्रायः सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों के व्यवहार में भी भिन्नता दिखाई देती है जिसका कारण उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर का अधिक या कम होना है। इसका प्रभाव उनके विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति पर भी पड़ता

है। जिस कार्य को करने से बालक को सन्तोष या सुख की अनुभूति होती है, बालक उसी कार्य को करता है। विद्यालय जाने पर अन्य सहपाठियों तथा अध्यापकों द्वारा उचित व्यवहार के न प्राप्त होने पर सुविधारहित बालक बीच में भी पढ़ाई छोड़ देते हैं।

सुविधायुक्त छात्राएँ सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा पाठशाला के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं। चिटनिस (1977) ने इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया था कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की उपस्थिति विद्यालय में बहुत कम रहती है तथा वे बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। अनेक अमरीकी अध्ययनों द्वारा भी यह परिणाम प्राप्त किया गया है कि काले बच्चों की अपेक्षा गोरे बालकों का पाठशाला के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है। जोन्स (1972) ने भी अपने अध्ययन में यह देखा कि सुविधारहित विधार्थियों का पाठशाला की ओर दृष्टिकोण निम्न है। डिसेको (1968) ने भी अपने शोध में यह प्राप्त किया कि मध्यम वर्ग के बालकों को पाठशाला में समायोजित होने में कठिनाई होती है। इन अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सुविधारहित छात्राओं की तुलना में सुविधायुक्त छात्राओं का पाठशाला की ओर दृष्टिकोण अधिक होना स्वाभाविक ही है।

क-3. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा में तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा चर की तृतीय विमा - शैक्षिक आकांक्षा - की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.03 में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी 4.03 से विदित होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिए शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान 80.34 है तथा सुविधारहित छात्राओं का 65.47 है जिसकी

तुलना करने पर टी का मान 13.05 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है। स्पष्ट है कि शैक्षिक आकांक्षा चर पर सुविधायुक्त एवं सुविधारहित छात्राओं के मध्यमानों का अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधा-युक्त छात्राओं में शैक्षिक आकांक्षा सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है क्योंकि सुविधायुक्त समूहों का मध्यमान सुविधारहित समूहों की छात्राओं के मध्यमान से अधिक है।

सारणी - 4.03

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	80.34	9.45	13.05	.01
2	सुविधारहित	135	65.47	9.27		

उपरोक्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि छात्राओं के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से उनकी शैक्षिक आकांक्षा भी विशेष रूप से प्रभावित होती है।

रथ (1972) ने भी अपने अध्ययन में विद्यालय जाने वाले सुविधारहित बालकों तथा उनके माता-पिता में भी निम्न आकांक्षा को प्राप्त किया। रथ (1973) ने अपने एक अन्य शोध में देखा कि निम्न स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा की कमी थी। सिन्हा (1969) ने भी अपने शोध में यह परिणाम देखा कि जमीन, मकान और आमदनी आदि के विषय में कम विकासशील गाँवों के किसानों की अपेक्षा अधिक विकासशील गाँवों के किसानों में अधिक शैक्षिक आकांक्षा थी। डेविट (1966), मॉय (1969), स्मिथ (1972) ने भी यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधायुक्त विद्या-

र्थियों की अपेक्षा सुविधारहित विद्यार्थियों में शैक्षिक आकांक्षा कम थी। मिश्रा तथा त्रिपाठी (1978) ने भी यह देखा कि अधिक सुविधारहित समूहों में मध्यम सुविधा-रहित समूहों की तुलना में शैक्षिक आकांक्षा की कमी थी। सिंह (1975) ने भी राजस्थान के निम्न जाति के सुविधारहित विद्यार्थियों का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि इन छात्रों की पढ़ाई के प्रति आकांक्षा निम्न थी। अतः कहा जा सकता है कि सुविधारहित समूह में सुविधायुक्त समूह की तुलना में शैक्षिक आकांक्षा कम हो सकती है।

क-4. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण शैक्षिक अभिप्रेरणा में तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की सम्पूर्ण शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.04 में इस प्रकार व्यक्त किये गये हैं।

सारणी - 4.04

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की सम्पूर्ण शैक्षिक अभिप्रेरणा की तुलना

क्रमसं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	218.77	16.98	14.68	.01
2	सुविधारहित	135	188.79	16.58		

सारणी 4.04 से स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान 218.77 प्राप्त हुआ है और सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 188.79 प्राप्त हुआ जिनकी तुलना टी टेस्ट की सहायता से की गई है जो

.01 स्तर पर सार्थक है। सारणी 4.04 के देखने से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का मध्यमान सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधारहित छात्राओं की कुल शैक्षिक अभिप्रेरणा सुविधायुक्त छात्राओं की तुलना में कम है।

उपरोक्त परिणामों से यह विदित होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के अधिक या कम होने में भी सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता ही मुख्य कारण है। प्रायः दिखाई भी देता है कि सुसंस्कृत एवं समृद्ध सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों में निम्न स्थिति वालों की तुलना में अधिक शैक्षिक अभिप्रेरणा होती है। अनुसूचित जाति, जन-जाति तथा उच्च जाति के छात्रों की अभिप्रेरणा की तुलना करने पर रथ, दास और दास (1970), सिन्हा (1976) तथा त्रिपाठी और मिश्रा (1975) ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया कि उच्च जाति के विद्यार्थियों में अधिक अभिप्रेरणा थी। सिन्हा (1977) ने भी सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का अध्ययन करने पर सुविधारहित समूहों में अभिप्रेरणा कम प्राप्त की। एरिक्सन (1965) ने भी अपने अनुसंधान में यह परिणाम प्राप्त किया कि माता-पिता की प्रत्याशा का बालकों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में पर्याप्त सम्बंध है।

अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा सुविधारहित समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक होना तर्कसंगत ही है।

उपखण्ड -ख

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व का अध्ययन करने के लिए इस उपखण्ड को शैक्षिक उत्तरदायित्व की विमाओं को दृष्टिगत रखते हुए

तीन भागों में बाँटा गया है -

ख-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणामों को सारणी 4.05 में व्यक्त किया गया है।

सारणी - 4.05

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की
स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	108.74	10.40	8.15	.01
2	सुविधारहित	135	87.00	13.77		

सारणी 4.05 से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिए स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व का मध्यमान 108.74 है तथा सुविधारहित छात्राओं के लिए मध्यमान 87.00 है जिनकी तुलना टी टेस्ट द्वारा की गयी। टी टेस्ट का मान 8.15 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है। सारणी देखने से स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राएँ स्वयं के प्रति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक जिम्मेदार हैं। सारणी 4.05 से यह भी स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित छात्राओं के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि

सुविधायुक्त वर्ग की छात्राएँ स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व चर पर सुविधारहित छात्राओं की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा की तरह शैक्षिक उत्तरदायित्व चर पर भी सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का प्रभाव पड़ता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों को गृह से ही (जो कि बालक की प्रथम पाठशाला है) सद्गुणों, अच्छी आदतों तथा आदर्शों के अनुकरण की प्रेरणा मिलती है। इससे उनमें स्वयं के प्रति उत्तर-दायित्व की भावना का विकास हो जाता है। ब्राउन (1983) ने अपने शोध में यह परिणाम प्राप्त किया कि यदि विद्यार्थी प्रौढ़ों के हस्तक्षेप के बिना ही समस्याओं का समाधान निकाल लेते हैं तो उनमें उत्तरदायित्व की भावना बलवती होती है। अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही स्वयं के प्रति उत्तरदायी बनाना आवश्यक है।

ख-2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं में विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं में विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.06 में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी 4.06 से प्राप्त परिणामों के आधार पर सुविधायुक्त छात्राओं का विद्यालयी उत्तरदायित्व का मध्यमान 113.25 प्राप्त हुआ तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 88.68 प्राप्त हुआ जिसके लिए टी मान 9.10 प्राप्त हुआ, जो .01 स्तर पर सार्थक है। स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व चर पर

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं की विद्यालयी कार्यों में जिम्मेदारी की भावना सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

सारणी - 4.06

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की
पाठशाला के प्रति उत्तरदायित्व की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	113.25	12.61	9.10	.01
2	सुविधारहित	135	88.68	12.41		

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्तता व सुविधा-रहितता का पाठशाला के प्रति उत्तरदायित्व पर भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवार प्रारम्भ से ही बालकों को शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण की शिक्षा देते हैं जिसके कारण उनमें हतोत्साहित होने की भावना जन्म लेती है। इसके विपरीत उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर उनके भावी जीवन में उन्नति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है जिसके कारण उन बालकों में विद्यालयों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। कोल्डवेल (1970) के अध्ययन से स्पष्ट है कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चे अपने को असंतुष्ट वातावरण में पाते हैं जिससे इनका कार्य बहुत ही असंतोषजनक होता है। इससे स्पष्ट होता है कि परि-वार के कारण बच्चों में शिक्षा के प्रति भी उत्तरदायित्व की भावना आती है। बुकाक (1972) ने भी अपने शोध में यह परिणाम प्राप्त किया कि बच्चों की सामा-

जिक-आर्थिक स्तर के कारण परिवार की विशेषताएँ प्रभावित होती है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव बालकों के विद्यालयी कार्य-कलापों पर भी पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रति उत्तरदायित्व की भावना के अधिक या कम होने में भी सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता मुख्य कारक हैं।

ख-3. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण शैक्षिक उत्तरदायित्व की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण शैक्षिक उत्तरदायित्व की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.07 में दर्शाये गये हैं।

सारणी - 4.07

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण शैक्षिक उत्तरदायित्व की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	222.00	1.76	8.88	.01
2	सुविधारहित	135	175.68	1.98		

सारणी 4.07 से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं का शैक्षिक उत्तरदायित्व का मध्यमान 222.00 है तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 175.68 है जिसका टी का मान 8.88 प्राप्त हुआ, जो .01 स्तर पर सार्थक है। स्पष्ट है कि दोनों वर्ग की छात्राएँ शैक्षिक उत्तरदायित्व चर पर सार्थक अन्तर

रखती हैं। सारणी 4.07 से यह भी स्पष्ट है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित वर्ग की छात्राओं से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं में शैक्षिक उत्तरदायित्व सुविधारहित छात्राओं की तुलना में अधिक है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह ज्ञात होता है कि बालकों के सुविधा-युक्त तथा सुविधारहित होने से उनकी सम्पूर्ण शैक्षिक उत्तरदायित्व सार्थक रूप से प्रभावित होती है। विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्तरदायित्व पर घर की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बहुत प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों में निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों की तुलना में शैक्षिक उत्तर-दायित्व उच्च होता है। अतः घर का वातावरण शैक्षिक उत्तरदायित्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परिवार में सभी प्रकार की सुविधाओं के होने से उनमें शैक्षिक उत्तरदायित्व उच्च होता है। कोहन (1969) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि निम्न परिवार के बच्चे वातावरण के अनुसार ही अपने को ढालने लगते हैं तथा अपने को अच्छे या बुरे कार्यों में लगाने लगते हैं। अतः ये बच्चे लोगों के बीच मिश्रित नहीं हो पाते और अलगाव महसूस करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वातावरण के ठीक न होने के कारण उनका मानसिक विकास अच्छी तरह नहीं हो पाता और उनमें शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित नहीं हो पाती है।

जैचाव, क्रिस्टिएन्शन और राश (1975) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों को अनुभवों को प्राप्त करने में कठिनाई होती है और उनका प्रारम्भिक विकास उचित प्रकार का नहीं होता। अतः स्पष्ट होता है कि परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर के कारण

ही उनकी शैक्षिक उत्तरदायित्व पूर्ण रूप से प्रभावित होती है।

उपखण्ड - ग

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान का अध्ययन करने के लिए प्रस्तुत उपखण्ड को पाँच भागों में विभाजित किया गया है -

ग-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सामान्य स्वमान की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की सामान्य स्वमान में तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.08 में व्यक्त किए गए हैं।

सारणी - 4.08

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सामान्य स्वमान की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	17.81	3.25	6.75	.01
2	सुविधारहित	135	14.61	3.77		

सारणी 4.08 से स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं का सामान्य स्वमान का मध्यमान 17.81 तथा सुविधारहित छात्राओं का 14.61 है जिसकी तुलना के लिए टी का मान 6.75 प्राप्त हुआ है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। सारणी 4.08 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित

छात्राओं के मध्यमान से अधिक है। स्पष्ट है कि सुविधायुक्त छात्राओं का सामान्य स्वमान सुविधारहित छात्राओं की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है।

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से उनका सामान्य स्वमान भी प्रभावित होता है। विद्यार्थियों के सामान्य स्वमान के विकास में परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रमुख योगदान है। उच्च या निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का छात्राओं के ऊपर प्रभाव पड़ता है तथा वे अपने बारे में उच्च स्तरीय या निम्न स्तरीय भावना विकसित कर लेती हैं। इस प्रकार व्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से अपने बारे में उच्च या निम्न विचार बना लेता है।

ग-2. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सामाजिक स्वमान की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सामाजिक स्वमान की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.09 में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी - 4.09

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सामाजिक स्वमान की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	5.26	1.44	4.21	.01
2	सुविधारहित	135	4.52	1.45		

सारणी 4.09 से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिए सामाजिक

स्वमान का मध्यमान 5.26 है जबकि सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 4.52 है जिसकी तुलना के लिए टी का मान 4.21 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सामाजिक स्वमान में .01 स्तर पर अन्तर सार्थक है। सारणी 4.09 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित छात्राओं के मध्यमान से अधिक है।

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से उनमें सामाजिक स्वमान की भावना भी उच्च या निम्न होती है। सम्भवतः इसका कारण परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति है, क्योंकि परिवार अपने आदर्शों, नियमों, परिपाटियों, आशाओं तथा विचारों को अपने आगे आने वाली पीढ़ी में हस्तान्तिरित करता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के परिवार उच्च सामाजिक आदर्शों को तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के परिवार निम्न सामाजिक स्वमान को विकसित करते हैं। बालक जिस सामाजिक संस्था का सदस्य होता है उसका प्रभाव उसके सामाजिक स्वमान पर अवश्य पड़ता है।

ग-3. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के गृह स्वमान की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के गृह स्वमान में तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.10 में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी 4.10 से ज्ञात होता है कि गृह स्वमान चर पर सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान 5.09 है तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 4.44 है। इन दोनों मध्यमानों की तुलना के लिए टी का मान 4.20 प्राप्त हुआ है,

जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि दोनों वर्गों की छात्राऐं गृह स्वमान में विभिन्नता रखती हैं और इनका अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। सारणी 4.10 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं का गृह स्वमान सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

सारणी - 4.10

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के गृह स्वमान की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	5.09	1.09	4.20	.01
2	सुविधारहित	135	4.44	1.42		

काज्डेन (1976) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि विद्यार्थियों की रहन-सहन की स्थिति के कमजोर होने पर तथा निर्धनता के कारण विद्यार्थी अपने आप में असुरक्षित तथा हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। ब्रेकेरोज तथा वीन्सेंट (1966) ने भी अपने अध्ययन में यह देखा कि विद्यार्थियों के हीन स्तर में बहुत सारी बातें सम्मिलित हैं जैसे, मकान की खराब स्थिति, भोजन का पर्याप्त न मिलना आदि। जो विद्यार्थी निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से आते हैं वे अपने आप असुरक्षित महसूस करते हैं।

इन्लो (1970) ने भी अपने अध्ययन में सुविधारहित विद्यार्थियों में यह प्राप्त किया कि घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण विद्यार्थियों में अपने विषय में निम्न धारणा होती है। लीविस (1966) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम

प्राप्त किया कि निर्धनता के कारण विद्यार्थी हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं। डी बोर्ड (1969) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि घर के वातावरण का नीग्रो तथा सुविधारहित विद्यार्थियों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

अतः इन समस्त अध्ययनों के आधार पर तथा प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा भी यह कहा जा सकता है कि गृह सुविधाओं की उपयुक्तता तथा अनुपयुक्तता का विद्यार्थियों के गृह स्वमान पर बहुत असर पड़ता है।

ग-4. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के विद्यालयी स्वमान की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूह की छात्राओं के विद्यालयी स्वमान की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणामों को सारणी 4.11 में दर्शाया गया है।

सारणी - 4.11

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के विद्यालयी स्वमान की तुलना

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	6.00	1.88	4.09	.01
2	सुविधारहित	135	5.29	1.63		

सारणी 4.11 से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयी स्वमान में सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान 6.00 है तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 5.29 है। इन दोनों मध्यमानों की तुलना के लिए टी का मान 4.09 प्राप्त हुआ है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों वर्गों की छात्राएँ विद्यालयी

स्वमान में सार्थक रुप से भिन्न है क्योंकि सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित छात्राओं के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं में विद्यालयी स्वमान सुविधारहित वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से उनका विद्यालयी स्वमान उच्च या निम्न हो सकता है। इसका भी एक सम्भावित कारण उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अधिक या कम होना हो सकता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के माता-पिता बालकों में शिक्षा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के माता-पिता से उन्हें शिक्षा के प्रति उचित मार्ग-दर्शन न मिलने से उनमें कुंठा घर कर जाती है जिसके कारण उनमें विद्यालय के प्रति निम्न स्वमान होता है। विल्लर (1970) ने भी अपने अध्ययन में सुविधारहित विद्यार्थियों में स्वमान को इसी प्रकार प्राप्त किया कि सुविधारहित विद्यार्थी विद्यालय में कुशलता प्राप्त नहीं करते हैं। कोवन, अल्टमान तथा प्वाइश (1978) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि जिन छात्राओं में स्वमान अधिक है उन्होंने विद्यालय में अधिक सफलता प्राप्त की। अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त छात्राओं का विद्यालयों के प्रति उच्च विचार होता है तथा सुविधारहित छात्राओं का विद्यालयों के प्रति निम्न विचार होता है।

ग-5. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण स्वमान की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण स्वमान में तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणामों को सारणी 4.12 में व्यक्त किया गया है।

सारणी - 4.12

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्पूर्ण स्वमान की तुलना

क्0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	68.35	9.81	7.86	.01
2	सुविधारहित	135	57.52	12.46		

सारणी 4.12 से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण स्वमान चर पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 68.35 और 57.52 है। इन दोनों मध्यमानों की तुलना के लिए टी का मान 7.86 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों वर्गों की छात्राएँ स्वमान चर पर .01 स्तर पर भिन्नता रखती हैं। सारणी 4.12 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित छात्राओं के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं का सम्पूर्ण स्वमान सुविधारहित वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण स्वमान चर पर छात्राओं की सुविधायुक्तता तथा सुविधारहितता का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इनमें भी मुख्य कारण उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उच्च या निम्न होना है। हावेल (1979) ने भी सुविधारहित समूह के बच्चों में निम्न स्तरीय स्वमान को प्राप्त किया है।

व्हाइटमैन ड्यूटस्च (1967) ने सुविधारहित और स्वमान के सम्बंधों का अध्ययन करते समय प्राप्त किया कि अधिक सुविधारहित बच्चों में स्वमान निम्न

था। त्रिपाठी तथा मिश्रा (1980) ने भी यह देखा है कि सुविधारहितता तथा स्वमान में नकारात्मक सह-सम्बंध है। हैसन (1977) ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया कि अनुसूचित जाति तथा जन-जाति के बच्चों की अपने बारे में निम्न धारणा थी। अतः इन अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधारहित वर्ग की छात्राओं में स्वमान निम्न होता है।

उपखण्ड - घ

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु चर की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु चर का अध्ययन करने हेतु टी टेस्ट का प्रयोग किया गया जिसके परिणाम सारणी 4.13 में प्रस्तुत है।

सारणी - 4.13

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु चर पर अन्तर

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	7.42	2.44	12.50	.01
2	सुविधारहित	135	11.12	2.42		

सारणी 4.13 से ज्ञात होता है कि नियंत्रण के बिन्दु चर पर सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान 7.42 है तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 11.12 है। इन दोनों मध्यमानों की तुलना के लिए टी का मान 12.50 है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। स्पष्ट है कि दोनों वर्गों की छात्राओं में विभिन्नता है तथा यह विभि-

न्नता .01 स्तर पर सार्थक है। नियंत्रण के बिन्दु चर पर मध्यमान का अधिक होना इस बात को इंगित करता है कि नियंत्रण का बिन्दु बाह्य है। इसके विपरीत नियंत्रण में बिन्दु चर पर मध्यमान का कम होना इस बात का द्योतक है कि नियंत्रण का बिन्दु आन्तरिक है।

सुविधारहित वर्ग की छात्राओं का मध्यमान सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं से अधिक होने से स्पष्ट है कि सुविधारहित छात्राओं का नियंत्रण बिन्दु बाह्य है। अर्थात् सुविधारहित छात्राएँ अपने का बाह्य नियंत्रण के बिन्दु द्वारा नियंत्रित मानती हैं। सुविधायुक्त वर्ग की छात्राओं का मध्यमान कम है जिससे स्पष्ट होता है कि ये अपने को आन्तरिक रुप से नियन्त्रित मानती हैं। ये छात्राएँ कार्य की सफलता या असफलता के लिए अपने को उत्तरदायी मानती हैं। अनेक अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालते हैं। जैसे मैक्घीऔर कैन्डिल (1968), हैरिसन (1968), गो (1971), ब्राउन स्ट्रीकलैंड (1972) तथा गोजाली आदि (1973) ने अध्ययनों के दारा यह भी देखा कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का भी बच्चों के नियंत्रण के बिन्दु पर बहुत प्रभाव पड़ता है। निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों में अपने प्रति गैर जिम्मेदारी की भावना होती है। मार्टिन (1976) ने अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि रेड इंडियन तथा काकेसिया के विद्यार्थियों में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु का स्वमान के साथ धनात्मक सह-सम्बंध था।

बैट्टिल तथा रोट्टर (1963), फ्रैंक्लिन (1963), शॉ और उही (1971), स्टीफैन्स तथा डिलेस (1973) ने भी अपने अध्ययनों में यह परिणाम प्राप्त किया कि सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से कम स्तर वाले बच्चों पर पुरस्कार आदि बाह्य कारकों का बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधारहित वर्ग की

छात्राएँ बाह्य कारणों को अपनी सफलता या असफलता के लिए उत्तरदायी मानती हैं परन्तु उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर को ऊँचा करके तथा विद्यालय में तरह-तरह से अपने को ही नियंत्रित करने की भावना को विकसित करके छात्राओं को आन्तरिक रुप से नियंत्रित बनाया जा सकता है।

उपखण्ड - च

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति को देखने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम सारणी 4.14 में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी - 4.14

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर

क्र०सं०	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	सुविधायुक्त	135	332.62	33.7	22.51	.01
2	सुविधारहित	135	236.14	36.58		

सारणी 4.14 से ज्ञातव्य है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति चर पर सुविधायुक्त समूहों की छात्राओं का मध्यमान 332.62 है तथा सुविधारहित छात्राओं का मध्यमान 236.14 है। उपर्युक्त दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना के लिए टी का मान 22.51 प्राप्त हुआ है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि इन दोनों समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। सारणी 4.14 से स्पष्ट है कि

सुविधायुक्त छात्राओं का मध्यमान सुविधारहित समूह की छात्राओं के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं में शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है।

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित होने से उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रभावित होती है। परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उनकी शिक्षा पर व्यापक प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक या कम हो जाती है। जैसा सारणी 4.14 से भी स्पष्ट होता है कि अधिक सुविधा मिलने से उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति विकसित हो गई तथा सुविधारहित होने से उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति भी कम हो गई।

ऊषाश्री (1980) ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया कि सुविधा-रहित बच्चों ने सुविधायुक्त बच्चों की अपेक्षा कम अंक प्राप्त किये। दास और पाण्डे (1977) तथा रथ (1979) ने भी यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधायुक्त समूह के बच्चों ने सुविधारहित समूह की अपेक्षा अधिक अच्छे अंक प्राप्त किये। खत्री (1966) ने भी देखा कि अनाथ लड़कियों की अपेक्षा सनाथ (जिनके माता-पिता दोनों ही जीवित हो) लड़कियों ने पढ़ाई लिखाई में अच्छे अंक प्राप्त किये।

चोपड़ा (1969) ने भी इसी प्रकार का अध्ययन सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों में किया तथा यह परिणाम पाया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बच्चों ने मध्यम तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर की अपेक्षा उच्च अंक प्राप्त किये।

घनश्याम (1975) द्वारा सामाजिक-आर्थिक स्तर का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति शैक्षिक सम्प्राप्ति से सकारात्मक रूप से सम्बंधित है।

अतः उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर तथा प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा भी यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी बच्चों की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधायुक्त तथा सुविधारहित कारण से सम्बंधित होती है।

द्वितीय खण्ड

xxxxxxxxx

प्रस्तुत खण्ड में शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान तथा नियंत्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया गया है। इसके लिए द्वि-मार्गीय प्रसरण विश्लेषण विधि का प्रयोग करके समंकों का विश्लेषण किया गया है। सुविधा के लिए इस खण्ड को निम्नलिखित उपखण्डों में विभक्त किया गया है -

क. शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।

ख. शैक्षिक उत्तरदायित्वता के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधा-रहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।

ग. स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।

घ. नियंत्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन।

उपखण्ड - क

शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन -

शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के अध्ययन के लिए शोधकर्त्री ने सर्वप्रथम छात्राओं की

शैक्षिक अभिप्रेरणा के आधार पर उच्च अभिप्रेरित, मध्यम अभिप्रेरित तथा निम्न अभिप्रेरित स्तरों में विभक्त किया। इसके लिये सुविधायुक्त व सुविधारहित छात्राओं को अलग-अलग उनके कुल अभिप्रेरणा प्राप्तांकों के आधार पर आरोहीक्रम में व्यवस्थित किया। इस क्रम में ऊपर स्थित एक तिहाई छात्राओं को उच्च अभिप्रेरित समूह, बीच के एक तिहाई को मध्यम अभिप्रेरित समूह तथा नीचे के एक तिहाई को निम्न अभिप्रेरित समूह के रूप में निर्धारित किया गया। इस प्रकार के कुल छः उपसमूह (तीन उपसमूह सुविधायुक्त छात्राओं के तथा तीन उपसमूह सुविधारहित छात्राओं के) बनाये गये जिनमें प्रत्येक समूह में 45-45 छात्राएँ थी। तत्पश्चात् अभिप्रेरणा के इन तीनों स्तरों वाले समूहों की सुविधायुक्त व सुविधारहित छात्राओं के सम्प्राप्ति अंकों के मध्यमान ज्ञात किये गये, जिन्हें सारणी 4.15 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी - 4.15

शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमान

क्र. सं.	समूह	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं का मध्यमान	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं का मध्यमान	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं का मध्यमान	सम्पूर्ण समूह का मध्यमान
1	सुविधायुक्त	369.366	333.466	295.033	332.621
2	सुविधारहित	263.722	242.844	201.877	236.147
सम्पूर्ण समूह		316.544	288.155	248.455	284.384

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं एवं उच्च, मध्यम तथा निम्न

अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करने के लिए 2×3 प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण के परिणाम सारणी 4.16 में दिये गये हैं।

सारणी - 4.16

शैक्षिक सम्प्राप्ति प्राप्तांकों के लिए 2×3 प्रसरण विश्लेषण से प्राप्त परिणाम

स्त्रोत	डी.एफ	एस.एस.	एम.एस.	एफ.मान	सार्थकता स्तर
सुविधायुक्तता/ सुविधारहितता	1	628239.16	628239.16	1393.60	0.01
अभिप्रेरणा स्तर	2	210147.11	105073.55	233.08	0.01
अर्न्तक्रिया	2	3016.67	1508.33	3.34	0.05
त्रुटि	264	119012.97	450.80		

क-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सारणी 4.16 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 1393.60 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति .01 स्तर पर सार्थक रूप से भिन्न है। सारणी 4.15 से स्पष्ट है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए सुविधा-युक्त समूह का मध्यमान 332.621 है जबकि सुविधारहित समूह के लिए मध्यमान 236.147 है। अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राएँ सुविधारहित समूह

की तुलना में अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखती हैं।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक है। सिंह (1976) ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया। सत्यानन्दम् (1969) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होने से बच्चों की शैक्षिक सम्प्राप्ति भी प्रभावित होती है। ब्लूम आदि (1965), व्हाइटमैन और ड्यूटस्च (1967) तथा मिलर (1971) ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया। अतः स्पष्ट होता है कि परिवार के सामाजिक-आर्थिक परिवेश से उसकी शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रभावित होती है।

क-2. <u>उच्च अभिप्रेरित, मध्यम अभिप्रेरित तथा निम्न अभिप्रेरित समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना</u>

सारणी 4.16 से स्पष्ट है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के तीन समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 233.08 प्राप्त हुआ है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्च अभिप्रेरित, मध्यम अभिप्रेरित तथा निम्न अभिप्रेरित समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है। इसके पश्चात् उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं, मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं तथा निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। इससे सम्बंधित परिणाम आगे की सारणियों में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी 4.17 से स्पष्ट है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 316.5[illegible] है तथा मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 288.155 है तथा इन दोनों की तुलना के लिए टी

का मान 3.488 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है। स्पष्ट है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.17

उच्च अभिप्रेरित तथा मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	316.544	59.39	3.488	.01
2	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	288.155	49.32		

सारणी - 4.18

उच्च अभिप्रेरित तथा निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	316.544	59.39	8.344	.01
2	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	248.455	49.65		

सारणी 4.18 से ज्ञात होता है कि उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक

सम्प्राप्ति का मध्यमान 316.544 है तथा निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं का मध्यमान 248.455 है तथा टी का मान 8.344 है। स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। दोनों समूहों के मध्यमानों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं से अधिक है क्योंकि उनका मध्यमान निम्न वर्ग की अपेक्षा अधिक है।

सारणी - 4.19

मध्यम अभिप्रेरित तथा निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र0 सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	288.155	49.326	5.38	.01
2	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	248.455	49.65		

सारणी 4.19 से यह विदित होता है कि मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं का मध्यमान 288.155 है तथा निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं का मध्यमान 248.455 है तथा टी का मान 5.38 प्राप्त हुआ। अतः स्पष्ट है कि दोनों ही समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अंतर है। सारणी 4.19 से यह भी स्पष्ट होता है कि मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभि-प्रेरित समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं

की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम तथा निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है तथा मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं के अधिक अभिप्रेरित होने से उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति भी प्रभावित होती है, चाहे वह सुविधायुक्त समूह की हो अथवा सुविधारहित, उनमें अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण योगदान है। सामान्य रूप से हम देखते हैं कि मनुष्य के सारे कार्य और व्यवहार अभिप्रेरणा द्वारा ही चालित होते हैं। अतः स्पष्ट है कि मानव व्यवहार के मूल में प्रेरक वृत्ति विद्यमान रहती है जिससे प्रेरित होकर ही मनुष्य कार्य करता है। शर्मा (1981) ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरस्कार देने पर सुविधारहित बालकों ने भी अच्छा कार्य किया। रथ (1973) ने भी पाया कि निम्न अभिप्रेरणा के मिलने पर सुविधारहित बालक अधिगम में मन्द हो जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं के शैक्षिक अभिप्रेरणा के अधिक होने से उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक होगी तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यम होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति कम होगी, इसका कारण यह प्रतीत होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को सीखने की क्रियाओं में प्रोत्साहन देती है।

क-3. <u>शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिए सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर्क्रिया</u>

सारणी 4.16 से स्पष्ट है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिए सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा कारकों की अन्तर्क्रिया के लिए एफ का मान 3.54 प्राप्त हुआ है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिए शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति का

स्वरुप सुविधारहित छात्राओं के लिए शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति के स्वरुप से भिन्न है। अतः स्पष्ट है कि .05 स्तर पर दोनों कारक अन्र्तक्रिया कर रहे हैं। अन्र्तक्रिया की प्रकृत्ति को स्पष्ट करने के लिए सुविधायुक्त समूह तथा सुविधारहित समूहों के लिए विभिन्न अभिप्रेरणा स्तरों के लिए शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमानों को रेखाचित्र -1 के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 4.15 के अवलोकन से स्पष्ट है कि यद्यपि सुविधायुक्त तथा सुविधा-रहित दोनों ही प्रकार की छात्राओं के लिए अभिप्रेरणा में कमी के साथ-साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति में भी कमी आ रही है परन्तु उच्च अभिप्रेरित व मध्यम अभिप्रेरित सुविधा-युक्त छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (369.366 - 333.466 = 35.9) उच्च अभिप्रेरित व मध्यम अभिप्रेरित सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों में अन्तर (263.722 - 242.844 = 20.878) की तुलना में अधिक है। इसके विपरीत मध्यम अभिप्रेरित व निम्न अभिप्रेरित सुविधा-युक्त छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (333.466 - 295.033 = 38.433) मध्यम अभिप्रेरित व निम्न अभिप्रेरित सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों के अन्तर (242.844 - 201.877 = 40.967) की तुलना में कम है। यह तथ्य अन्र्तक्रिया रेखाचित्र -1 से भी स्पष्ट है।

क-4. सुविधायुक्त समूह में शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

प्रस्तुत उपखण्ड में सुविधायुक्त समूह में विभिन्न शैक्षिक अभिप्रेरणा स्तरों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से तुलना की गई है इससे सम्बंधित परिणाम आगे प्रस्तुत की गई सारणियों में दर्शाये गये हैं।
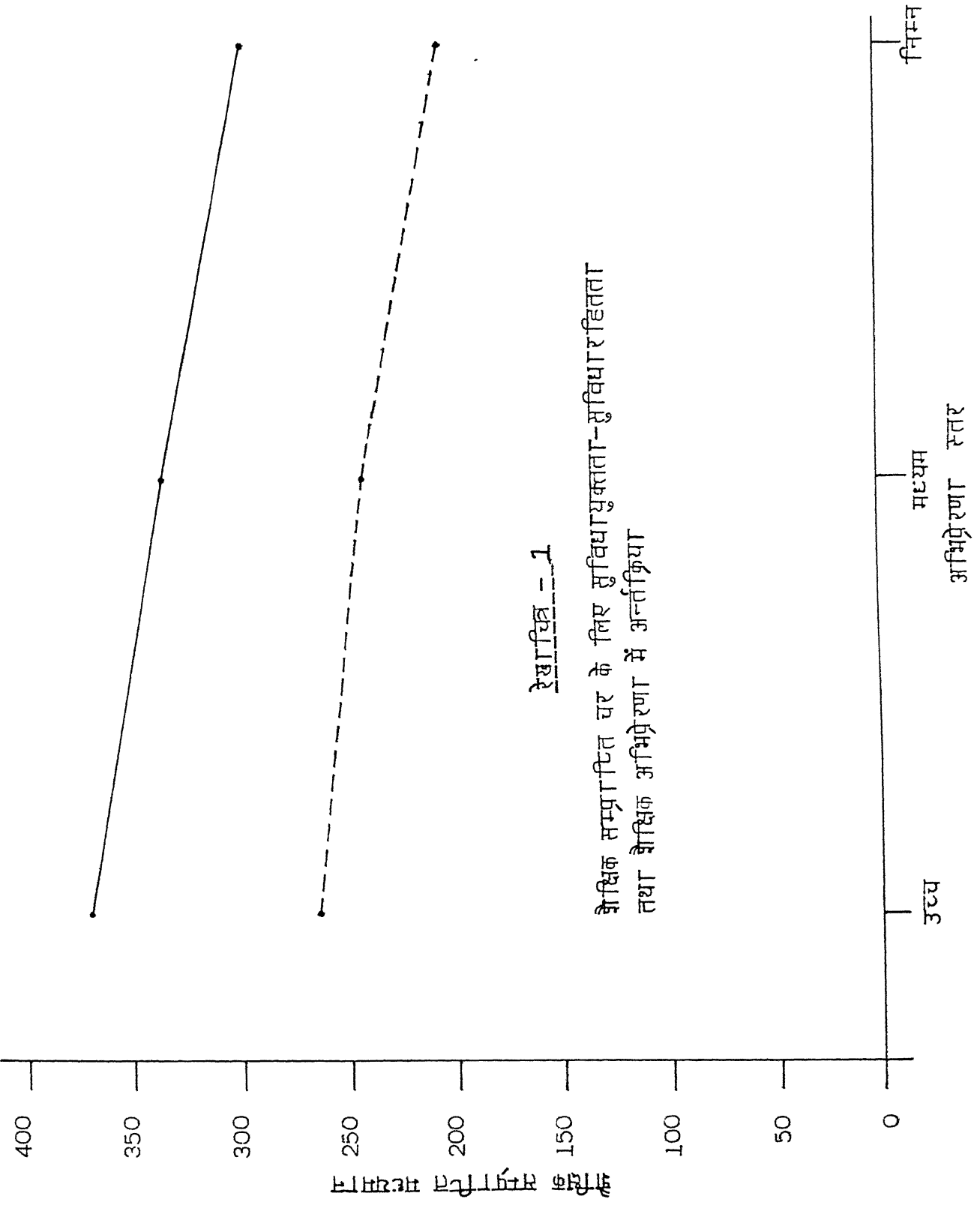
रेखाचित्र - 1

शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिए सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर्क्रिया

सारणी - 4.20

सुविधायुक्त समूह की उच्च अभिप्रेरित तथा मध्यम अभि-
प्रेरित समूहों छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	369.366	16.983	10.778	.01
2	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	333.466	14.518		

सारणी 4.20 में सुविधायुक्त समूह की उच्च अभिप्रेरित छात्राओं तथा मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की तुलना करने के उपरान्त यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि दोनों ही समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में पर्याप्त अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। मध्यमानों को देखने से भी यह बात स्पष्ट होती है कि उच्च अभि-प्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 369.366 तथा मध्यम अभि-प्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 333.466 है।

अत: कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त समूहों की उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक है। सारणी 4.20 को देखने से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त तो दोनों ही समूहों की छात्राएँ हैं, परन्तु उनमें उच्च तथा मध्यम अभिप्रेरणा का ही अन्तर है। अभिप्रेरणा के उच्च हो जाने से शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो गयी तथा अभिप्रेरणा के कम होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति कम हो गयी।

सारणी - 4.21

सुविधायुक्त समूह की उच्च अभिप्रेरित तथा निम्न अभि-प्रेरित समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	369.366	16.983	24.236	.01
2	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	295.033	11.613		

सारणी 4.21 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह की उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 369.366 है तथा निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 295.033 है तथा टी का मान 24.236 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है। इसका कारण यह है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा से प्रभा-वित है।

सारणी 4.22 से यह स्पष्ट होता है कि मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 333.466 है तथा निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 295.033 है तथा टी का मान 13.867 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में पर्याप्त अन्तर है। उपरोक्त से यह स्पष्ट है

कि मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति भी निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की तुलना में अधिक है।

सारणी - 4.22

सुविधायुक्त समूह की मध्यम अभिप्रेरित समूह तथा निम्न अभि-प्रेरित समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	333.466	14.518	13.867	.01
2	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	295.033	11.613		

अतः स्पष्ट है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा शैक्षिक सम्प्राप्ति से पूर्णरूप से सम्बंधित है। वास्तव में शैक्षिक अभिप्रेरणा बालक की शिक्षा से सम्बंधित वह तत्परता है जो उसको लक्ष्य प्राप्त करने तक क्रियाशील रखती है। इरिक्शन ﴾1965﴿ ने अपने अनु-संधान में यह परिणाम प्राप्त किया कि माता-पिता यदि बालकों से अधिक प्रत्याशा करते हैं तो उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो जाती है। अतः यह तर्कसंगत ही प्रतीत होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा का विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर विशेष प्रभाव पड़ता है। रोशेनहन ﴾1966﴿ ने अपने अध्ययनों में यह परिणाम प्राप्त किया कि पुरस्कार की परिस्थिति में बच्चे अच्छा कार्य करते हैं। अतः स्पष्ट होता है कि पुरस्कार भी एक प्रकार की शैक्षिक अभिप्रेरणा है। जिसकी सुखद अनुभूति से प्रेरित होकर विद्यार्थी शिक्षा से सम्बंधित पाठ्यक्रमों को शीघ्र ही सीखता है इससे शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रभावित होती है।

क-5. सुविधारहित समूह में शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

प्रस्तुत उपखण्ड में सुविधारहित समूह में शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गयी है। इससे सम्बंधित परिणाम आगे प्रस्तुत किये गये हैं।

सारणी - 4.23

सुविधारहित समूह की उच्च अभिप्रेरित तथा मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	263.722	33.747	3.447	.01
2	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	242.844	22.609		

सारणी 4.23 से स्पष्ट है कि सुविधारहित समूह की उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 263.722 प्राप्त हुआ तथा मध्यम अभि-प्रेरित समूह की छात्राओकं का मध्यमान 242.844 प्राप्त हुआ तथा टी का मान 3.447 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है। स्पष्ट है कि उच्च तथा मध्यम अभि-प्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में पर्याप्त विभिन्नता है। दोनों समूहों की मध्यमानों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च अभिप्रेरित छात्राएँ मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं से शैक्षिक सम्प्राप्ति में अच्छी रही हैं।

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त समूह की तरह सुविधारहित समूह में भी उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम अभि-प्रेरित छात्राओं से अधिक है।

सारणी 4.24

सुविधारहित समूह की उच्च अभिप्रेरित तथा निम्न अभि-प्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	263.722	33.747	10.527	.01
2	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	201.877	20.347		

सारणी 4.24 से यह ज्ञात होता है कि सुविधारहित समूह की उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 263.722 है तथा निम्न अभि-प्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 201.877 है तथा टी का मान 10.527 है। यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्च अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

सारणी 4.25 से यह स्पष्ट होता है कि सुविधारहित समूह की मध्यम अभि-प्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 242.844 प्राप्त हुआ तथा निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 201.877 प्राप्त हुआ तथा टी

के मध्यमान को देखने से यह ज्ञात होता है कि मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.25

सुविधारहित समूह की मध्यम अभिप्रेरित तथा निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	242.844	22.608	9.039	.01
2	निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	201.877	20.327		

उपरोक्त परिणामों के अवलोकन से यह भली-भाँति दृष्टव्य है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित है। टेराल, डार्किन तथा वाइजली ने अपने अनुसंधान में यह परिणाम प्राप्त किया कि ठोस पुरस्कार देने से सुविधारहित बच्चे भी अच्छा कार्य करने लगते हैं। इसी प्रकार जिंगलर और डिलावरी (1962) ने भी परिणाम प्राप्त किया कि पुरस्कार देने से सुविधारहित समूह अच्छा कार्य करते हैं। वास्तव में पुरस्कार विद्यार्थियों में अच्छा कार्य करने की भावना जागृत करता है। जिसके फलस्वरुप वह सीखने में प्रवृत्त होता है तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक होती है। सुविधारहित छात्राओं में मूर्त पुरस्कार इसलिए अधिक प्रभाव डालता है कि इसके द्वारा उनको कुछ आर्थिक सहायता प्राप्त होती है तथा वे आर्थिक दृष्टि से कमजोर होते हैं। श्रीवास्तव (1977) ने शैक्षिक अभिप्रेरणा का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ने वाले

प्रभावों का अध्ययन करते समय यह परिणाम प्राप्त किया कि शैक्षिक सम्प्राप्ति शैक्षिक अभिप्रेरणा से पूर्णरूप से सम्बंधित है। शर्मा §1981§ ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि सुविधारहित समूह को विशेष पुरस्कार देने से अच्छा कार्य करते हैं। यह बात अनुभवगम्य भी है कि पुरस्कार रुपी सुखद अनु भूति से शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रभावित होती है। इसमें विद्यार्थी अपने को श्रेष्ठतर दिखाने का प्रयास करता है। अतः स्पष्ट है कि शैक्षिक दृष्टि से अभिप्रेरणा का विद्यार्थी जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है। इसके द्वारा उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति उचित मात्रा में विकसित हो सकती है।

बहुधा यह देखा जाता है कि वह बालक/बालिका अधिक सम्प्राप्ति प्राप्त करते हैं जिनमें अर्जन करने की आवश्यकता प्रचूर मात्रा में होती है। कोई भी बालक उस कार्य को अधिक शीघ्रता से कर लेते हैं जब उनको भली-भाँति अभिप्रेरित किया जाता है। प्रोत्साहन के द्वारा उनकी कार्य करने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। अतः स्पष्ट होता है कि उच्च अभिप्रेरणा से उनमें शिक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प का उदय होता है तथा इस प्रकार उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रभावित हो सकती है। अतः निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि बालक तथा बालिकाओं के शैक्षिक सम्प्राप्ति का सम्बंध उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा से है।

उपखण्ड -ख

शैक्षिक उत्तरदायित्वता के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन

शैक्षिक उत्तरदायित्व के विभिन्न स्तरों पर भी सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करने के लिए छात्राओं को उनके शैक्षिक उत्तरदायित्व प्राप्तांकों के आधार पर उच्च उत्तरदायित्व, मध्यम उत्तर-

दायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व स्तरों में विभक्त किया। इसके लिए सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं को अलग-अनग उनके कुल उत्तरदायित्व प्राप्तांकों के आधार पर आरोही क्रम में व्यवस्थित किया। इस क्रम में ऊपर स्थित एक तिहाई छात्राओं को उच्च उत्तरदायित्व समूह, बीच में एक तिहाई छात्राओं को मध्यम उत्तरदायित्व समूह में तथा नीचे स्थित एक तिहाई छात्राओं को निम्न उत्तरदायित्व समूह के रूप में निर्धारित किया गया। तत्पश्चात् उत्तरदायित्व के इन तीनों स्तरों वाले समूहों की सुविधायुक्त व सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अंकों के मध्यमान ज्ञात किये गये। उत्तरदायित्व के तीनों स्तरों (उच्च, मध्यम तथा निम्न) वाले समूहों की सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्प्राप्ति अंकों के मध्यमानों को सारणी 4.26 में दर्शाया गया है।

सारणी - 4.26

शैक्षिक उत्तरदायित्वता के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमान

क्र. सं.	समूह	उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	मध्यम उत्तर दायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	सम्पूर्ण समूह की शैक्षिक सम्प्राप्ति
1	सुविधायुक्त	367.766	329.033	301.066	332.621
2	सुविधारहित	266.933	242.266	199.244	236.147
सम्पूर्ण समूह		317.349	285.649	250.155	284.384

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं एवं उच्च, मध्यम तथा निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए 2×3 प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम सारणी 4.27 में दर्शाये गये हैं।

सारणी - 4.27

शैक्षिक सम्प्राप्ति प्राप्तांकों के लिए 2×3 प्रसरण विश्लेषण से प्राप्त परिणाम

स्त्रोत	डी.एफ	एस.एस.	एम.एस.	एफ.मान	सार्थकता स्तर
सुविधायुक्तता/ सुविधारहितता	1	628239.16	628239.16	1320.662	.01
उत्तरदायित्वता स्तर	2	203395.16	101697.58	213.785	.01
अन्तर्क्रिया	2	3191.391	1595.695	3.35	.05
त्रुटि	264	125590.21	475.7		

ख-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सारणी 4.27 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 1320.662 प्राप्त हुआ है। यह मान शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए .01 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रकट करता है। अतः विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अंतर सार्थक है।

सारणी 4.26 से यह भी स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त समूह का मध्यमान 332.621 है जबकि सुविधारहित समूह का मध्यमान 236.147 है। अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित समूह की छात्राओं से अधिक है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का बच्चों के विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। बहुधा यह देखा भी जाता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक अधिक स्वस्थ एवं विकसित होते हैं। अच्छे परिवार के बालक अच्छे स्वास्थ्य के साथ ही ज्ञानोपार्जन में भी उत्तम होते हैं। टरमैन तथा मेरिल (1937) ने यह देखा कि जो बच्चे उच्च व्यवसाय वाले माता-पिता की सन्तान होते हैं उनकी बुद्धि एवं ज्ञानोपार्जन की शक्ति लिपिक आदि पेशे वाले समूह के बालकों से उच्च होती है। राव (1976) ने भी इसी प्रकार शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि नगर महापालिका के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति प्राइवेट विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम थी। क्योंकि सुविधायुक्त समूह के माता-पिता ही प्रायः प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ाने में समर्थ होते हैं। अतः सुविधायुक्त समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक होना तर्कसंगत ही प्रतीत होता है।

ख-2. <u>उच्च उत्तरदायित्व, मध्यम उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना</u>

सारणी 4.27 से स्पष्ट है कि शैक्षिक उत्तरदायित्वता के तीन समूहों की

छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 213.785 प्राप्त हुआ। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्च उत्तरदायित्व, मध्यम उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व समूहों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है। इसके पश्चात् उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं, मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम आगे की सारणियों में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी - 4.28

उच्च उत्तरदायित्व तथा मध्यम उत्तरदायित्व
समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	317.349	57.305	4.051	.01
2	मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	285.649	47.188		

सारणी 4.28 से स्पष्ट है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 317.349 है तथा मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 285.649 है तथा टी का मान 4.051 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। सारणी 4.28 से स्पष्ट है कि मध्यम उत्तरदायित्व छात्राओं की तुलना में उच्च उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक है।

सारणी - 4.29

उच्च उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	317.349	57.305	8.044	.01
2	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	250.155	54.725		

सारणी 4.29 से यह स्पष्ट होता है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 317.349 है तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 250.155 है तथा टी का मान 8.044 है। स्पष्ट है कि दोनों समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः ज्ञात होता है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

सारणी - 4.30

मध्यम उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	285.649	47.188	4.65	.01
2	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	250.155	54.725		

सारणी 4.30 से ज्ञात होता है कि मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 285.649 है तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 250.155 है तथा टी का मान 4.65 है। यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राएँ निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक है।

निष्कर्ष के रूप में उपरोक्त परिणाम देखकर कहा जा सकता है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है। इससे स्पष्ट है कि शैक्षिक उत्तरदायित्व भी शैक्षिक सम्प्राप्ति के अधिक होने में एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यार्थी की शैक्षिक सम्प्राप्ति उसमें शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना के अधिक होने से बढ़ती है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले माता-पिता, विद्यालय या दिशा निर्देश देने वाले प्रारम्भ से ही बालकों में स्वयं के प्रति तथा विद्यालय के प्रति सभी कार्यों को उचित प्रकार से सम्पादन करने की भावना जागृत करें तो उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति विकसित हो सकती है।

ख-3. <u>शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिये सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा शैक्षिक उत्तरदायित्व में अर्न्तक्रिया</u>

सारणी 4.27 से स्पष्ट है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिये सुविधायुक्तता/सुविधारहितता तथा शैक्षिक उत्तरदायित्व कारकों की अर्न्तक्रिया के लिये एफ का मान 3.35 प्राप्त हुआ। यह मान .05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिये शैक्षिक उत्तरदायित्वता के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति का स्वरूप सुविधारहित छात्राओं के लिए शैक्षिक उत्तरदायित्वता

के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति के स्वरुप से भिन्न है। अतः स्पष्ट है कि .05 स्तर पर दोनों कारक अर्न्तक्रिया करते हैं। अर्न्तक्रिया की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिये सुविधायुक्त समूह तथा सुविधारहित समूहों के लिए उत्तरदायित्वता के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमानों को रेखाचित्र -2 के रुप में भी प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 4.26 को देखने से ज्ञात होता है कि यद्यपि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित दोनों ही प्रकार की छात्राओं के लिए उत्तरदायित्वता में कमी के साथ ही शैक्षिक सम्प्राप्ति में भी कमी आ रही है परन्तु उच्च उत्तरदायित्वता व मध्यम उत्तरदायित्वता वाली सुविधायुक्त छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (367.766 - 329.033 = 38.733) उच्च उत्तरदायित्वता व मध्यम उत्तरदायित्वता वाली सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों में अन्तर (266.933 - 242.266 = 24.667) की तुलना में अधिक है। परन्तु दूसरी ओर मध्यम उत्तरदायित्वता व निम्न उत्तरदायित्वता वाली सुविधा-युक्त छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (329.033 - 301.066 = 27.967) मध्यम उत्तरदायित्वता व निम्न उत्तरदायित्वता वाली सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों के अन्तर (242.266 - 199.244 = 43.022) की तुलना में कम है। यह तथ्य अन्तक्रिया रेखाचित्र -2 से भी स्पष्ट है।

ख-4. सुविधायुक्त समूह में शैक्षिक उत्तरदायित्व चर पर शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

प्रस्तुत उपखण्ड में सुविधायुक्त समूह में विभिन्न शैक्षिक उत्तरदायित्व स्तरों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गयी है। इससे सम्बंधित परिणाम आगे प्रस्तुत किये गये हैं।
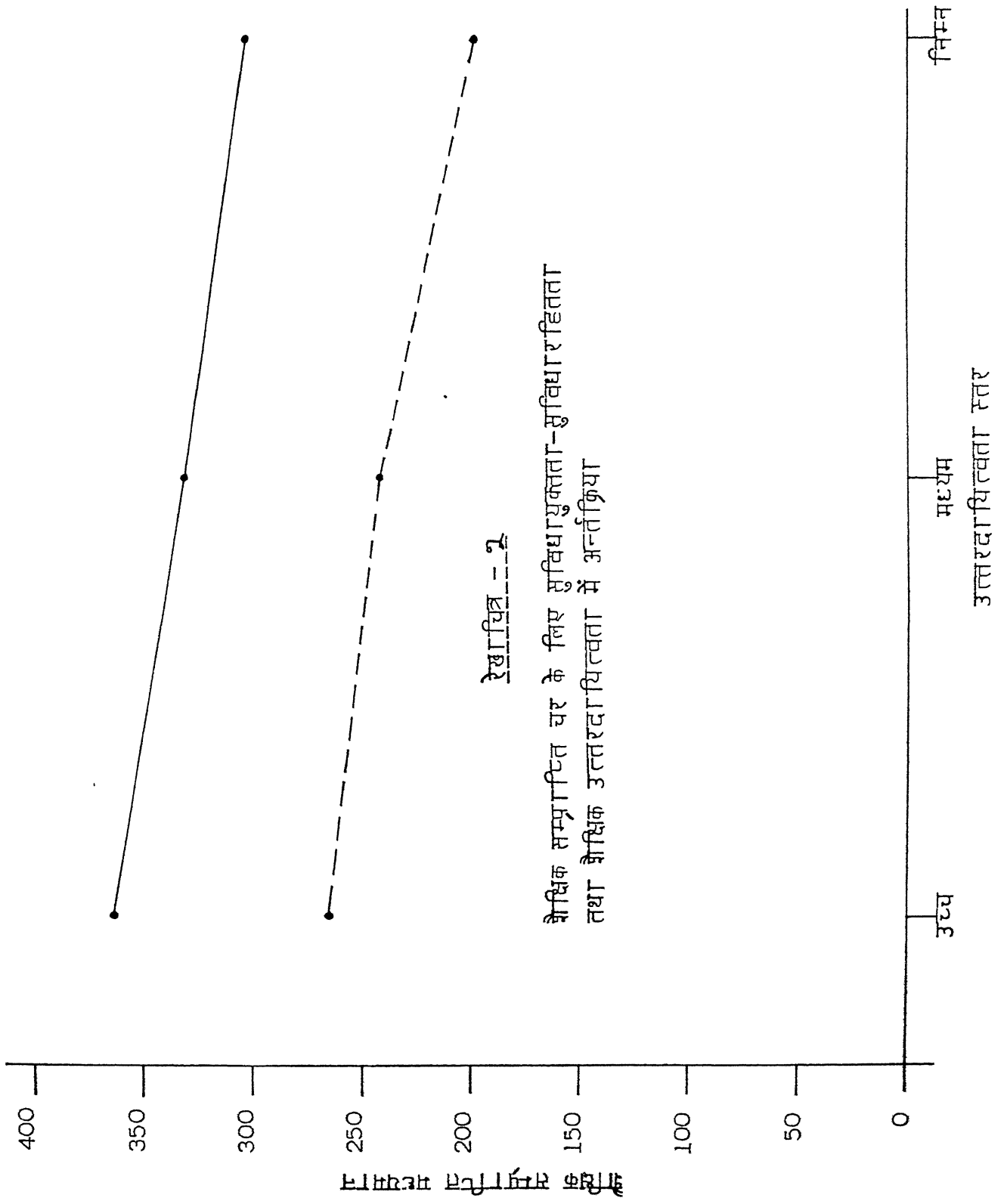
रेखाचित्र - 2
शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिए सुविधायुक्तता-सुविधारहितता
तथा शैक्षिक उत्तरदायित्वता में अन्तर्क्रिया
शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमान
400
350
300
250
200
150
100
50
0
उच्च
मध्यम
निम्न
उत्तरदायित्वता स्तर
सुविधायुक्त
सुविधारहित

सारणी - 4.31

सुविधायुक्त समूह में उच्च उत्तरदायित्व तथा मध्यम उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	367.766	17.875	9.850	.01
2	मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	329.033	19.397		

सारणी 4.31 से स्पष्ट होता है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 367.766 है तथा मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 329.033 है तथा टी का मान 9.850 है। अतः ज्ञात होता है कि दोनों ही समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। सारणी 4.31 से स्पष्ट होता है सुविधायुक्त समूह की उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

सारणी 4.32 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह में उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं का मध्यमान 367.766 है तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं का मध्यमान 301.066 है और टी का मान 15.922 है। दोनों समूहों की छात्राओं के मध्य .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। सारणी 4.32 से स्पष्ट है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.32

सुविधायुक्त समूह में उच्च उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तर-दायित्व समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	367.766	17.875	15.922	.01
2	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	301.066	21.683		

सारणी - 4.33

सुविधायुक्त समूह में मध्यम उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तर-दायित्व समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	329.033	19.397	6.448	.01
2	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	301.066	21.683		

सारणी 4.33 से स्पष्ट है कि मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 329.033 है तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं का मध्यमान 301.066 है तथा टी का मान 6.448 है। दोनों समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

उपरोक्त सारणियों से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त वर्ग में उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राएँ मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं से शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक है तथा मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राएँ भी निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक हैं।

स्पष्ट है कि इन छात्राओं में शैक्षिक उत्तरदायित्व का बहुत प्रभाव पड़ता है क्योंकि शैक्षिक उत्तरदायित्व के अधिक होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति भी अधिक हो गयी। इससे ज्ञात होता है कि यदि विद्यार्थियों को पढ़ाई के सभी कार्यों को उचित प्रकार से करने के लिए जिम्मेदार बनाया जाये तो उनमें शैक्षिक उत्तरदायित्व विकसित हो सकता है और शैक्षिक उत्तरदायित्व के विकसित हो जाने से शैक्षिक सम्प्राप्ति विकसित हो सकती है।

ख-5. <u>सुविधारहित समूह में शैक्षिक उत्तरदायित्व के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना</u>

प्रस्तुत उपखण्ड में सुविधारहित समूह में विभिन्न शैक्षिक उत्तरदायित्व स्तरों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गयी है। इससे सम्बंधित परिणाम आगामी सारणियों में दर्शाये गये हैं।

सारणी 4.34 से स्पष्ट है कि सुविधारहित समूह में उच्च उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 266.933 है तथा मध्यम उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 242.266 है तथा टी का मान 4.419 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः ज्ञात होता है कि सुविधारहित समूह की उच्च उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम उत्तरदायित्व छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.34

सुविधारहित समूह में उच्च उत्तरदायित्व तथा मध्यम उत्तरदायित्व समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च उत्तरदायित्व समूहि की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	266.933	33.520	4.419	.01
2	मध्यम उत्तरदायित्व समूहि की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	242.266	16.677		

सारणी - 4.35

सुविधारहित समूह में उच्च उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	266.933	33.520	12.091	.01
2	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	199.244	16.928		

सारणी 4.35 से विदित होता है कि सुविधारहित समूह में उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं का मध्यमान 266.933 है तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं का मध्यमान 199.244 है तथा टी का मान 12.091 है। यह

मान .01 स्तर पर सार्थक है। उच्च तथा निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि उच्च उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी - 4.36

सुविधारहित समूह में मध्यम उत्तरदायित्व तथा निम्न उत्तरदायित्व समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	242.266	16.677	12.144	.01
2	निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	199.244	16.928		

सारणी 4.36 से ज्ञात होता है कि मध्यम उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 242.266 है तथा निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 199.244 है तथा टी का मान 12.144 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मध्यम उत्तरदायित्व छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व छात्राओं से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा की तरह शैक्षिक उत्तरदायित्व भी छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से पूर्णरूप से सम्बंधित है।

प्रस्तुत शोध के उपरोक्त परिणामों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि

सुविधारहित समूह में भी शैक्षिक उत्तरदायित्व का गहरा प्रभाव शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ता है, क्योंकि इस समूह में भी शैक्षिक उत्तरदायित्व के अधिक होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक प्राप्त की गयी। वास्तव में बालक के शैक्षिक क्रिया-कलापों में शैक्षिक उत्तरदायित्व का विशेष महत्व होता है। शैक्षिक सम्प्राप्ति के अधिक या कम होने में शैक्षिक उत्तरदायित्व एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही स्वयं के प्रति तथा विद्यालय के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनाया जाये तो उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो सकती है। अतः उनको अनुशासित ढ़ंग से कार्य करने की आदत डालनी चाहिये।

अतः शैक्षिक सम्प्राप्ति के विकास के लिए अभिभावक तथा अध्यापक का यह उत्तरदायित्व है कि वह विद्यार्थियों को समय से सभी कार्यों को करने की आदत को विकसित करें। अतः उचित आदत के द्वारा उनमें शैक्षिक उत्तरदायित्व की वृद्धि हो सकती है तथा शैक्षिक उत्तरदायित्व के विकसित होने पर शैक्षिक सम्प्राप्ति भी अधिक हो सकती है।

उपखण्ड - ग

स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन

स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के अध्ययन के लिए छात्राओं का उनके स्वमान प्राप्तांकों के आधार पर उच्च स्वमान, मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान स्तरों में विभक्त किया गया। इसके लिए सुविधायुक्त व सुविधारहित छात्राओं को अलग-अलग उनमें कुल स्वमान प्राप्तांकों के आधार पर आरोही क्रम में व्यवस्थित किया। इस क्रम में

ऊपर स्थित एक तिहाई छात्राओं को उच्च स्वमान समूह, बीच में एक तिहाई को मध्यम स्वमान समूह तथा नीचे के एक तिहाई को निम्न स्वमान समूह के रूप में निर्धारित किया गया। तत्पश्चात् स्वमान के इन तीनों स्तरों वाले सुविधायुक्त व सुविधारहित छात्राओं के सम्प्राप्ति अंकों के मध्यमान ज्ञात किए, जिन्हें सारणी 4.37 में दर्शाया गया है।

सारणी - 4.37

स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त व सुविधा-रहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र.सं.	समूह	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं का मध्यमान	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं का मध्यमान	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं का मध्यमान	सम्पूर्ण समूह का मध्यमान
1	सुविधायुक्त समूह	369.766	330.611	297.488	332.621
2	सुविधारहित समूह	264.7	243.488	200.255	236.147
सम्पूर्ण समूह		317.233	287.049	248.871	284.384

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं एवं उच्च, मध्यम व निम्न स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करने के लिए 2x3 प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम सारणी 4.38 में दर्शाये गये हैं।

सारणी - 4.38

2×3 प्रसरण विश्लेषण से प्राप्त परिणाम

स्त्रोत	डी.एफ.	एस.एस.	एम.एस.	एफ. मान	सार्थकता स्तर
सुविधायुक्त/ सुविधारहित	1	628239.16	628239.16	1414.188	.01
स्वमान	2	211254.53	105627.26	237.777	.01
अन्र्तक्रिया	2	3641.993	1820.99	4.09	.05
त्रुटि	264	117280.24	444.24		

ग-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सारणी 4.38 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 1414.188 प्राप्त हुआ है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.37 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह का मध्यमान 332.621 है जबकि सुविधारहित समूह के लिए मध्यमान 236.147 है। अतः ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित समूह की तुलना में अधिक है।

ग-2. उच्च स्वमान, मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सारणी 4.38 से स्पष्ट है कि उच्च, मध्यम तथा निम्न स्वमान समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 237.777 प्राप्त हुआ। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि उच्च स्वमान, मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है । इसके पश्चात् उच्च स्वमान समूह की छात्राओं, मध्यम स्वमान की छात्राओं तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। इससे सम्बंधित परिणाम आगे की सारणियों में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी - 4.39

उच्च स्वमान तथा मध्यम स्वमान समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	317.233	59.33	3.782	.01
2	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	287.049	47.01		

सारणी 4.39 से स्पष्ट है कि उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 317.233 है तथा मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक

सम्प्राप्ति का मध्यमान 287.049है तथा टी का मान 3.782है। उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। अतः स्पष्ट है कि उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान की छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.40

उच्च स्वमान तथा निम्न स्वमान की
छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	317.233	459.33	8.232	.01
2	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	248.871	51.83		

सारणी 4.40 से यह विदित होता है कि उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 317.233 है तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 248.871 है तथा टी का मान 8.232 है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। दोनों समूहों के टी के मान को देखने से यह प्रतीत होता है कि उच्च स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना में अधिक है।

सारणी - 4.41

मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान समूह की
छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	287.049	47.019	5.175	.01
2	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	248.871	51.83		

सारणी 4.41 से स्पष्ट होता है कि मध्यम स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 287.049 है तथा निम्न स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 248.871 है तथा टी का मान 5.175 है। अतः दोनों समूहों की तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि इन समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। सारणी 4.41 से यह भी स्पष्ट है कि मध्यम स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से ज्ञात होता है कि शिक्षा प्रक्रिया में स्वमान का विशेष महत्व है। इसका विशेष प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ता है। क्विम्बी (1917) तथा शॉ व एलवेस (1963) ने भी अपने अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि विद्यालय के सभी कार्यों में आत्म-स्वमान तथा आत्म-विश्वास का प्रभाव पड़ता है। ब्लेडसॉ (1964), टामस तथा पैटरसन (1964) और बुडविन (1962) ने भी अपने अध्ययनों में यह परिणाम प्राप्त किया कि जो विद्यार्थी अपनी

योग्यता के बारे में अच्छा सोचते हैं वे अधिक अच्छा कार्य करते हैं। वास्तव में स्वमान विद्यार्थी की वह आन्तरिक मानसिक स्थिति है जिसके कारण वह अपने शैक्षिक क्रिया-कलापों को सम्पन्न करता है। अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में स्वमान का अत्यधिक महत्व है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान की छात्राओं की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान की छात्राओं से अधिक है।

ग-3. <u>शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिए सुविधायुक्तता/सुविधारहितता तथा स्वमान में अन्तर्क्रिया</u>

सारणी 4.38 से ज्ञात होता है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिये सुविधा-युक्त/सुविधारहित तथा स्वमान कारकों की अन्तर्क्रिया के लिए एफ का मान 4.09 प्राप्त हुआ है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिये स्वमान के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति का स्वरूप सुविधा-रहित छात्राओं के लिये स्वमान के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति के स्वरूप से भिन्न है। अतः स्पष्ट है कि .05 स्तर पर दोनों कारक अन्तर्क्रियां कर रहे हैं। यह बात सारणी 4.38 से भी स्पष्ट प्रतीत होती है। अन्तर्क्रिया की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिये स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूह के लिये शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमानों को रेखाचित्र - 3 के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 4.37 के द्वारा दृष्टिगत होता है कि यद्यपि सुविधायुक्त तथा
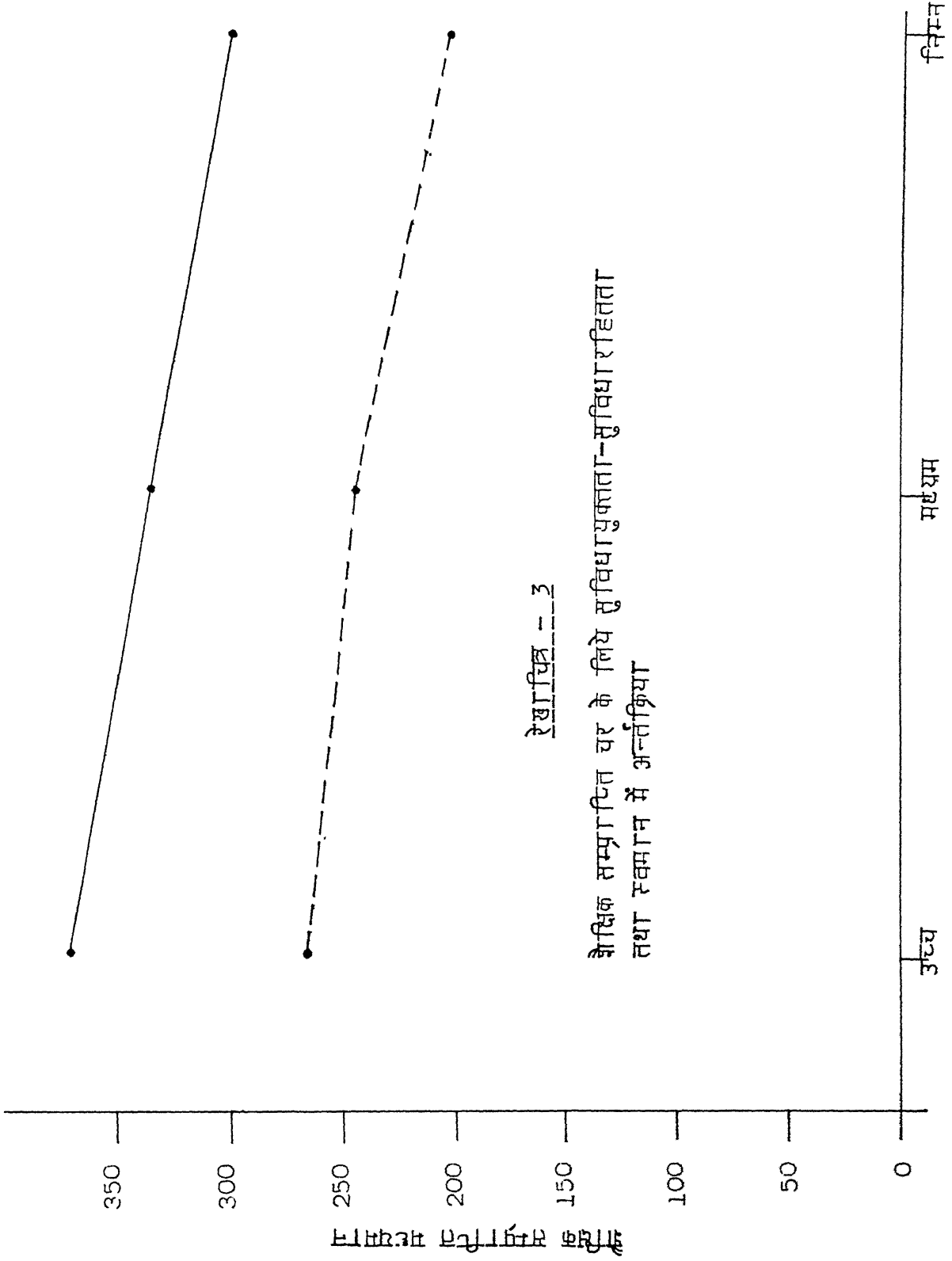
रेखाचित्र - 3

शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिये सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा स्वमान में अन्तर्क्रिया

सुविधारहित दोनों ही प्रकार की छात्राओं के लिए स्वमान में कमी के साथ -साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति में भी कमी आ रही है, परन्तु उच्च स्वमान व मध्यम स्वमान की सुविधायुक्त छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (369.766-330.611=39.15) उच्च स्वमान व मध्यम स्वमान सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों में अन्तर (264.7-243.488=21.21) की तुलना में अधिक है। इसके विपरीत मध्यम स्वमान व निम्न स्वमान सुविधायुक्त छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (330.766-297.488=33.12) मध्यम तथा निम्न स्वमान सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों के अन्तर (243.488-200.255=43.233) की तुलना में कम है यह तथ्य अर्न्तक्रिया रेखा-चित्र - 3 से भी स्पष्ट है।

ग-4. सुविधायुक्त समूह में स्वमान चर पर शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

प्रस्तुत उपखण्ड में सुविधायुक्त समूह की उच्च, मध्यम तथा निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करी गई है। इससे सम्बंधित परिणाम आगामी सारणियों में दर्शाये गये हैं।

सारणी - 4.42

सुविधायुक्त समूह में उच्च तथा मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	369.766	16.538	11.10	.01
2	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	330.611	16.912		

सारणी 4.42 से ज्ञात होता है कि उच्च स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 369.766 है तथा मध्यम स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 330.611 है तथा टी का मान 11.10 प्राप्त हुआ है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि उच्च स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान की छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.43

सुविधायुक्त समूह में उच्च स्वमान तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	369.766	11.538	21.747	.01
2	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	297.488	14.952		

सारणी 4.43 से स्पष्ट है कि उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 369.766 है तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं का मध्यमान 297.488 है तथा टी का मान 21.747 है। उच्च स्वमान तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। अतः स्पष्ट है कि उच्च स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी - 4.44

सुविधायुक्त समूह में मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान
समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	330.611	16.912	9.843	.01
2	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	297.488	14.952		

सारणी 4.44 से स्पष्ट है कि मध्यम स्वमान छात्राओं का मध्यमान 330.611 है तथा निम्न स्वमान छात्राओं का मध्यमान 297.488 है तथा टी का मान 9.843 है। यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। दोनों समूहों की तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि मध्यम स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि स्वमान का विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बहुधा, देखा भी जाता है कि स्वमान के द्वारा ही विद्यार्थी का व्यवहार दिशा निर्देशित होता है। स्वमान के उच्च होने से वह अनवरत परिश्रम करता है जिससे उसकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो जाती है। इसके विपरीत स्वमान के मध्यम तरीके का होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम तरीके की तथा स्वमान के निम्न दर्जे का होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति कम हो जाती है। अतः स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी के व्यवहार को

शैक्षिक दिशा में विकसित करने में स्वमान एक महत्वपूर्ण कारक है।

सुविधायुक्त समूहों के उपरोक्त परिणामों को देखने के पश्चात् स्पष्ट प्रतीत होता है कि उच्च स्वमान की छात्राऐं मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान की छात्राओं से शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक है। तथा मध्यम स्वमान की छात्राऐं निम्न स्वमान की छात्राओं की तुलना में शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक हैं।

ग-5. सुविधारहित समूह में विभिन्न स्वमान स्तर की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

प्रस्तुत उपखण्ड में सुविधारहित समूह में विभिन्न स्वमान स्तर की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई है। इससे सम्बंधित परिणाम आगामी सारणियों में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी - 4.45

सुविधारहित समूह में उच्च स्वमान तथा मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	264.7	34.665	3.667	.01
2	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	243.488	17.448		

सारणी 4.45 से स्पष्ट है कि सुविधारहित समूह में उच्च स्वमान छात्राओं

की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 264.7 है तथा मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 243.488 है तथा टी का मान 3.667 प्राप्त हुआ है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि सुविधारहित समूहों में उच्च स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.46

सुविधारहित समूह में उच्च स्वमान तथा निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	264.7	34.665	10.88	.01
2	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	200.255	19.396		

सारणी 4.46 से स्पष्ट है कि उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 264.7 है तथा निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 200.255 है तथा टी का मान 10.88 है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। सारणी 4.46 से ज्ञात होता है कि उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी 4.47 से स्पष्ट है कि सुविधारहित समूह की मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 243.488 है तथा निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 200.255 है तथा टी का मान 11.12

है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः ज्ञात होता है कि मध्यम स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी - 4.47

सुविधारहित समूह में मध्यम स्वमान तथा निम्न स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	243.488	17.448	11.12	.01
2	निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	200.255	19.396		

उपरोक्त परिणामों के विश्लेषण से यह भली-भाँति स्पष्ट होता है कि स्वमान के कारण ही विद्यार्थी अपने बारे में उच्च या निम्न स्तरीय धारणा बनाता है। जिन बच्चों का स्वमान उच्च होता है वह शैक्षिक विकास शीघ्र कर लेते हैं। इसके विपरीत स्वमान के निम्न होने से उनका शिक्षा से सम्बंधित विकास निम्न दर्जे का होता है। अतः विद्यार्थियों के शिक्षा की आयोजना इस प्रकार करनी चाहिये जिससे उनका स्वमान उच्च हो सके तथा इस प्रकार स्वमान के उच्च होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति भी अधिक हो सकती है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सुविधारहित समूह में भी उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम तथा निम्न स्वमान छात्राओं की

तुलना में अधिक है। इसी प्रकार मध्यम स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

उपखण्ड - घ

नियन्त्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन

नियन्त्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के अध्ययन के लिये छात्राओं को नियन्त्रण के बिन्दु के आधार पर आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु, आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु स्तरों में विभाजित किया गया है। इसके लिये सुविधायुक्त व सुविधारहित छात्राओं को अलग-अलग उनमें कुल नियन्त्रण के बिन्दु चर पर प्राप्तांकों के आधार पर बढ़ते हुए क्रम में व्यवस्थित किया। इस क्रम में नीचे स्थित एक तिहाई छात्राओं को आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु समूह, बीच के एक तिहाई छात्राओं को आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूह तथा नीचे के एक तिहाई छात्राओं को बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूह के रूप में निर्धारित किया गया। तत्पश्चात् नियन्त्रण के बिन्दु के इन तीनों स्तरों वाले सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के सम्प्राप्ति अंकों के मध्यमान ज्ञात किये गये । इन मध्यमानों को सारणी 4.48 में दर्शाया गया है।

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित वर्गों आन्तरिक, आन्तरिक-बाह्य एवं बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करने के लिये

2×3 प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम सारणी 4.49 में व्यक्त किये गये हैं।

सारणी 4.48

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूह में नियन्त्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमान

क्र.सं.	समूह	आन्तरिक नियन्त्रण बिन्दु समूह की छात्रायें	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्रायें	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्रायें	सम्पूर्ण समूह का मध्यमान
1	सुविधायुक्त समूह	368.433	327.377	302.055	332.621
2	सुविधारहित समूह	269.611	241.222	197.610	236.147
	सम्पूर्ण समूह	319.022	284.299	249.832	284.384

सारणी - 4.49

शैक्षिक सम्प्राप्ति प्राप्तांकों के लिए 2×3 प्रसरण विश्लेषण से प्राप्त परिणाम

स्रोत	डी.एफ.	एस.एस.	एम.एस.	एफ.मान	सार्थकता स्तर
सुविधायुक्त/सुविधारहित	1	628239.16	628239.16	1470.28	.01
नियंत्रण के बिन्दु	2	215420.58	107710.29	252.07	.01
अन्तर्क्रिया	2	3949.03	1974.51	4.62	.05
त्रुटि	264	112807.15	427.29		

घ-1. सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सारणी 4.49 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए एफ का मान 1470.28 प्राप्त हुआ है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। सारणी 4.48 से यह भी ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त समूह का मध्यमान 332.621 है जबकि सुविधारहित समूह के लिये मध्यमान का मान 236.147 है। अतः स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह की छात्राएँ सुविधारहित समूह की तुलना में अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखती हैं।

घ-2. आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु, आन्तरिक-बाह्य नियंन्त्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सारणी 4.49 से स्पष्ट है कि नियन्त्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति ज्ञात करने पर एफ का मान 252.07 प्राप्त हुआ है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु, आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर सार्थक है। आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु, आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। टी टेस्ट से प्राप्त परिणाम आगामी सारणीयों में दर्शाये गये हैं।

सारणी - 4.50

आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु तथा आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	319.022	55.605	4.546	.01
2	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	284.299	46.453		

सारणी 4.50 से स्पष्ट है कि आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 319.022है जबकि आन्तरिक-बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 284.299 है तथा टी का मान 4.546 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी - 4.51

आन्तरिक नियन्त्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियन्त्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	319.022	55.605	8.35	.01
2	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	249.832	55.515		

सारणी 4.51 से स्पष्ट होता है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 319.022है तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 249.832है तथा टी का मान 8.35 है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अतः ज्ञात होता है कि संयुक्त समूहों में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक है।

सारणी - 4.52

आन्तरिक-बाह्य तथा बाह्य नियंत्रण समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	284.299	46.453	4.517	.01
2	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	90	249.832	55.515		

सारणी 4.52 से स्पष्ट है कि आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 284.299है तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 249.832है तथा टी का मान 4.517 है। अतः यह स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक है।

उपरोक्त परिणामों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति भी अधिक है। इससे ज्ञात होता है कि जो छात्राएँ अपने को तथा कभी बाह्य कारकों को भी अपने सफल या असफल होने में कारण मान लेती है उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति भी बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक हो सकती है।

क्राउन तथा लिवरैन्ट (1963) ने भी अपने शोध में यह परिणाम प्राप्त किया कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु के विद्यार्थी बाह्य नियंत्रण के बिन्दु के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक आत्मविश्वासी थे। अतः स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी जब कार्य करने में अपने आन्तरिक कारणों को ही जिम्मेदार मानते हैं तो उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो सकती है। मेशर (1972) ने भी अपने शोध में यह परिणाम प्राप्त किया कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक थी। अतः मेशर के अध्ययन से तथा वर्तमान अध्ययन के परिणाम से भी इस बात की पुष्टि होती है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो सकती है।

नियंत्रण के बिन्दु चर की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति को देखने से ज्ञात होता है कि जो छात्राएँ आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित हैं, उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक है।

घ-3. <u>शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिये सुविधायुक्तता/सुविधारहितता तथा नियंत्रण के बिन्दु चर में अन्तर्क्रिया</u>

सारणी 4.49 से स्पष्ट है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति चर के लिये सुविधायुक्तता/

सुविधारहितता तथा नियंत्रण के बिन्दु कारकों की अन्तर्क्रिया के लिए एफ का मान 4.63 है जो .05 स्तर पर सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त छात्राओं के लिए नियंत्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति का स्वरूप सुविधारहित छात्राओं के लिये नियंत्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति के स्वरूप से भिन्न है। यह बात सारणी 4.49 से भी स्पष्ट है। अन्तर्-क्रिया की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिये नियंत्रण के बिन्दु चर के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त समूह तथा सुविधारहित समूह के लिये शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्यमानों को रेखाचित्र - 4 में भी प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 4.48 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु, आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं के आन्तरिक, आन्तरिक-बाह्य तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु के होने से शैक्षिक सम्प्राप्ति में भी क्रमशः कमी आ रही है परन्तु आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु तथा आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों का अन्तर (368.433-327.377=41.056) आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु व आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों में अन्तर (269.611-241.222=28.389) की तुलना में अधिक है। इसके विपरीत आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की सुविधायुक्त छात्राओं व बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों में अन्तर (327.377-302.055=25.322) आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की सुविधारहित छात्राओं के समूहों के शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यमानों के अन्तर (241.222-197.610=43.612) की तुलना में कम है। यह तथ्य अन्तर्क्रिया रेखाचित्र -4 से भी स्पष्ट है।
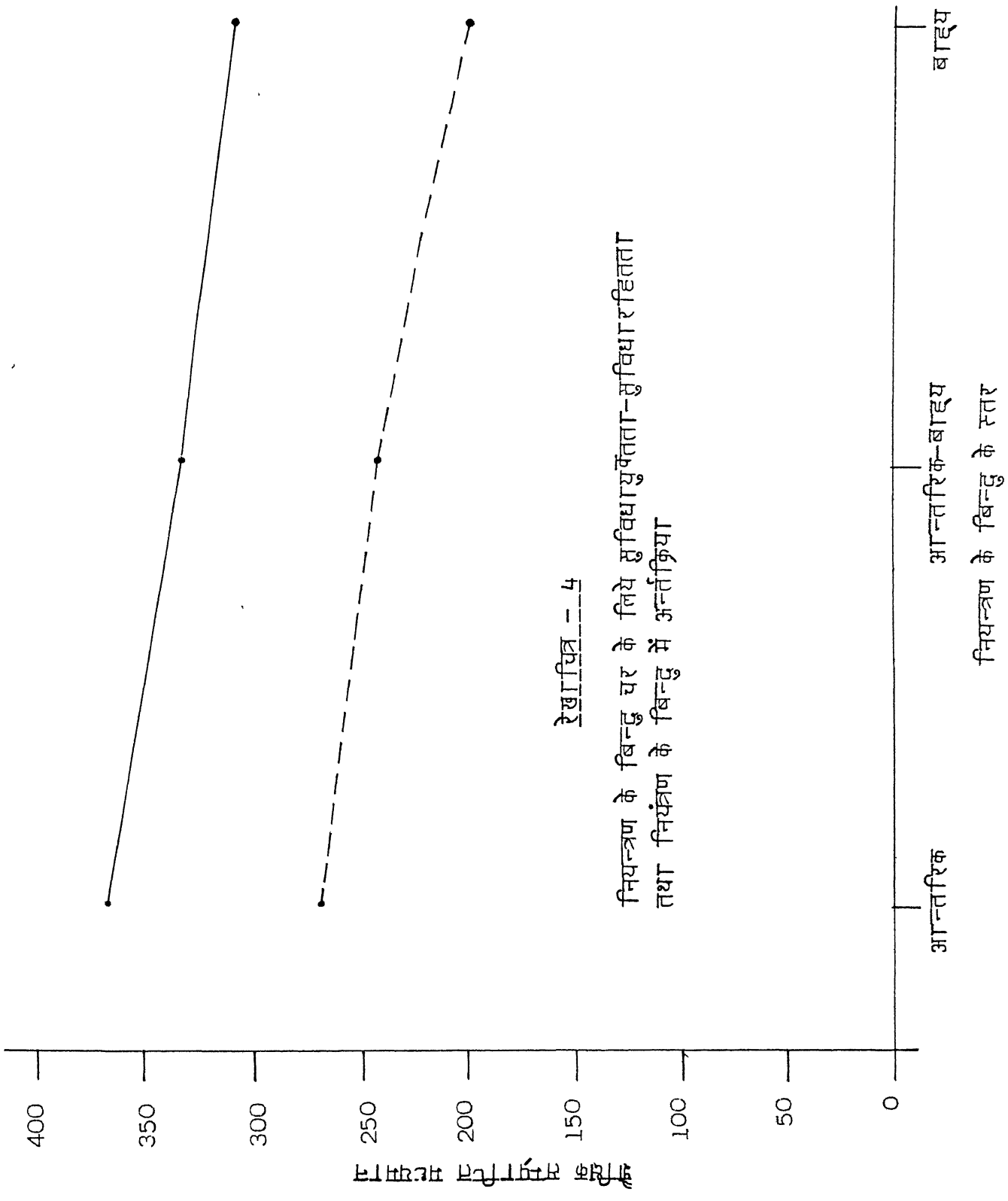
<u>रेखाचित्र - 4</u>

नियन्त्रण के बिन्दु चर के लिये सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा नियंत्रण के बिन्दु में अन्तर्क्रिया

घ-4. सुविधायुक्त समूह में नियंत्रण के बिन्दु चर पर शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सुविधायुक्त समूह में विभिन्न नियंत्रण के बिन्दु के लिये छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है। इससे सम्बंधित परिणाम आगामी सारणीयों में दिये गये है।

सारणी - 4.53

सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु तथा आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	368.433	17.994	10.170	.01
2	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	327.377	20.237		

सारणी 4.53 से ज्ञात होता है कि सुविधायुक्त समूह में नियंत्रण के बिन्दु चर पर आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं का मध्यमान 368.433 है तथा आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं का मध्यमान 327.377 है तथा टी का मान 10.170 प्राप्त हुआ है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं से अधिक है।

सारणी 4.54 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह में नियंत्रण के बिन्दु चर पर आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 368.433

है तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 302.055 है तथा टी का मान 16.196 है। अतः ज्ञात होता है कि दोनों समूह की छात्राओं में .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। अतः कहा जा सकता है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं से अधिक है।

सारणी - 4.54

सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	368.433	17.994	16.196	.01
2	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	302.055	20.787		

सारणी - 4.55

सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	327.377	20.237	5.855	.01
2	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	302.055	20.787		

सारणी 4.55 से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 327.377 है तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 302.055 है तथा टी का मान 5.855 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट है कि आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं से अधिक है।

उपरोक्त परिणामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि नियंत्रण के बिन्दु चर का विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सारणीयों के देखने से स्पष्ट है कि सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से तथा बाह्य नियंत्रण के विन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है तथा आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक है।

घ-5. सुविधारहित समूह में नियंत्रण के बिन्दु चर पर छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

सुविधारहित समूह में विभिन्न नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई है। इससे सम्बंधित परिणाम आगामी सारणीयों में दिये गये हैं ।

सारणी 4.56 से स्पष्ट है कि सुविधारहित समूह की आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 269.611 है तथा आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 241.222 है तथा टी का

मान 5.55 है। दोनों समूहों के मध्य .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। स्पष्ट है कि आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी - 4.56

सुविधारहित समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु तथा आन्तरिक-बाह्य नियंन्त्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	269.611	31.885	5.55	.01
2	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	241.222	12.634		

सारणी - 4.57

सुविधारहित समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	269.611	31.885	13.72	.01
2	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	197.610	14.910		

सारणी 4.57 से ज्ञात होता है कि सुविधारहित आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 269.611 है तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 197.610 है तथा टी का मान 13.72 है। अत: स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य .01 स्तर का सार्थक अन्तर है। आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

सारणी - 4.58

सुविधारहित समूह में आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूहों की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी का मान	सार्थकता स्तर
1	आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	241.222	12.634	14.94	.01
2	बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	45	197.610	14.955		

सारणी 4.58 से ज्ञात होता है कि आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 241.222 है तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति 197.610है और टी का मान 14.94 है। यह मान .01 स्तर पर सार्थक है। अत: स्पष्ट होता है कि आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की तुलना में अधिक है।

अतः उपरोक्त सारणीयों के विश्लेषण से यह भली-भाँति विदित है कि सुविधारहित समूह की छात्राओं में भी आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य तथा बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह से अधिक है। इसी प्रकार आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु छात्राओं से अधिक है। अतः स्पष्ट होता है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति के अधिक या कम होने में नियंत्रण के बिन्दु चर का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

मैकघी और क्रेडिल §1968§, जो §1971§ एवं ब्राउन तथा स्टीकलेन्ड[1972] ने भी इसी प्रकार का परिणाम प्राप्त किया। अतः विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु का अत्यधिक महत्व है। गुप्ता §1985§ ने भी अपने शोध में यह देखा कि सुविधारहित समूह में भी जो आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित छात्राएँ थी उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं से अधिक है।

इस अध्याय में समंकों के सांख्यिकीय विश्लेषण, व्याख्या व परिणामों की विवेचना के पश्चात् अगले अध्याय में प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों तथा उनके शैक्षिक महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

-:-:-:-:-:-

अध्याय : पंचम्

अध्ययन के निष्कर्ष तथा शैक्षिक महत्व

- अध्ययन के निष्कर्ष
- शैक्षिक महत्व
- आगामी अध्ययन के लिए सुझाव

अध्याय - पंचम्

अध्ययन के निष्कर्ष तथा शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत अनुसंधान माध्यमिक स्तर के सुविधायुक्त तथा सुविधारहित विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित है। वर्तमान अध्याय में अध्ययन के निष्कर्षों तथा उनके शैक्षिक महत्व पर प्रकाश डालने की सुविधा हेतु इसे निम्नलिखित खण्डों में विभाजित किया गया है -

1. अध्ययन के निष्कर्ष
2. शैक्षिक महत्व
3. आगामी अध्ययन के लिए सुझाव

1. अध्ययन के निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को निम्न प्रकार से व्यक्त किया गया है-

सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की तुलना से सम्बंधित निष्कर्ष :

क - सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा से सम्बंधित निष्कर्ष -

शोध की परिकल्पना प्रथम के अनुसार सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर देखा गया और यह पाया गया कि -

1. सुविधायुक्त छात्राओं में अध्ययन की आदत सुविधारहित छात्राओं की तुलना में अधिक है।

2. सुविधायुक्त छात्राओं की पाठशाला के प्रति अभिवृत्ति सुविधारहित छात्राओं

की अपेक्षा अधिक है।

3. सुविधायुक्त छात्राओं में सुविधारहित छात्राओं की तुलना में शैक्षिक आकांक्षा अधिक है।

4. सुविधायुक्त छात्राओं में सम्पूर्ण शैक्षिक अभिप्रेरणा सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है। सुविधायुक्त छात्राओं में सुविधारहित छात्राओं की तुलना में शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक है।

ख - सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व से सम्बंधित निष्कर्ष -

शोध की द्वितीय परिकल्पना के अनुसार सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व में अन्तर देखा गया और यह पाया गया कि -

1. सुविधायुक्त छात्राओं में सुविधारहित छात्राओं की तुलना में स्वयं के प्रति उत्तरदायित्व अधिक है।

2. सुविधायुक्त छात्राओं में पाठशाला के प्रति उत्तरदायित्व सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

3. सुविधायुक्त छात्राओं में सुविधारहित छात्राओं की तुलना में सम्पूर्ण शैक्षिक उत्तरदायित्व अधिक है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के शैक्षिक उत्तरदायित्व में अन्तर है। सुविधायुक्त छात्राओं में सुविधारहित छात्राओं की तुलना में शैक्षिक उत्तरदायित्व अधिक है।

ग.- सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान से सम्बंधित निष्कर्ष -

शोध की तृतीय परिकल्पना के अनुसार सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान में अन्तर देखा गया और यह पाया गया कि -

1. सुविधायुक्त छात्राओं में सामान्य स्वमान सुविधारहित छात्राओं की तुलना में ऊँचा है।

2. सुविधायुक्त छात्राओं में सामाजिक स्वमान सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा ऊँचा है।

3. सुविधायुक्त छात्राओं में गृह स्वमान सुविधारहित छात्राओं की तुलना में ऊँचा है।

4. सुविधायुक्त छात्राओं में विद्यालयी स्वमान सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा ऊँचा है।

5. सुविधायुक्त छात्राओं का सम्पूर्ण स्वमान सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा ऊँचा है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के स्वमान में अन्तर है। सुविधायुक्त छात्राओं में सुविधारहित छात्राओं की तुलना में स्वमान उच्च है।

घ - सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु से सम्बंधित निष्कर्ष -

वर्तमान शोध की चतुर्थ परिकल्पना के अनुसार सुविधायुक्त तथा सुविधा-रहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु में अन्तर देखा गया और यह प्राप्त किया कि-

1. सुविधायुक्त छात्राएँ सुविधारहित समूह की अपेक्षा अधिक आन्तरिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं के नियंत्रण के बिन्दु चर पर भी पर्याप्त अन्तर है। सुविधायुक्त छात्राएँ सुविधारहित की तुलना में अधिक आन्तरिक हैं।

च - सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित निष्कर्ष -

शोध की पंचम् परिकल्पना के अनुसार सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर देखा गया तथा यह पाया गया कि -

1. सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की तुलना में अधिक है।

उपरोक्त परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्तर है। सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की तुलना में अधिक है।

प्रसरण विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष :

क - शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित निष्कर्ष -

शोध की छठी परिकल्पना के अनुसार शैक्षिक अभिप्रेरणा के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई। इस संदर्भ में विभिन्न निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

2. उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक हैं।

3. उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं से अधिक है।

4. मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

5. सुविधायुक्तता/सुविधारहितता तथा अभिप्रेरणा चरों में शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए अन्तर्क्रिया सार्थक है।

6. सुविधायुक्त समूह में उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं से अधिक है।

7. सुविधायुक्त समूह में उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित छात्राओं से अधिक है।

8. सुविधायुक्त समूह में मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं से अधिक है।

9. सुविधारहित समूह में उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम अभिप्रेरित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

10 सुविधारहित समूह में उच्च अभिप्रेरित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित छात्राओं की तुलना में अधिक है।

11. सुविधारहित समूह में मध्यम अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न अभिप्रेरित समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

ख - <u>शैक्षिक उत्तरदायित्व के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित निष्कर्ष</u> -

सातवीं परिकल्पना के अनुसार शैक्षिक उत्तरदायित्व के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त छात्राओं तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई है। इस संदर्भ में विभिन्न निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

2. उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना में अधिक है।

3. उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

4. मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

5. सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा उत्तरदायित्वता चरों में शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए अन्तर्क्रिया सार्थक है।

6. सुविधायुक्त समूह में उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

7. सुविधायुक्त समूह में उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

8. सुविधायुक्त समूह में मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं से अधिक है।

9. सुविधारहित समूह में भी उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं से अधिक है।

10. सुविधारहित समूह में उच्च उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

11. सुविधारहित समूह में मध्यम उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न उत्तरदायित्व समूह की छात्राओं से अधिक है।

ग - <u>स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के सम्बंध में निष्कर्ष</u> -

आठवीं परिकल्पना के अनुसार स्वमान के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त छात्राओं तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई। इस संदर्भ में विभिन्न निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. सुविधायुक्त छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

2. उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

3. उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

4. मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

5. सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा स्वमान चरों में शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए अन्तर्क्रिया सार्थक है।

6. सुविधायुक्त समूह में उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

7. सुविधायुक्त समूह में उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न

स्वमान समूह की छात्राओं से अधिक है।

8. सुविधायुक्त समूह में मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

9. सुविधारहित समूह में उच्च स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति मध्यम स्वमान की छात्राओं से अधिक है।

10. सुविधारहित समूह में उच्च स्वमान की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

11. सुविधारहित समूह में मध्यम स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति निम्न स्वमान समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से अधिक है।

घ - <u>नियंत्रण के बिन्दु के विभिन्न स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बंधित निष्कर्ष</u> -

नवीं परिकल्पना के अनुसार नियंत्रण के बिन्दु के दोनों स्तरों पर सुविधायुक्त तथा सुविधारहित छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गई। इस संदर्भ में प्राप्त परिणाम निम्नलिखित हैं -

1. सुविधायुक्त छात्राओं में शैक्षिक सम्प्राप्ति सुविधारहित छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

2. आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं से अधिक है।

3. आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

4. आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

5. सुविधायुक्तता-सुविधारहितता तथा नियंत्रण के बिन्दु चरों में शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए अर्न्तक्रिया सार्थक है।

6. सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

7. सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं से अधिक है।

8. सुविधायुक्त समूह में आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं से अधिक है।

9. सुविधारहित समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

10. सुविधारहित समूह में आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु की छात्राओं से अधिक है।

11. सुविधारहित समूह में आन्तरिक-बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति बाह्य नियंत्रण के बिन्दु समूह की छात्राओं की तुलना में अधिक है।

2. शैक्षिक महत्व :

हमारे देश में कुछ वर्ग सभ्यता एवं संस्कृति की दृष्टि से अत्यधिक पिछड़े हुए हैं। अतः उनकी उन्नति एवं विकास के लिये सरकार बहुत अधिक प्रयत्नशील है। हमारे संविधान में यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि धर्म, लिंग, वंश, जाति, भाषा आदि के आधार पर नागरिकों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया

जायेगा। अर्थात् सभी नागरिक समान होंगे। सरकार के अत्यधिक प्रयत्न के पश्चात् भी हमारे देश में सुविधारहित समूह शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, शैक्षिक सम्प्राप्ति के क्षेत्र में काफी पिछड़े हुए हैं तथा नियंत्रण के बिन्दु पर भी दोनों समूहों में आन्तरिक और बाह्य नियंत्रण में भी अन्तर है। यदि इन बालिकाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाये तो इनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा बढ़ सकती है। छात्राओं को उनकी सफलता का ज्ञान पहले से ही करा देने से उनकी अभिप्रेरणा को बढ़ाया जा सकता है। सुविधारहित छात्राओं को दण्ड देने से पाठशाला के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति हो जाती है। पुरस्कार आदि के द्वारा उनकी अभिप्रेरणा को बढ़ाया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन से समाज सेवक एवं समाज सेवी संस्थाओं को भी सहायता प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार इन संस्थाओं को बालक बालिकाओं की शैक्षिक अभि-प्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति की जानकारी हो सकती है। सुविधारहित परिवार के छात्रों के लिये निःशुल्क शिक्षा तथा छात्रवृत्ति आदि की व्यवस्था कर सकते हैं। वे सुविधारहित विद्यार्थियों के लिए विशेष प्रकार के पाठ्यक्रम का आयोजन भी कर सकते हैं जिनमें उनकी रुचि हो। प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा ही हमें ज्ञात होता है कि सुविधारहित छात्राओं में शैक्षिक अभि-प्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति कम है। अतः इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार कर इनका शैक्षिक विकास किया जा सकता है।

अभिभावकों के लिये भी यह अध्ययन विशेष रुप से उपयोगी हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के अधिक या कम होने में सुविधायुक्तता तथा

सुविधारहितता ही मुख्य कारण है। अतः वे अपने पारिवारिक वातावरण का सुधार कर सकते हैं। इस प्रकार वे अपने बालकों को ऐसे विद्यालयों में भी शिक्षा प्राप्ति के लिए भेज सकते हैं जहां उन्हें पढ़ने के लिये प्रोत्साहन मिले।

अध्ययन के द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति के कम होने में शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान तथा नियंत्रण के बिन्दु का भी प्रभाव पड़ता है। अतः बालकों की शिक्षा प्रक्रिया का प्राविधान करते समय इन सब बिन्दुओं को विकसित करने पर भी ध्यान दे सकते हैं।

परामर्शदाताओं के लिये भी प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा सहायता प्राप्त हो सकती है। विद्यार्थियों को परामर्श देते समय उनकी शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान तथा नियंत्रण के बिन्दु आदि चरों को ध्यान में रखकर उचित विषयों का चुनाव करने की सलाह दे सकते हैं। उनकी रुचियों तथा क्षमताओं के अनुसार शैक्षिक एवं व्यावसायिक परामर्श दे सकते हैं। परामर्श देते समय यदि व्यक्तिगत रुप से उनकी क्षमताओं का ध्यान रखा जायेगा तो उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक हो सकती है।

अध्यापकों के लिये यह अध्ययन अत्यंत उपयोगी हो सकता है क्योंकि विद्यार्थियों की शिक्षा प्रक्रिया में उनका विशेष रूप से योगदान है। अध्यापकों के व्यक्तित्व का बालक के सामाजिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अध्यापक सुविधारहित बालकों में सहकारिता की भावना को जागृत कर सकते हैं। इसी प्रकार कक्षा में शैक्षिक अभिप्रेरणा के विकसित करने के लिये प्रोत्साहन, पुरस्कार और दण्ड तथा प्रशंसा आदि के साथ-साथ उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकते हैं। शैक्षिक उत्तरदायित्व को भी विकसित करने में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। समय पालन, अनुशासन, गृहकार्य आदि को करने की अच्छी आदतों को विकसित

करके उनमें शैक्षिक उत्तरदायित्व को भी विकसित कर सकते हैं। स्वमान का भी शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय में अध्यापक छात्रों के स्वमान को उच्च भावनाओं, आदर्शों तथा महापुरुषों के जीवन चरित्रों के द्वारा ऊँचा कर सकते हैं। नियंत्रण के बिन्दु चर को विकसित करने में भी अध्यापक महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। अध्यापक उन्हें शिक्षण कार्य के दौरान यह बता सकता है कि सफलता या असफलता के लिये व्यक्ति स्वयं ही उत्तरदायी होता है। बाहरी कारणों या घटनाओं को असफलता के लिये जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिये।

अतः भावी भारत के उज्जवल भविष्य के लिये आवश्यक है कि समाज के सभी वर्गों में शिक्षा का उचित प्रसार हो और समाज का सुविधाहीन वर्ग भी शिक्षा के महत्व को समझकर अपने बालक-बालिकाओं को शैक्षिक विकास की ओर अग्रसर कर सके। ऐसा होने पर ही विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिप्रेरणा, शैक्षिक उत्तरदायित्व, स्वमान, आन्तरिक नियंत्रण के बिन्दु तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का वांछित विकास हो सकता है। प्रस्तुत शोध के परिणाम इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

3. आगामी अध्ययन के लिये सुझाव :

1. प्रस्तुत अध्ययन में सुविधायुक्त तथा सुविधारहित समूहों का चयन सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति सूचांक के आधार पर किया गया है परन्तु सुविधारहित होने के और भी कारण हो सकते हैं - जैसे अनाथ बच्चे, विकलांग बच्चे, घरेलू वातावरण आदि जिनको इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः आगामी अध्ययनों में इस बात की आवश्यकता है कि इस प्रकार के अन्य कारणों को भी ध्यान में रखा जाय।

2. आगामी अध्ययनों में और भी बड़े न्यादर्श को लिया जा सकता है।

3. इसी प्रकार का अध्ययन प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।

4. यह अध्ययन केवल शहरी क्षेत्र की छात्राओं पर ही किया गया है। ऐसा अध्ययन ग्रामीण छात्राओं पर भी किया जा सकता है। ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

5. वर्तमान अध्ययन छात्राओं पर ही किया गया है। इस प्रकार का अध्ययन छात्रों पर भी किया जा सकता है और दोनों की तुलना भी की जा सकती है।

-:-:-:-:-:-

B I B L I O G R A P H Y

Agarwal, A. and Tripathi, K.K., Temporal Orientation and Deprivation, Journal of Psychological Researchs, 1980, 24, pp.144-152.

Armenia, J., Effectiveness of Programmed Learning as Home Work for Culturally Deprived High School Students, 1967.

Arvey, R.D., and Mussio, S.J., Job Expectations and Valence of Job Rewards for Culturally Disadvantaged and Advantaged Clerical Employees. Journal of Applied Psychology, 1974, 59(2), pp.230-232.

Atkinson, J.W., An Introduction to Motivation, Princeton, N.J. Van Nostrand, 1964.

Ausbel, David D. and Ausbel Pearl, Ego Development Among Regregated Negro Children, Education in Depressed Areas, Edited by a Harry R.Passow, New York, Teacher College Columbia University, 1963, p.109.

Berger, B. and Hall, E., The Interaction of Ability Levels and Socio-Economic Variables in the Prediction of College Drop-Outs and Grade Achievement. Education and Psychological Measurement, 1965, 25, pp.501-508.

Battle, E. and Rotter, J.B., Children's Feelings of Personal Control as Related to Social Class and Ethnic Groups, Journal of Personality, 1963, 31, pp.482-490.

Best, J.W., Research in Education, Printice Hall of India (Pvt) Ltd., New Delhi, 1977.

Betty, R., The Children We See : An Observational Approach to Child Study, New York, Halt, Rinehart and Winston, Inc., 1973.

Bhargava et al, Academic Performance as Function of Prolonged Deprivation, Psychological Abstract, July 1984, Vol.71, No.7

Bledsoe, J.C., Self Concepts of Children and Their Intelligence Achievement, Interests and Anxiety. Journal of Individual Psychology, 1964, p.20.

Bloom, B.S. et al, Compensatory Education for Cultural Deprivation, New York, Halt, Rinehart and Winston, 1965, p.72.

Blue, C.M. and Vergason, G.A., Echoic Responses of Standard English Feature by Culturally Deprived Black and white Children, Perceptual and Motor Skills, 1973.

Bodwin, R. and Bruck, M., The Relationship Between self Concept and the Presence and Absence of Scholastic under Achievement. Journal of Clinical Psychology, 1962, 18, pp. 181-182.

Boocock, S.S., An Introduction to the Sociology of Learning. Dallas Houghton Miglin. 1972.

Bottom, R., The Education of the Disadvantage Children. New York, Parker Publishing Company, Inc., 1970, p.73.

Breckenridge, M.E. and Vincent, L.E., Child Development, London, W.B. Saunders Company, 1966.

Brookover, W.B., Erikson, E.L. and Joiner, L.M., Self Concept of Ability and School Achievement III Relationship of Self Concept of Achievement in High School, U.S. Office of Education Cooperative Research Project No. 2831, East Larsing. M.L. Office of Research and Publication. Michigan State University, 1967.

Brookover, W.B., Thomas, S. and Patterson, A., Self Concept of Ability and School Achievement. Sociology of Education, 37, 1964, pp. 271-278.

Brookover, W.B. et al, Self Concept of Ability and School Achievement II Improving Academic Achievement through Students Self Concept Enhancement, U.S.Office of Education Cooperative Research Project No. 2831, East Lansing, M.L. Office of Research and Publications, Michigan State University, 1965.

Brown, A., Bransford, J., Ferrara, R. and Compione, J., Learning Remembering and Understanding, J. Flavell E.L.Markman (Eds), Handbook of Child Psychology Cognitive Development, New York; Wiley, 1983, pp. 77-166.

Brown, R.T., Locus of Control and its Relationship to Intelligence and Achievement. Psychological Reports, June 1980, 46, 3, pp.1249-1250.

Brown, J.C. and Strickland, B.R. Belief in Internal - External Control of Reinforcement and Participation in College Activities, Journal of Consulting and Clinical Psychology, 1972.

Caplin, R.D. and Naidu, R.K., Stress Copin and Social Support : A Study of University Students, Un-published Manu- svript, University of Allahabad, 1981.

Cazden, C.B., Sub-cultural Differences in Child Languages. An Interdisciplinary Review, Merill, Palmer Quarterly, 1966, 12(3), pp. 185-219.

Chazan et al, Deprivation and School Process, Oxford, Basis, Blackwell and Mott Ltd., 1976.

Cheney, A.B. Teaching Culturally Disadvantaged Children in Elementary School, Ohio, Charles E. Merill, Publishing Co., 1971, p.20.

Chitnis, S.A., Long Way to Go. A Report on Survey of Scheduled Caste High School Students and College Students in Fifteen States of (Mimco Graphed) Centre for Social Studies, Surat, India, 1977.

Chopra, S.L., Cultural Deprivation and Academic Achievement, Journal of Educational Research, 1969,62, pp.435-438.

Chopra, S. L.,Socio Economic Background and Educational Oppor- tunities in India, Journal of Education and Psychology, 1970, 27(4), pp.365-369.

Cofer, C. N., Appley, M.H., Motivation, Theory and Research, Wiley Eastern Limited, New Delhi, 1964, pp.1-18.

Coopersmith, S., The Antecedents of self Esteem, Polo, Alto, C.A. Consulting Psychology Press, 1967, Inc. pp.3-10.

Coopersmith, S., Self Esteem Inventories, Polo, Alto, C.A. Con- sulting psychology Press Inc.1986.

Cowan, R., Altmann, H. and Pysh, F., A Validity Study of Sele- cted Self Concept Instruments, Measurement and Evaluation in Guidance, 1978, 10, pp.211-221.

Cranbach, Lee J., Essential of Psychology Testing, New York : Harper & Bros., 1949 and Merwin, J.C., A Model for Stu- dying the Validity of Multiple Choice Items, Educational and Psychological Measurement, 1955,15, pp.337-352.

Crown, D.P. and Liverant, S., Confirmity Under Varying Conditions of Personal Commitment, Journal of Abnormal and Social Psychology, 1963, 66, pp.547-561.

Das, J.P., Juchuck, K. and Panda, T.P., *et al*, Cultural Deprivation and Cognitive Growth. In Haywood, H.C.(Ed), *Socio-Culture Aspects of Mental Retardation*, New York, *Appleton Century Crofts, 1970, pp.587-606.*

Das, J.P., Cultural Deprivation and Cognitive Competence. In N.R. Ellis (Ed), *International Review of Mental Retardation*, 1973, Vol.6,N.Y.,pp. 1-53.

Das, U.C. and Panda, K.C., *Effects of Certain Non Intellective Variables on Cognitive Performance*, Un-published Research Report, 1977.

Dauley, P.R.. A Study of Relationship Between Environments and Student Achievement, Ph.D. thesis, University of Toronto (Canada),1982. *Dissertation Abstracts International*, Vol.43, No.12.

David, J.A., The Campus as a Frog Pon. An Application of the Theory of Relative Deprivation to Career Decision of College Men, *American Journal of Sociology*, 1968,72 (1), pp.17-31.

Davis, W.E., *Resource Guide to Special Education*, 2nded Boston, Allyn and Bocon, 1986.

Deboard, L.W., *The Achievement Syndrome Among Gegro and White Culturally Disadvantaged Boys*, Un-published Ph.D.Thesis, Vanderbidt University, 1969.

Deccco, J.P., *The Psychology of Learning and Instruction*, Englewood Cliffs. New Jersy Prentice Hall Inc. 1968.

Denis, W. Najarian P. Development Under Environmental Handicapped, *Psychological Monographs*, 71, 1957.

Deutsch, C.P., Education for Disadvantaged Groups, *Review of Education Research*, 1965, 35, pp.140-146.

Dickerson, A.E. and Creedon, C.F., Self Selection of Standards by Children : The Relative Effectiveness of People Selected and Teacher Selected Performance, *Journal of Applied behaviour Analysis*, 6,2, pp.241-250.

Dixit, R.C. and Moorjani, J.D., The Effect of Socio Economic Deprivation Upon the Intelligence of the School Going Children, *Abstract of the Paper Presented in Indian Science Congress Association*, Mysore, 1982, p.32.

Dreger, R.M. and Miller, K.S., Comparative Psychological Studies of Negro and Whites in the United States. Psychological Bulletin Monograph Supplement, 1968, 70, pp.1959-1965.

Entwistle, N.J., Academic Motivation and School Attainment. British Journal of Educational Psychology. June, 1968, 38, 2, pp.181-188.

Erickson, E., A Study of Normative Influence of Parents and Friends Upon Academic Achievement. East Lansing Machigan State University, 1965.

Fehey, M. and Phillips, S., The Self Concept of Disadvantaged Children. An Explanatory Study in Middle Childhood. J. Psychology, 1981, Nov., Vol.109(2), Psychological Abstract, Vol.68, No. I, July 1981, pp.233-23.

Franklins, R.D., Youths Expectancies About Internal Versus External Control of Reinforcement Related to N Variables. Dissertation Abstract. 1963.

Frost, Joe L. (Ed), Early Childhood Education Rediscovered. New York, Holt, Rinehart and Winston, 1968, p.378.

Ganguli, M., Socio Economic Status and Scholastic Achievement. Indian Educational Review, Vol. XXIV, Jan, 1989. p. 84.

Garrett, Henery E., Statistics in Education and Psychology. Vakil, Feffer and Simons (Pvt) Ltd., 4th edn, 1967.

George, E.I., Educational Problem of Scheduled Caste and Scheduled Tribes College Students in Keralas, 1975.

Goldfarb, W., Psychological Privation in Infancy and Subsequent Adjustment. American Journal of Orthopsychiatry, 1945, 15, pp.247-255.

Golf, R.M., Educational Implication of the Influence of Rejection on Aspiration Level, 1954.

Gordon, E.A., Review of Compensatory Education. American Journal of Orthopsychiatry, 1965, 35, pp.640-651.

Gore, P.M. and Rotter, J.P., A Personality Correlates of Social Action. Journal Of Personality, 1963, 31, pp.58-64.

Gozali, H., Cleary, A., Walster, G.W. as Gazali, J., Relationship Between the Internal External Construct and Achievement. Journal of Educational Psychology, 1973, 64, pp.9-14.

Green, L. and William, W.E., Negro Academic Motivation and Scholastic Achievement. Journal of Educational Psychology, 1965, 56, pp.241-243.

Gupta, B.P., A. Study of Personality Adjustment in Relation to Intelligence, Sex, Socio-Economic Background and personality Dimensions of Extraversion and Neouticism. Ph.D. Education, Utkal University, 1978 in M.B.Buch. Second Survey of Research in Education. Society for Education Research and Development, Baroda, 1978, pp.78-182.

Gupta, M., Locus of Control and Academic Achievement of Deprived Adolescents. Trends and Thought in Education, March, 1985, Vol. II, pp.35-39.

Harrison, F.J., Relationship Between Income, Background, School Success and Adolescent Attitudes. Merrill - Palmer Quarterly of Behaviour and Development, 1968, 14, pp.331-344.

Hassan, M.K., Social Deprivation, Self Image and Some Personality traits. Indian Journal of Personality and Human Development, 1977, pp.42-56.

Havinghurst, R.J., Who are the Socially Disadvantaged ? Journal of Negro Education, 1964, 33, pp.210-217.

Hero, R.D., The Transmission of Cognitive Strategies in Poor : The Socialization of Apathy and Under Achievement. In Allen, V.L. (Ed), Psychological Factors in Poverty. N.Y. Academic Press, 1970.

Hillman, B.M., The Relationship Between the Variables of Family Climate as Perceived by the Child and Student Achievement. Ph.D.Thesis, Miami University, 1982, Dissertation Abstracts International, 1983, Vol.43, p.7.

Inlow, Gail, M., Education : Mirror and Agent of Change. New York, Halt, Rinehart and Winston, Inc., 1970.

Jachuck, K. and Mohanty, A.K. Low SES and Progressive Retardation in Cognitive Skills : A Test of Cumulative Deficit Hypothesis. Indian Journal of Mental Retardation, 1974, 7, pp.36-45.

Jeo, V.C., A Review of Internal-External Control Construct as a Personality Variable. Psychological Reports. 1971, 28, pp.619-640.

John, V.P. and Goldstein, L.S., The Social Context of Language Acquisition, Merrill, Palmer Quarterly, 1964, 10, pp.265-275.

Jones, R.L., Lablels and Stigma in Special Education. Exceptional Children, 1972, 38, pp.553-564.

Jones, R.A., Self Fulfilling Prophencies Social Psychology and Psychological Effects of Expectancies. Earlbaum, Hillsdale, New Jersey.

Kampel, W.J., The Influence of Home Environment on Educational Progress of Selective Secondary School Children. British Journal of Educational Psychology, 1952, p.89.

Kahl, J.A., Some Measurements of Achievement Orientation. American Journal of Sociology, 1965, 70(6), pp.669-681.

Katz, I.A., A New Approach of the Study of School Motivation in Minority Group Children. In V.L. Allen (Ed) Psychological Factors in Poverty, New York, Academic Press, 1967.

Kavale, K.A., Learning Disability and Cultural Economic Disadvantage. The Care for a Relationship. Learning Disability Quarterly, 1980, 3, 97-112.

Khanna, M.A., Study of the Relationship Between Students Socio Economic Background and Their Academic Achievement in Junior School Level. Ph.D.Thesis, Kanpur University, 1980.

Khatri, A.A., Differences in Goals, Interests, Intelligence, Scholastic performance on Orphanage Reared and Family reared Children. Indian Journal of Applied Psychology, 1965, 2,(1), pp.28-38.

Kimbles, S.L., A Measure of Cultural Deprivation. Dissertation Abstracts International, 1971, 31(9), p.455.

Kohn, M., Class and Conformity Home, Wood, I.L. Orsey, 1969.

Kolesnik, Walter, B., Educational Psychology, New York, McGraw Hill Book Company, 1970.

Krogman, As Reported by Hilda Taba in Readings in Human Socialization. Belmont, Brooks and Cale Publishing Co., 1971, pp.138.

Langeveled, M.J., Culture and Development. In F.J. Monks, et al. (Eds) Determinate of Behavioural Development. N.Y. Academic Press, 1972, pp.259-274.

Lao, R., Internal External Control and Competent and Innovative Behaviour Among Negro College Students. Journal of Personality and Social Psychology, 1970, 14, pp.263-270.

Lefceurt, H.M.(Ed), Research with the Locus of Control Construct. New York, Academic Press, 1981.

Lefceurt, H.M., The Function of the Illusion of Control and Freedom. American Psychologists, 1973.

Levy, D., Maternal Overprotection. New Youk, Columbia University Press, 1943.

Lewis, O.L., A.Pueroto Riean Family in the Culture of Poverty. New York, Randome House, 1966.

Locke, E.A., Shaw, K.N., Saari, L.M. and Lattian, G.P., Goal Setting and Task Performance. Psychological Bulletin, 1981, 90, pp.125-152.

Macmillan, D.L., Mental Retardation in School and Society, (2nded) Boston, Little Brown, 1982.

Madsen, K.B., Theory of Motivation, Howard, Allen Inc., Publishers Box 1810, University Centre Station Eleveland6, Ohio, 1964.

Mailand, S.C., Quoted in Rath et al (Eds), Cognitive Abilities and School Achievement of the Socially Disadvantaged Children in Primary Schools, New Delhi, Allied Publishers, Private Ltd., 1979, p.14.

Marjorbanks, K., Family Environment and Children Academic Achievement Sex and Social Group Difference. Psychological Abstract, Vol.68, (1), 1981.

Martin, J.C., Locus of Control and Self Esteem in Indian and White Students, Washington, D.C., Bureau of Indian Affairs. Department of the Interior, 1976.

McGhee, P.E. and Crandall, V.C., Beliefs in Internal-External Control of Reinforcement and Academic Performance. Child Development, 1968, 39, pp.91-102.

Messer, S.B., The Relation of Internal External Control of Academic Performance. Child Development, 1972, 43, pp.1456-1462.

Meyrells, D.J., The Academic Achievement of Low Income fifth Grades in Brazil. Dissertation Abstracts International, Vol.44, 2, 1983.

Milgram, N.A. et al : Level of Aspiration and Locus of Control in Disadvantaged Children. Psychological Report, 1970, 27, pp.243-350.

Miller, W.H., Identifying and Correcting Reading Difficulties in Children. New York, The Centre for Applied Research in Education, 1971, p.164.

Mirels, H.L., Dimensions of Internal Versus External Control. Journal of Consulting and Clinical Psychology, 1970, 34, pp.226-228.

Mishra, G. and Tripathi, L.B., Psychological Consequencies of Prolonged Deprivation, Agra, National Psychological Corporation, 1980.

Mishra, G. and Tripathi, L.B., Psychological Deprivation and Motivation, Journal of Psychological Researches, 22, 1978.

Mitra, S., Concept of Deprivation in Vedic Period. Trends and Thought in Education, Deprivation, 1985, Vol.II, P.12.

Naurcomb, B., Deprivation : An Essay in Definition with Special Consideration of Australian Aboriginals. Medical Journal of Australia, 1970, 2, pp.88-92.

Pal, S.K. and Mishra, K.S., A Study of Cognitive Processes, Acadèmic Motivation, Social Behaviour, Patterns and Moral Judgement of Adolescents from Deprived Ecologies. Researches and Studies, Education Department, University of Allahabad, 1992, 43, pp.1-6.

Panda, K.G. and Das, J.P., Acquisition and Reversal in Four Sub-Cultural Groups Generated by Caste and Class. Canadian Journal of Behavioural Science, 1970,2,pp.267-273.

Pandey, K.L., A Study of Cognitive Processes and Motivational Patterns of Deprived Students in Relation to Their Achievement, Unpublished D.Phil Thisis. Allahabad University, 1984.

Parker, W., Science Activities, In Tiedt, S.W.(Ed), Teaching the Disadvantaged Child. New York, Halt, Rinehart and Winston Inc.,1968.

Parikh, P.A., A Study of Achievement Motivation, School Performance and Educational Norms of Secondary School Pupils of Standard VII,IX and X. Ph.D.Thesis, Bombay University, 1976.

Patterson, P.L. and Janicki, T.C., Individual Characteristics of Children's Learning in Large Group and Small Group Approaches. Journal of Educational Psychology, 1971, 71 pp.677-687.

Provence, S. and Lipton, R., Infants in Institutions, New York, International University Press, 1962.

Quimby, V., Differences in the Self Ideal Relationship of An Achieved Group and an Underachieved Group,California, Journal of Educational Research, 1967, 18, pp.23-31.

Radhakrishna, O.R. and Rahgir, S.P., Child Rearing Method in States. Indian Psychological Review, Vol.38, No.10, 1992, pp.18-20.

Ramond, B., The Education of the Disadvantaged Children, New Parker Publishing Company, 1970.

Rao, S.N., An Experimental Investigation of Children's Concept of Mass, Weight and Volume .. Indian Journal of Psychology, 1976, 51, pp.212-220.

Rath, R., Das, A.S., Das, U.N., Cognitive Abilities and School Achievement of Socially Disadvantaged Children in Primary Schools. Bombay Allied Published Private Limited, 1970.

Rath, R. and Sircar, N.C., Intercast Relationship as Reflected in the Study of Attitudes and Opinions of Six Hindu Caste Groups. The Journal of Social Psychology, 1960, 51, pp.3-25.

Rath, R.Rath, R. et.al : Cognitive Abilities and School Achievements of the Socially Disadvantaged Children in Primary Schools. New Delhi, Allied Publishers Private Ltd., 1979.

Rath, R. and Das, A.S., Cognitive Growth and Classroom Learning of Naturally Deprived Children in Primary Schools. Paper Presented at the East West Centre for Cross Culture Studies, Honolulu, 1972.

Rath, R., Teaching and Learning Problems of Disadvantaged Children. Un-published Manuscript, Psychology Department, Utkal University, 1975.

Rath, R., Teaching-Learning Problems of Primary School Children : A Challenge to Indian Psychologists and Educationists Presidential Address 14th Annual Conference of the Indian Academy of Applied Psychology, University of Calcutta, December, 1973, pp.27-29.

Ribble, M.A., Rights of Infants. New York, Columbia University Press, 1943.

Riedel, J.S., Self Esteem, Achievement Scores and I.Q. Scores Among Students of Three Ethnic Groups in Grade Seven and Eight. Unpublished Doctoral Thesis, Northern Illinoise University, 1960.

Rosehan, D.L., Effects of Social Class and Race on Responsiveness to Approval and Disapproval. Journal of Personality and Social Psychology, 1960,4, pp.253-259.

Rosen, B.C. Race, Ethnicity and Achievement Syndrome : A Psycho-Cultural Dimension of Social Stratification. American Sociology Review, 1959, p.21.

Rotter, J.B., Generalized Expectancies for Internal Versus External Control of Reinforcement. Psychological Monographs, 1966, p.80.

Sahu, S., Effect of Social Disadvantage on Verbal Competence and Language Achievement. Psychological Studies, 1979, 24(1), pp.66-72.

Salvin, Cooperative Learning. Review of Educational Research, 50, pp. 315-342.

Samant, C., Construction of the Scale of Cultural Deprivation and Its Application. Unpublished Master's Thesis, Department of Psychology, Utkal University, Bhubneshwar, 1975.

Santosh and Sharma, H., Relationship Between the SES of the Family and the Students Achievement in the School, Department of Edu, Punjab University, Chandigarh, 1980.

Satyanandam, A Study of Socio Economic Status and Achievement, Government College of Education, Kurnool, 1969.

Seth, M. Srivastava, R.K. and Seth K., Socio Cultural Deprivation and Personality. Paper presented at the 9th All India Convention of Clinical Psychology, Kanpur, 1979,pp.28-30.

Seth, M., and Srivastava, R.K., Personality and Frustration Agression Patterns of Socio-Culturally Disadvantaged Adolescents in India. Paper presented at the fifth International Association of Cross Cultural Psychology, Bhubneshwar, India, Dec. 28, 1980.

Sewel, W.H. Haller, A.O., Straus, M.A., Social Status and Educational and Occupational Aspirations. American Sociological Review, 1957, 22, pp.67-73.

Sharma, S.C., The Effect of Socio-Economic Status on the Modernity Attitude of Scheduled Caste Youth, Indian Psychological Review, Vol.37, Special Issue, No.7, 1991, pp.23-27.

Sharma, U.P. and Mathey, M.A., The Relationship of Aspiration to Intelligence and Scholastic Achievement of Deprived and Previledged Pupils,Behaviour Metric,1971,1(2),pp.117-121.

Spitz, R.A., Analytic Depression in the Psycho-analytic Study of the Child. Vol.2, New York, International University Press, 1946.

Srivastava, J.P. and Maheshwari, V., Developing an Academic Motivation Inventory, Reprinted From Indian Educational Review, July, 1979.

Srivastava, R.K. et.al : Socio Cultural Deprivation and Nevrotieism. Indian Journal of Clinical Psychology, 1980, 7(1), pp.77-78.

Stein, M.T., The Effect of Immediate and Delayed Reinforcement on the Achievement Behaviour of Mexican American Children of Low Socio Economic Status. Dissertation Abstracts, 1966, 27 (4-A), p.864.

Stephens and Delays : A Locus of Control Measure for Pre-school Children. Developmental Psychology, 1973,9, pp.53-65.

Tannenbaum, A.J., Some non-Intellectual ConComitants of Social Deprivation. Isral Annuals of Psychiatry and related Disciplines. 1969,7, pp.9-13.

Templin, M.C., Certain Language Skills in Children : Their Development and Inter Relationship Minneapalis, Minnesota University Press, 1957.

Terman, L.M., and Merrill, M.A., Measuring Intelligence, Houghton Mifflin Co., 1937.

Terrell, G.Js., Durkin, D. and Wiesly, M., Social Class and Nature of the Incentive in Discrimination Learning. Journal of Abnormal Social Psychology, 1959, 59, pp.270-272.

Thakar, Laxmi A.V.S. Madnawat, Department of Psychology, University of Rajasthan, Jaipur, 1986.

Thomas, H., The Effect of Ability Grouping on Academic Achievement and Self Concept Among Black and White Students. Thomas Jeffary, Ed. D, University of Georgia, 1989, pp.74.

Thomas, J.L., The Relationship of Parental Beliefs and Behaviour to Children's Academic Achievement and Self Esteem. Kinney Kathless Emilie Karbach, Ph.D. The Catholic University of America, 1988, p.222.

Thompson B. Rice, The Effects of Father Absence on the Arthmatic Achievements, Self Concept and School Adjustment of Elementary School Children, 1978, Dissertation Abstracts International, 1979,39, No.12,

Tiedt, S.W. (Ed), Teaching the Disadvantaged Child, New York, Oxford University, Press 1968.

Tiwari, A.N., An Empirical Study of the Development of Achievement Motive as a Function of Prolonged Deprivation, Unpublished doctoral Dissertation, Gorakhpur University, Gorakhpur, 1979.

Tripathi, L.B. and Mishra, G., Psychological Consequences of Prolonged Deprivations. National Psychological Corporation, Agra, 1980.

Tuckman, Bruce, W. and O'Brian, John, L. (Eds), Preparing to Teach the Disadvantaged. New York, The Free Press, 1969.

Upadhyaya, U., Sense of Deprivation and Self Concept. Trends and Thought in Education Deprivation Vol.II, Department of Education, University of Allahabad, 1985.

Ushashree, S., A Comparative Study of the Socially Disadvantaged and Socially non disadvantaged pupils with regard to Scholastic Achievement and Academic Adjustment, Unpubished doctoral thesis, 1978.

Ushashree, S., Social Disadvantage, Academic Adjustment and Scholastic Achievement, Social Change, 1980, 10, pp.23-30.

Veekarchavan, V. and Bhattacharya, R., School Achievement Student Motivation and Teacher Effectiveness in Different Types of Schools. Indian Educational Review, 1989, NCERT, pp.25.

Verma, R.P. and Saxena, P.C., Socio-Economic Status Index. Unpublished Manuscript, Faculty of Education Banaras Hindu University, 1976.

Verma, R.M., Development of a Tool to Appraise Socio-Economic Status. Journal of Psychological Research, 1962, 6(1), pp.35-38.

Verma, L. and Singha, M.M., Effect of SES on Perceptual Differentiation Contingent Upon Induced Frustration in Children Indian Psychological Review. 1977, 15, pp.27-35.

Wasilk, B.H. and Wasilk, J.L., Performance of Culturally Deprived Children on Concept Assessment Kit Conservation, Child Development, 1971, 42, pp.1586-1590.

Wedemeyer, C.A., Implication of Open Learning for Independent Study. Address to the 10th World Conference of International Council for Correspondence Education, Brighton, England, 1975.

Tiedt, S.W. (Ed), Teaching the Disadvantaged Child, New York, Oxford University, Press 1968.

Tiwari, A.N., An Empirical Study of the Development of Achievement Motive as a Function of Prolonged Deprivation, Unpublished doctoral Dissertation, Gorakhpur University, Gorakhpur, 1979.

Tripathi, L.B. and Mishra, G., Psychological Consequences of Prolonged Deprivations. National Psychological Corporation, Agra, 1980.

Tuckman, Bruce, W. and O'Brian, John, L. (Eds), Preparing to Teach the Disadvantaged. New York, The Free Press, 1969.

Upadhyaya, U., Sense of Deprivation and Self Concept. Trends and Thought in Education Deprivation Vol.II, Department of Education, University of Allahabad, 1985.

Ushashree, S., A Comparative Study of the Socially Disadvantaged and Socially non disadvantaged pupils with regard to Scholastic Achievement and Academic Adjustment, Unpubished doctoral thesis, 1978.

Ushashree, S., Social Disadvantage, Academic Adjustment and Scholastic Achievement, Social Change, 1980, 10, pp.23-30.

Veekarchavan, V. and Bhattacharya, R., School Achievement Student Motivation and Teacher Effectiveness in Different Types of Schools. Indian Educational Review, 1989, NCERT, pp.25.

Verma, R.P. and Saxena, P.C., Socio-Economic Status Index. Unpublished Manuscript, Faculty of Education Banaras Hindu University, 1976.

Verma, R.M., Development of a Tool to Appraise Socio-Economic Status. Journal of Psychological Research, 1962, 6(1), pp.35-38.

Verma, L. and Singha, M.M., Effect of SES on Perceptual Differentiation Contingent Upon Induced Frustration in Children Indian Psychological Review. 1977, 15, pp.27-35.

Wasilk, B.H. and Wasilk, J.L., Performance of Culturally Deprived Children on Concept Assessment Kit Conservation, Child Development, 1971, 42, pp.1586-1590.

Wedemeyer, C.A., Implication of Open Learning for Independent Study. Address to the 10th World Conference of International Council for Correspondence Education, Brighton, England, 1975.

Weiner, B., Human Motivation, Halt Rinehart and Winston, 1980.

Weiner et.al. Perceiving the Caused of Success and Failure, Morristown, N.T.General Learning Press, 1971.

West Way, M. and Skuy, M., Self Esteem and the Educational and Vocational Aspiration of Adolecent Girls in South Africa, Psychological Abstract, 1986, Feb, 73, 2, 3542.

Whiteman, M. and Deutsch, M., Social Disadvantaged as Related to Intellective and Language Development. In Deutsch M. Katz I. and Jensen, A.R.(Eds), Social Class, Race and Psychological Development, New York, Holt, Rinchart and Winston, 1968, pp.86-114.

Whitman, T.L., Sockack, J.W. and Reid, D.H., Behaviour Modification with the Severly and Profoundly Retarded. Research and Application. 1983.

Wight, B.W. et.al., Cultural Deprivation, Operational Definition in Terms of Language Development, American Journal of Arthopsychiatry, 1970, 40, pp.77-86.

Witty, P.A. (Ed), The Educationally Retarded and Disadvantaged. In Sixty Six Year Book of Education Part, Chicago, Illinois National Society for the Study of Education, 1967.

Youngleson, M.L., The Need of Affliate and Self Esteem in Institutionalized Children. Journal of Personality and Social Psychology, 1973, 26, 2, pp.280-286.

Yarrow, L.J., Maternal Deprivation Towards an Emperical and Conceptual Evaluation. Psychological Bulletin, 1961, 55 (6), pp.459-490.

Zachau-Christiansen, B., Ross, E.M., Babies, Human Development During the First Year, Chichester, England Willey, 1975.

Zadi, R., Socio Psychological Problems and Personality Patterns of Deprived Children Living in Distitute Homes of Rajasthan, Indian Educational Review, Vo. XXIV. April, 1989, p.91.

Zigler, E. and Delabry, J., Concept Switching in Middle-Class, Lower Class and Retarded Children. Journal of Abnormal Social Psychology, 1962, 65, pp.267-273.

Zigler, E. and Kanzer, P., The Effectiveness of two Classes of Verbal Reinforces on the Performance of Middle and Lower Class Children. Journal of Personality.

Ziller and Long, B.H. and Bankers, J., Self Other Orientation of Institutionalised Behaviour Problem Adolecents Proceding" 76th Annual Convention, American Psychological Association, 1967.

Zytoskee, Strickland and Watson : Delay of Gratification and Internal-External Control Among Adolescents of Lower Socio-Economic Status. Developmental Psychology, 1971, 4, pp.83-98.

परिशिष्ट - ब1

HIGH GROUP (N=50) : LOW GROUP (N=50)

S. N.	HIGH GROUP		LOW GROUP		D	σD	t	Sig
	M	SD	M	SD				
1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.
1.	4.94	0.40	4.70	0.71	0.24	0.111	2.15	.05
2.	4.48	0.54	3.33	1.44	1.15	0.209	5.50	.01
3.	4.87	0.43	4.33	1.08	0.54	0.158	3.41	.01
4.	4.61	0.73	3.72	1.12	0.89	0.181	4.917	.01
5.	4.87	0.33	4.12	1.16	0.75	0.164	4.573	.01
6.	4.29	0.94	3.37	1.35	0.92	0.223	4.125	.01
7.	4.81	0.55	3.70	1.44	1.11	0.209	5.31	.01
8.	4.31	0.84	3.53	1.14	0.78	0.192	4.062	.01
9.	4.74	0.35	4.20	1.13	0.54	0.160	3.337	.01
10	4.72	0.59	3.44	1.51	1.28	0.220	5.81	.01
11	4.46	0.88	3.35	1.49	1.11	0.235	4.72	.01
12	4.75	0.58	3.29	1.44	1.46	0.213	6.85	.01
13	4.92	0.26	4.24	1.19	0.68	0.199	3.41	.01
14	4.27	0.83	3.35	1.11	0.92	0.188	4.89	.01
15	4.57	0.66	3.55	1.42	1.02	0.213	4.78	.01
16	4.83	0.42	3,61	1.35	1.22	0.192	6.35	.01
17	4.90	0.33	4.57	0.86	0.33	0.125	2.64	.01
18	4.72	0.52	3.29	1.22	1.43	0.180	7.94	.01
19	4.77	0.46	4.27	1.03	0.50	0.155	3.33	.01
20	4.66	0.58	3.48	1.28	1.18	0.191	6.17	.01
21	4.85	0.56	3.77	1.50	1.08	0.217	4.97	.01
22	4.68	0.57	3.85	1.43	0.83	0.209	3.97	.01

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.
23	4.53	0.88	3.64	1.37	0.89	0.221	4.02	.01
24	4.68	0.66	3.48	1.35	1.20	0.204	5.88	.01
25	4.78	0.59	3.85	1.43	0.93	0.210	4.42	.01
26	4.79	0.49	3.53	1.38	1.26	0.198	6.36	.01
27	4.83	0.50	3.37	1.47	1.46	0.211	6.91	.01
28	4.51	0.72	3.90	1.25	0.61	0.196	3.11	.01
29	4.90	0.35	4.07	1.13	0.83	0.160	5.18	.01
30	4.83	0.42	3.38	1.18	1.45	0.170	8.52	.01
31	4.61	0.78	3.48	1.48	1.13	0.227	4.97	.01
32	4.64	0.78	3.27	1.48	1.37	0.227	6.02	.01
33	4.62	0.68	4.25	1.24	0.37	0.192	1.92	N.S.
34	4.59	0.56	3.18	1.41	1.41	0.206	6.84	.01
35	4.12	0.95	2.90	1.45	1.22	0.232	5.25	.01
36	4.53	0.68	3.01	1.38	1.52	0.209	7.30	.01
37	4.38	0.81	3.55	1.23	0.83	0.200	4.15	.01
38	4.37	0.73	2.88	1.35	1.49	0.208	7.16	.01
39	4.70	0.77	3.79	1.37	0.91	0.201	4.52	.01
40	4.35	0.64	3.24	1.46	1.11	0.216	5.13	.01
41	4.74	0.55	3.85	1.17	0.89	0.175	5.08	.01
42	4.74	0.55	3.26	1.46	1.49	0.212	7.02	.01

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.
43	4.87	0.33	3.77	1.43	1.10	0.199	5.52	.01
44	4.70	0.57	2.64	1.44	2.06	0.210	9.80	.01
45	4.66	0.70	3.31	1.41	1.35	0.214	6.30	.01
46	4.46	0.74	2.98	1.52	1.48	0.230	6.43	.01
47	4.85	0.45	3.57	1.44	1.28	0.205	6.24	.01
48	4.57	0.76	3.38	1.39	1.19	0.215	5.53	.01
49	4.77	0.46	4.03	1.24	0.74	0.213	3.47	.01
50	4.61	0.56	2.90	1.50	1.71	0.217	7.88	.01
51	4.75	0.54	3.88	1.22	0.87	0.181	4.80	.01
52	4.53	0.50	3.29	1.12	1.24	0.166	7.46	.01
53	4.59	0.65	3.42	1.47	1.17	0.218	5.36	.01
54	4.42	0.83	2.75	1.34	1.67	0.214	7.80	.01
55	4.81	0.39	4.01	1.31	0.80	0.186	4.30	.01

परिशिष्ट - ब$_2$

S. N.	HIGH GROUP		LOW GROUP		t	Sig.
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
1.	.92	.26	.55	.50	3.42	.01
2.	.81	.39	.44	.51	3.00	.01
3.	.88	.32	.40	.50	4.210	.01
4.	.88	.32	.51	.51	3.217	.01
5.	.81	.39	.48	.51	2.68	.01
6.	.74	.44	.40	.50	2.65	.01
7.	.81	.32	.44	.50	3.24	.01
8.	.88	.32	.51	.51	3.21	.01
9.	.96	.19	.59	.50	3.62	.01
10	.88	.32	.40	.51	4.17	.01
11	.85	.36	.40	.50	3.81	.01
12	.88	.32	.48	.50	3.50	.01
13	.74	.44	.44	.50	2.34	.01
14	.88	.32	.40	.50	4.21	.01
15	.96	.19	.52	.50	4.31	.01
16	.81	.39	.40	.51	3.03	.01
17	.81	.39	.44	.51	3.00	.01
18	.89	.32	.59	.50	2.68	.01
19	.85	.36	.51	.51	2.83	.01
20	.89	.32	.40	.50	4.06	.01
21	.81	.39	.37	.49	3.66	.01
22	.96	.42	.44	.49	4.19	.01

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
23	.85	.36	.41	.50	3.72	.01
24	.88	.32	.44	.51	3.82	.01
25	.89	.32	.55	.50	2.98	.01
26	.74	..44	.40	.50	2.65	.05
27	.77	.42	.44	.51	2.59	.05
28	.85	.36	.48	.51	3.08	.01
29	.81	.39	.48	.51	2.68	.01
30	.85	.36	.44	.51	3.41	.01
31	.96	.19	.55	.50	4.01	.01
32	.81	.39	.40	.50	3.36	.01
33	.88	.32	.51	.50	3.15	.01
34	.85	.36	.48	.51	3.08	.01
35	.81	.39	.51	.50	2.45	.05
36	.81	.39	.41	.50	3.27	.01
37	.77	.42	.40	.50	2.96	.01
38	.81	.39	.44	.51	3.00	.01
39	.96	.19	.48	.51	4.61	.01
40	.92	.26	.59	.50	3.05	.01
41	.88	.32	.55	.50	2.89	.01
42	.96	.19	.37	.49	5.84	.01
43	.88	.32	.51	.51	3.22	.01
44	.92	.26	.44	.51	4.36	.01
45	.85	.36	.41	.50	3.72	.01
46	.74	.44	.44	.51	2.32	.05

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
47	.74	.44	.48	.51	2.01	.05
48	.77	.42	.48	.51	2.28	.05
49	.81	.39	.52	.50	2.37	.05
50	.70	.46	.40	.50	2.30	.05
51	.81	.39	.51	.51	2.43	.05
52	.92	.26	.41	.50	4.72	.01
53	.81	.39	.40	.50	3.36	.01
54	.96	.19	.44	.51	5.00	.01
55	.92	.26	.48	.51	4.00	.01
56	.96	.19	.51	.51	4.32	.01
57	.77	.42	.37	.49	3.22	.01
58	.81	.39	.44	.51	3.00	.01